समग्र शिक्षा

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

उत्कर्ष

एक कदम सफलता की ओर

कक्षा छः के लिए

सामाजिक विज्ञान गतिविधियों की पुस्तक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

वरुण मार्ग, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

आई. एस.बी.एन. : 978-93-93667-02-1
© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली
दिसम्बर 2021
37,900 (प्रतियाँ)

प्रकाशित : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली
मुद्रित : M/s स्टार फॉर्म्स, 8710, राहत गंज , रोशनारा रोड, दिल्ली -110007

MANISH SISODIA
मनीष सिसोदिया

सत्यमेव जयते

DEPUTY CHIEF MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT, I.P. ESTATE,
दिल्ली सचिवालय, आई.पी.एस्टेट,
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली-110002
Email : msisodia.delhi@gov.in

D.O. No. DYCM/2021/291
Date : 21.12.2021

संदेश

दिल्ली सरकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करने के विभिन्न प्रयासों में सदैव तत्पर रही है। हमने समतामूलक और समावेशी शिक्षा को सुनिश्चित करने हेतु अनेक कार्यक्रम क्रियान्वित किए हैं। कोरोना महामारी ने पिछले दो वर्षों से स्कूली शिक्षा को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। विद्यालय बंद होने से विद्यार्थी घरों तक सीमित होकर रह गए हैं। इस दौरान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाए रखने हेतु ऑनलाइन शिक्षा का प्रयोग किया गया किन्तु ऑनलाइन शिक्षा अपने तमाम गुणों के बावजूद सभी बच्चों तक अपनी पहुँच को लेकर प्रश्नांकित होती रही है। प्रायः शिक्षकों ने विद्यार्थियों से ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से जुड़ने और उनकी प्रगति का आकलन करने का प्रयास किया। वंचित समूहों, प्रवासी मजदूरों के बच्चों, प्रथम पीढ़ी के छात्रों और विविध परिस्थितियों में ऑनलाइन शिक्षण से न जुड़ पाने वाले विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की आवश्यकता एक चुनौती के रूप में मौजूद ही रही। इन्हीं पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, सभी बच्चों को वांछित सीखने के परिणामों की ओर उन्मुख करने और उनकी अधिगम में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु 'उत्कर्ष' पुस्तक श्रृंखला का निर्माण किया गया है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली और समग्र शिक्षा के संयुक्त प्रयास से ऐसी गतिविधियों का निर्माण किया गया है जो शिक्षा के इस अंतराल की पूर्ति करने में सहायक सिद्ध होंगी। प्रायोगिक अधिगम पर आधारित ये गतिविधियाँ जहाँ विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने और संख्याओं के साथ बुनियादी संक्रियाओं को करने में कारगर होंगी, वहीं उनके शारीरिक-भौतिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास हेतु प्रभावी माध्यम के रूप सहायक होंगी।

हिंदी, अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, उर्दू, पंजाबी और गणित में कक्षा 6 से 8 (मिडिल स्तर) पर बनाई गई गतिविधियों की ये पुस्तकें खेल-आधारित, बहुआयामी और खोज आधारित शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप प्रदान करती हैं। बेहतर अधिगम परिणामों हेतु सामाजिक विज्ञान, गणित और विज्ञान की पुस्तकों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में बनाया गया है। विद्यार्थी खेलों और गतिविधियों के द्वारा मानवीय संवेदनाओं, समूह में कार्य करना, आपसी सहयोग, शिष्टाचार और श्रेष्ठ नागरिक के गुणों को भी स्वयं में आत्मसात कर पाएँगे। आशा है कि इन पुस्तकों के माध्यम से एक नवीन शैक्षिक क्रांति का सूत्रपात होगा। विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ के साथ-साथ उनमें रचनात्मकता और तार्किक चिंतन की प्रवृत्तियों का विकास होगा। अनुभव-आधारित शिक्षण पर आधारित ये पुस्तकें स्थानीय संदर्भों की विविधता, बहुभाषिकता और स्थानीय परिवेश के लिए सम्मान को समाहित किए हुए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि समतामूलक और समावेशी शिक्षा हेतु ये पुस्तकें विद्यार्थियों को सुदृढ़ आधार प्रदान करेंगी और शिक्षा जगत में मील का एक पत्थर सिद्ध होंगी।

(मनीष सिसोदिया)

H. RAJESH PRASAD
IAS

सत्यमेव जयते

प्रधान सचिव (शिक्षा/प्रशिक्षण व तकनीकी शिक्षा/ उच्च शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Pr. Secretary (Education/TTE/ HE)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

संदेश

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कोरोना काल के लगभग दो साल के विकट दौर के बाद हम पुनः सामान्य जीवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। कोरोना महामारी पर नियंत्रण पाने में हमने अभूतपूर्व सफलता अर्जित की है। शिक्षा के क्षेत्र में भी पिछले दो वर्षों से ऑनलाइन शिक्षण, कार्यपत्रकों व ऑनलाइन गतिविधियों का सफल प्रयोग किया गया किंतु शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रत्यक्ष न हो पाने से और विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष संपर्क व संवाद के अभाव में, कुछ पारिवारिक एवं आर्थिक कारणों की वजह से, सीखने की इस श्रृंखला में हमारे कई विद्यार्थी हमसे छूट गए हैं और उनके अधिगम के स्तर पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

इस अधिगम अंतराल की चुनौती को हल करने हेतु अधिगम संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत 'उत्कर्ष' पुस्तक श्रृंखला निर्मित की गई है। इन पुस्तकों में अनेक गतिविधि-पत्रक हैं जो कक्षा विशेष के अनुरूप अधिगम प्रतिफलों के आधार पर विकसित किए गए हैं । विद्यार्थियों की संस्कृति, बहुभाषिकता और उनके परिवेश को ध्यान में रखते हुए सीखने के सामाजिक संदर्भों के इर्द-गिर्द गतिविधियाँ रची गई हैं। विद्यार्थियों के भावनात्मक और बौद्धिक स्तर के अनुसार इन गतिविधियों का निर्माण किया गया है ताकि विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सके।

आशा है कि विद्यार्थी इन गतिविधियों के माध्यम से ज्ञान सृजन की प्रक्रिया में सक्रिय सहभागी बनेंगे और उनका सर्वांगीण विकास होगा ।

इसी शुभकामना के साथ...

(एच. राजेश प्रसाद)

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

संदेश

"वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या जिस पथ पर बिखरे शूल न हों
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या यदि धाराएँ प्रतिकूल न हों"

-- जयशंकर प्रसाद

जीवन की विकट परिस्थितियों में ही हमारे व्यक्तित्व और चरित्र का सही आकलन हो पाता है। कोरोना महामारी के संकट ने संपूर्ण विश्व को झकझोर दिया। हमारे देश ने इस संकट से निपटने हेतु अनेक प्रयास किए हैं। इन प्रयासों से अनेक आशातीत सफलताएँ भी अर्जित हुई। किन्तु सामान्य जीवनधारा पर इसका प्रतिकूल प्रभाव अभी भी स्पष्ट देखा जा सकता है। इन प्रतिकूलताओं से उबरने के लिए हम सभी प्रतिबद्ध हैं और निष्ठापूर्वक इस दिशा में प्रयासरत हैं। विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र पर इसका सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। वर्तमान परिदृश्य में यह अत्यंत आवश्यक है कि सीखने के प्रतिफलों की वर्तमान स्थिति और वांछनीय अधिगम प्रतिफलों के बीच की खाई को पाटा जाए। सभी विद्यार्थियों को समान रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के महत्वपूर्ण लक्ष्य को केंद्र में रखकर 'उत्कर्ष' पुस्तक श्रृंखला को तैयार किया गया है। कक्षा 6 से 8 (मिडिल स्तर) के विद्यार्थियों के लिए ऐसी रोचक गतिविधियों का निर्माण किया गया है जो उन्हें जिज्ञासा, खोज, अनुभव और संवाद के विभिन्न अवसर उपलब्ध कराते हुए जीवन के सभी पक्षों हेतु सुदृढ़ आधारभूमि प्रदान करेंगी। बदलती परिस्थितियों में यह अत्यंत आवश्यक है कि विद्यार्थी 21वीं सदी के कौशलों में दक्ष हो, साथ ही उनमें नैतिकता , तार्किकता, तदानुभूति और संवेदनशीलता का भाव विकसित हो जिससे वे भावी समय में उत्कृष्ट जीवन की ओर अग्रसर हों। हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, उर्दू और पंजाबी विषयों/भाषाओं पर लिखी गई पुस्तकें जहाँ विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमताओं का विकास करेंगी, वहीं उनके दैनिक परिवेश से परस्पर सहज जुड़ाव और समन्वय स्थापित करेंगी। ये गतिविधि-पत्रक बहुविषयक और समग्र शिक्षा के लक्ष्य को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं, जिनमें सीखने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किए गए हैं। स्वअनुदेशात्मक आधार पर निर्मित गतिविधियाँ, रंग-बिरंगे चित्र, गीत, कविताएँ, पहेलियाँ, कहानियाँ, कार्टून, पोस्टर, खेल, कठपुतलियाँ आदि बरबस ही विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित कर उन्हें स्वमूल्यांकन हेतु प्रेरित करेंगी और प्रभावशाली अधिगम का मार्ग प्रशस्त करेंगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्यार्थियों की सामान्य तथा विशेष अधिगम कठिनाइयों के निदान तथा वांछित सीखने के प्रतिफलों की संप्राप्ति में ये पुस्तकें प्रभावकारी माध्यम सिद्ध होंगी। साथ ही समावेशी, समतामूलक और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में प्रत्यक्ष रूप से योगदान देंगी।

शुभकामनाओं सहित...

(हिमांशु गुप्ता)

Rajanish Singh
Director

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024
Tel. : +91-11-24331356, Fax: +91-11-24332426
E-mail: dir12scert@gmail.com

Date : 20/12/2021

D.O. No. : 10(4)/Dir/SCERT/DPE/2021-22/212

संदेश

प्यारे बच्चों, कोरोना की वैश्विक महामारी के चलते विगत पौने दो वर्षों का समय अत्यंत चुनौतीपूर्ण रहा। लंबे कोरोना काल ने वैश्विक स्तर पर मानव जीवन के ज्यादातर क्षेत्रों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। इस सर्वग्रासी विभीषिका ने मनुष्य के स्वास्थ्य, आजीविका, अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन को छिन्न-भिन्न कर दिया। कोरोना से सबसे बुरी तरह से प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण है। हमारे देश में कोरोना की पहली लहर के दौरान विद्यालयी शिक्षा लगभग बाधित रही । दूसरी लहर के दौरान भी स्थिति चिंताजनक बनी रही। विद्यालयों को बंद रखने के अतिरिक्त कोई और विकल्प न होने से विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया लंबे समय तक स्थगित रही। दिल्ली सरकार और विभिन्न संस्थाओं ने अपने-अपने स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था कर इस अपूर्णीय क्षति को कुछ कम करने के अनेक प्रयास अवश्य किए। यह भी विदित है कि विद्यालय की कक्षा में चलने वाली एक प्रत्यक्ष शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु के साथ सक्रिय रूप से अंतःक्रिया करने के जितने अवसर उपलब्ध होते हैं, वह ऑनलाइन शिक्षण में संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन शिक्षण की पहुँच समाज के प्रत्येक तबके तक सुनिश्चित कर पाना भी एक बड़ी समस्या रही है।

इन सभी चुनौतियों को मद्देनजर रखते हुए यह महसूस किया गया कि हमारे कुछ विद्यार्थियों में कोरोना काल के दौरान एक विशेष प्रकार का अधिगम अंतराल उत्पन्न हो गया है। प्यारे बच्चों, 'उत्कर्ष' पुस्तक श्रृंखला इस अधिगम अंतराल को कम करने की दिशा में एक पहल है। यह पुस्तक गतिविधि-पत्रकों का एक संकलन है जो आपको स्वयं सीखने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करती है। इन गतिविधि-पत्रकों का उपयोग आप बिना किसी शिक्षक की सहायता के स्वयं भी कर सकते हैं। खेल-खेल में सीखने की प्रक्रिया से गुजरते हुए यह पत्रक आपको निर्धारित कक्षा के अपेक्षित अधिगम प्रतिफलों की संप्राप्ति में सहायता करेंगे। मनुष्य अपने रोजमर्रा के जीवन में अपने परिवार, पास-पड़ोस, समुदाय, प्रकृति व परिवेश से कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। मनुष्य के सीखने की इसी नैसर्गिक विशेषता को ध्यान में रखते हुए इन गतिविधि-पत्रकों को आपके ही कुछ अनुभवी शिक्षकों ने तैयार किया है। मुझे आशा है कि राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली का यह प्रयास मिडिल स्तर के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सार्थक सिद्ध होगा । इन गतिविधियों में आप अपने सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश की झलक तो पाएँगे ही, अपेक्षा यह भी है कि इसके माध्यम से आप आधुनिक समाज के लिए जरूरी कौशलों को भी सीख पाएँ और एक सुखी व स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर हों ।

शुभकामनाओं सहित...

(रजनीश सिंह)

State Council of Educational Research and Training

(An autonomous organisation of GNCT of Delhi)

Dr. Nahar Singh
Joint Director

Tel. : +91-11-24336818, 24331355, Fax 91-11-24332426
Tel. : +91-11- 24331355, Fax 91-11-24332426
Email : jdscertdelhi@gmail.com

Date: 28/12/2021

D. O. No. 11(23)/2018/Misc./SCERT/2021-22/213

संदेश

प्रिय विद्यार्थियों,

" पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो कितना ही हो सिर पर भार,

नभ कहता है फैलो इतना ढक लो तुम सारा संसार"

—सोहनलाल द्विवेदी

कोरोना काल हमारे लिए अनेक चुनौतियाँ लेकर आया है, किंतु इन्हीं चुनौतियों ने हमारे जीवन को नवीन दिशा प्रदान की तथा धैर्य, अदम्य साहस और स्वावलंबन को अपनाने की प्रेरणा दी। पिछले कुछ समय से तालाबंदी के दौरान विद्यालयी शिक्षा सुचारु रूप से नहीं हो पाई, जिससे बच्चों के सीखने की प्रक्रिया बाधित हुई। इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि घरों में ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे बच्चे क्या अपनी निर्धारित कक्षा व विकासात्मक स्तर के अनुरूप ज्ञान, कौशल और दक्षता का अर्जन कर पा रहे हैं? विभिन्न अध्ययनों और शिक्षकों से बातचीत के दौरान यह बात उभर कर सामने आई कि ऑनलाइन शिक्षण कुछ मूलभूत शैक्षिक कौशलों के विकास में पूर्णतः सक्षम नहीं है। अतः विद्यार्थियों में वांछित अधिगम की संप्राप्ति में कुछ स्पष्ट अंतराल रह गए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह अत्यंत प्रासंगिक है कि सीखने के इस अंतराल को कम करने की दिशा में सार्थक प्रयास किए जाएँ। अधिगम के स्तर पर इसी अंतराल को कम करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली और समग्र शिक्षा के संयुक्त प्रयास से आपके लिए विशेष पाठ्य सामग्री का निर्माण किया गया है, जिसे 'उत्कर्ष' नामक पुस्तक में संकलित कर आपके समक्ष प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक आप में निरीक्षण, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मक चिंतन, प्रश्न पूछना, समस्या समाधान, प्रभावी संप्रेषण, निर्णय लेना, तदानुभूति और तत्कालीन मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता का भाव विकसित करेगी।

आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ...

(डॉ. नाहर सिंह)

पुस्तक विकास समिति

संरक्षक

श्री एच राजेश प्रसाद, प्रधान सचिव (शिक्षा) दिल्ली

सलाहकार

श्री रजनीश सिंह, निदेशक, एस सी ई आर टी, दिल्ली

शैक्षणिक सलाहकार

डॉ नाहर सिंह, संयुक्त निदेशक, एस सी ई आर टी, दिल्ली

लेखक:

सुश्री वंदना गौतम (20171771)	प्रवक्ता इतिहास, सर्वोदय कन्या विद्यालय, पुष्प विहार दिल्ली
श्री अमित कुमार ठाकुर (20025134)	प्रवक्ता इतिहास, सर्वोदय सह शिक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ई-ब्लॉक वेस्ट विनोद नगर, दिल्ली
श्री महेश (20130046)	प्रवक्ता राजनीति विज्ञान, सर्वोदय बाल विद्यालय सेक्टर 20, रोहिणी, दिल्ली
सुश्री सरिता गुप्ता (20190516)	टी.जी.टी. सामाजिक विज्ञान, सर्वोदय विद्यालय ऍफ़ यू ब्लॉक पीतम पुरा, दिल्ली
सुश्री विजयेता शर्मा (20081295)	टी.जी.टी., उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शाहबाद दौलतपुर, दिल्ली
सुश्री सुनीता	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट मोती बाग,एससीईआरटी,दिल्ली
डॉ नीलम	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट मोती बाग,एससीईआरटी,दिल्ली
श्री संजीत कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट मोती बाग,एससीईआरटी,
दिल्लीश्री जोगिन्दर कुमार(20101552)	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट मोतीबाग एससीईआरटी,दिल्ली

विषय विशेषज्ञ एवं जाँच दल

सुश्री वाणी मलिक	उप-प्रधानाचार्या , दयानन्द पब्लिक स्कूल, मॉडलटाउन, दिल्ली
डॉ. धर्मेंदर डागर	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट घुम्मनहेड़ा,दिल्ली
श्री धीरज कुमार रॉय	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट दरियागंज ,दिल्ली

अन्य सहयोगकर्ता

डॉ सुनीता यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर डाइट मोतीबाग, दिल्ली
सुश्री विनेश (19980782)	प्रवक्ता हिंदी, सर्वोदय कन्या विद्यालय, खेड़ा खुर्द, दिल्ली

परियोजना के नावेल प्रभारी

डॉ. गौरव शर्मा सहायक प्रोफेसर, एससीईआरटी, दिल्ली

डॉ. सोनू लाल गुप्ता सहायक प्रोफेसर, एससीईआरटी, दिल्ली

परामर्श मंडल

डॉ पूनम गौड़, प्राचार्य, डाइट मोती बाग़, दिल्ली

विषय समन्वयक

श्री जोगिन्दर कुमार (20101552) असिस्टेंट प्रोफेसर,एससीईआरटी, दिल्ली

प्रकाशन अधिकारी

डॉ. मुकेश यादव, एससीईआरटी, दिल्ली

प्रकाशन दल

श्री नवीन कुमार, एससीईआरटी, दिल्ली

सुश्री राधा, एससीईआरटी दिल्ली

सुश्री नेहा रिज़वाना, बी आर पी , एससीईआरटी दिल्ली

सुश्री फौज़ि आ, बी आर पी, एससीईआरटी दिल्ली

विद्यार्थियों के लिए सन्देश

प्रिय विद्यार्थियों,

इस पुस्तक को नियमित कक्षा से अनुभव प्राप्त करने के बाद आपके अधिगम को और अधिक समृद्ध करने के लिए विकसित किया गया है । अध्यायों को कक्षा-वार सीखने के परिणामों (एनसीईआरटी, डेल्ही द्वारा विकसित) की सूची के साथ-साथ एससीईआरटी पाठ्यपुस्तक के अध्यायों के साथ संरेखित करने का प्रयास किया गया है । आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप इन गतिविधि पत्रकों में सुझाई गई गतिविधियों को करें और फिर प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें । इस प्रक्रिया को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि यह आपको सक्रीय रूप से सीखने और उत्तर खोजने के लिए प्रेरित करेंगे । प्रश्नों के साथ दिए गए उदारहण और दृष्टांत आपको अवधारणा को समझने और गंभीर रूप से सोचने में मदद करेंगे|

आपको कुछ गतिविधि करने, समझने, खोजने, जांचने या अनुभव करने में सहायता की आवश्यकता हो सकती है । ऐसी स्थितियों में आपको अपने शिक्षकों, परिवारों के सदस्यों या एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक से मार्गदर्शन लेना चाहिए और उत्तर मांगने के बजाय, उनसे चर्चा करके स्वयं उत्तर ढूंढने का प्रयास करें|

आशा है कि विषयवस्तु आप सभी को स्वयं सीखने की आदत डालने में मदद करेगी।

शिक्षक/शिक्षिकाओं के लिए सन्देश

सम्मानित साथियों, सीखने के अनुभव प्रदान करने के लिए बनाई गई प्रत्येक पुस्तक में कुछ ना कुछ अनूठी विशेषता अवश्य होती है, जो इसके उपयोग को निर्धारित करती है। विद्यार्थी के लिए सीखने के प्रतिफलों (learning outcomes) की उपलब्धि सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, इस विषय वस्तु को शिक्षण संवर्धन सामग्री के रूप में विकसित किया गया है। इसके साथ-साथ यह पुस्तक गतिविधि आधारित है और यह 'आकलन के लिए, सीखने की प्रक्रिया के रूप में है। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक अध्याय में गतिविधि पत्रक होते हैं जो कुछ गतिविधि से शुरु होते है और फिर प्रश्न आते हैं, जिसके माध्यम से शिक्षार्थी सामाजिक विज्ञान में अपनी शिक्षा को समृध करते हैं। प्रत्येक प्रश्न में चित्र, उदाहरण या संकेत दिए गए हैं ताकि शिक्षार्थी उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से उत्तर खोजने के लिए प्रेरित हों। शिक्षार्थी इस खोज के लिए अपने शिक्षकों, एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक, इंटरनेट या परिवार के सदस्यों की मदद ले सकते हैं। समीक्षात्मक चिंतन के अवसर को अधिकतम करने के लिए पुस्तक में जानबूझकर प्रश्नों के उत्तर प्रदान नहीं किए गए हैं।

इस विषय वस्तु की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है, शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन का सामाजिक विज्ञान के साथ एकीकरण। इस बात का अत्यधिक ध्यान रखा गया है कि पुस्तक का संदर्भ शिक्षार्थियों के वास्तविक जीवन के अनुभवों से संबंधित हो ताकि अवधारणात्मक समझ को लागू करना आसान हो जाए। इस उद्देश्य से, सामाजिक विज्ञान गतिविधियों को करने के लिए सामान्य रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया गया है। साथ ही, जिन दृष्टांतों का उपयोग किया गया है, वे शिक्षार्थियों के परिवेश से जुड़े हुए हैं। कुछ उपकरण जिन्हें आम तौर पर विषय विशिष्ट माना जाता है जैसे प्रयोग, तालिकाएँ, कथन, कहानियां इत्यादि, इनका उपयोग शिक्षा-सामग्री को रोचक और एकीकृत बनाने के लिए किया गया है।

प्रत्येक गतिविधि पत्रक केवल एक से दो सीखने के प्रतिफलों को उपलब्ध कराता है ताकि उनकी पूर्ति को आसानी से जांचा जा सके। मूल्यांकन की प्रक्रिया के सरलीकरण के प्रयास किए गए हैं। यह आशा की जाती है कि पुस्तक की ये अनूठी विशेषताएं सीखने की प्रक्रिया को आनंदमय और रोचक बना देंगी और यह सामाजिक विज्ञान के अनुप्रयोगों के प्रति शिक्षार्थियों में रुचि विकसित करने में भी सहायक होंगी।

विषय वस्तु में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है वह सामान्य उपयोग की और प्रासंगिक है। इससे सामग्री को समझने और समझाने में आसानी होती है। सीखने की प्रक्रिया को रोचक बनाने के साथ-साथ यह पुस्तक 'मिशन बुनियाद' में परिकल्पित लक्ष्यों को पूरा करने में भी मदद करेगी।

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
इतिहास	**3-72**
क्या, कब, कहाँ और कैसे ?	3-8
आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक	9-19
आरंभिक नगर	20-26
क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें	27-31
राजा, राज्य और एक प्राचीन गणराज्य	32-37
नए प्रश्न और विचार	38-44
अशोक, एक ऐसा सम्राट जिसने युद्ध छोड़ दिया	45-53
महत्वपूर्ण गाँव और संपन्न शहर	54-60
व्यापारी, राजा और तीर्थ यात्री	61-66
नए साम्राज्य और राज्य	67-68
इमारतें, किताबें और चित्र	69-72
सामाजिक और राजनीतिक जीवन	**75-94**
विविधता की समझ	75-78
विविधता एवं भेदभाव	79-82
सरकार के स्तर	83-87
स्थानीय सरकार एवं प्रशासन	88-89
गाँव का प्रशासन- नगर प्रशासन	90-92
ग्रामीण क्षेत्र- शहरी क्षेत्र में आजीविका	93-94
भूगोल	**97-156**
ग्लोब, अक्षांश और देशांतर रेखाएँ	97-104
मानचित्र	105-111
पृथ्वी के प्रमुख स्थल रुप	112-117
भारत: जलवायु, वनस्पति तथा वन्यजीव	118-122
सौरमंडल में पृथ्वी	123-127
पृथ्वी की गतियाँ	128-132
पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल	133-148
हमारा देश: भारत	149-156

इतिहास
सामाजिक विज्ञान

इतिहास

कार्यपत्रक: 1

विद्यार्थी का नाम - _____

क्या, कब, कहाँ और कैसे ?

लोग कहाँ रहते थे ?

अधिगम सम्प्राप्ति

भारत के प्रारूप मानचित्र पर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों की अवस्थिति का निर्धारण करना।

बच्चों, भारतीय उपमहाद्वीप में मानव ने लगभग 20 लाख वर्ष पहले रहना प्रारंभ किया था। नर्मदा नदी का तट, उत्तर-पश्चिम की सुलेमान और किरथर पहाड़ियाँ, उत्तर-पूर्व में गारो तथा मध्य भारत में विंध्य पहाड़ियाँ पाषाण काल में प्रारंभिक मानव के आवास स्थल थे। लगभग 4700 वर्ष पहले सिंधु नदी की घाटी में हड़प्पा सभ्यता के नगर फले फूले। लगभग 2500 वर्ष पहले गंगा और उसकी सहायक नदियों के किनारे 16 महाजनपदों और मगध जैसे बड़े साम्राज्य का विकास हुआ। इनमें से कुछ को हम भारत के निम्न मानचित्र पर देख सकते हैं–

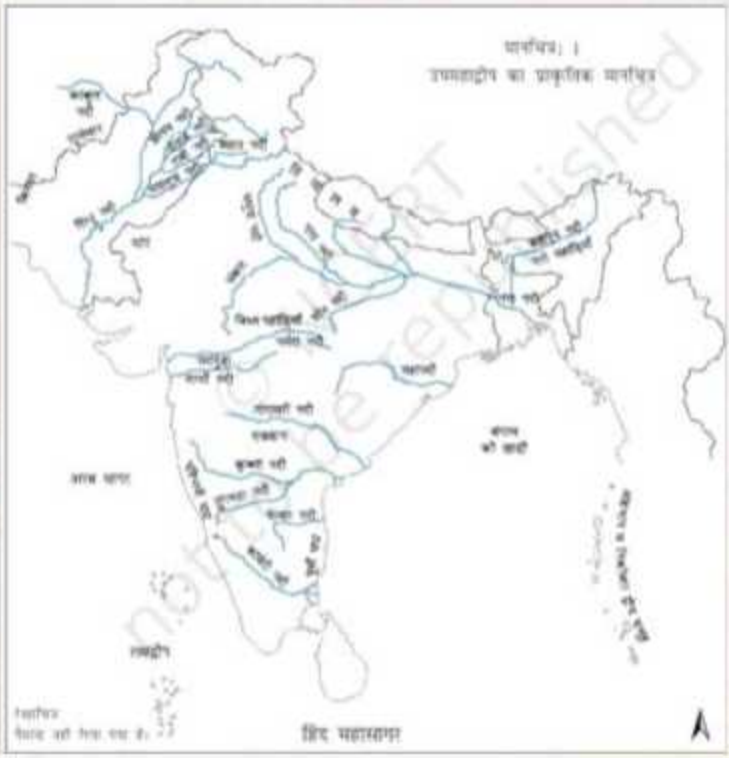

प्रश्न 1 : भारत के दिए गए आरेख मानचित्र पर निम्न ऐतिहासिक स्थानों को प्रदर्शित कीजिए :

क) नर्मदा नदी, (ख) सुलेमान और किरथर पहाड़ियाँ, (ग) गारो पहाड़ियाँ, (घ) विंध्य पहाड़ियाँ, (ड.) सिंधुनदी, (च) गंगानदी

प्रश्न 2: रिक्त स्थान की पूर्ति करो:

नर्मदा नदी के तट पर रहने वाले प्रारंभिक मानव का व्यवसाय था..... (संग्रहण व आखेट/ कृषि)

प्रश्न 3 : निम्न कथन को सही करके पुन: लिखो :

भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि एवं पशु पालन का प्रारम्भ गारो पहाड़ियों में हुआ था।

प्रश्न 4 : अपने पांच पड़ोसियों से बातचीत करके यह पता लगाओ कि उन्होंने किन ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा की है? उन ऐतिहासिक स्थानों को भारत के आरेख मानचित्र पर प्रदर्शित कीजिए।

प्रश्न 5 : कल्पना कीजिए कि आप विंध्य पर्वत पर रहने वाले एक कबीले के सदस्य हैं। आप नर्मदा तट, सुलेमान और किरथर पहाड़ियों तथा गारो पहाड़ियों पर रहने वाले मित्रों से मिलने के लिए इन स्थानों की यात्रा करते हैं। अपने यात्रा मार्ग का आरेख बनाइए तथा अपनी यात्रा का दिलचस्प विवरण लिखिए।

आरेख बॉक्स

कार्यपत्रक: 2

विद्यार्थी का नाम - _____

क्या, कब, कहाँ और कैसे ?

अतीत के बारे में कैसे जानें ?

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के स्रोतों पुरातात्त्विक, साहित्यिक इत्यादि की पहचान करता है और उस काल के इतिहास की पुर्नरचना में इनके प्रयोग का वर्णन करता है।

बच्चों, आज से सैंकडों हजारों वर्ष पहले घटित हुई घटनाओं का अनुमान हम जिन बातों और वस्तुओं से लगाने का प्रयास करते हैं उन्हें इतिहास के स्रोत कहा जाता है। पाण्डुलिपियाँ, महाकाव्य, कविताएँ तथा नाटक जैसे साहित्यिक स्रोत तथा अभिलेख, औजार, हथियार, बर्तन, आभूषण सिक्के आदि जैसे पुरातात्त्विक साक्ष्य, सामग्री (जानवरों, चिड़ियों तथा मछलियों की हड्डियाँ एवं वनस्पतियों के अवशेष) आदि इतिहासकारों और पुरातत्वविदों द्वारा इतिहास को जानने के स्रोत के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। इनमें से कुछ को नीचे दिखाया गया है –

पाण्डुलिपि

अभिलेख

पुरातात्त्विक साक्ष्य

प्रश्न 1: अपने घर में रखी पुरानी वस्तुओं जैसे बर्तन, दीपक, चित्र, आभूषण, लालटेन, सिक्के, कपडों, सजावट का सामान, हाथ के पंखों इत्यादि की सूची बनाइए। अपने घर में रखे पुराने ट्रंक को खोलकर उसमें रखी पुरानी वस्तुओं जैसे अपने दादाजी या दादीजी की परीक्षा की अंक सूची या प्रमाण पत्र आदि को तलाशने का प्रयास कीजिए। जिन प्रयोजनों के लिए यह वस्तुएँ प्रयोग की जाती थीं आज उन प्रयोजनों के लिए जो वस्तुएँ प्रयोग की जाती हैं उनकी सूची बनाइए और इन परिवर्तनों के आधार पर निम्न तालिका को पूर्ण कीजिए:

प्रयोजन	पुराने जमाने में प्रयुक्त वस्तु	आजकल प्रयुक्त वस्तु	परिवर्तन का लाभ/हानि
घर में रोशनी	लालटेन, दीपक	सी एफ एल, ट्यूबलाईट	अधिक प्रकाश, कम प्रदूषण

अंतर का आधार	दादाजी/दादीजी का बचपन	आपका बचपन
पढाई के लिए प्रयुक्त लेखन सामग्री	तख्ती, सरकंडे से बनी कलम, स्लेट, स्लेटी या चॉक	कागज की कॉपी, डिजिटल लेखन सामग्री जैसे नोटपेड, टेब, लेपटॉप इत्यादि
पाठ्यपुस्तकें		
विद्यालय भवन		
विद्यालय में बैठने की व्यवस्था		
शिक्षक के लिए प्रयुक्त सम्बोधन		
क्या पढाई के लिए शिक्षक-विद्यार्थी का शारीरिक रूप से आमने-सामने होना आवश्यक था ?		
क्या ट्यूशन पढ़ा जाता था ?		
कितने प्रतिशत अंक आते थे ?		
क्या बिना पढाई के भी बच्चे पास हो जाते थे ?		
क्या विद्यालय में शारीरिक दंड दिया जाता था ?		
विद्यालय में कौन सी सुविधाएँ उपलब्ध होती थीं ?		

बच्चों द्वारा खेले जाने वाले खेल ?		
बड़ों के लिए प्रयुक्त संबोधन ?		
विद्यालय घर से कितनी दूरी पर होता था ?		
विद्यालय जाने के लिए प्रयुक्त यातायात के साधन ?		
घर में मुख्य- मुख्य सामान क्या होता था ?		

प्रश्न:3 सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित "झाँसी की रानी" कविता पढ़िए और उसके आधार पर **1857** के भारत के बारे में जान कर निम्न तालिका को पूर्ण कीजिए:

उस समय के प्रमुख नगर	
उस समय के हथियार	
अंग्रेजों द्वारा हड़पे गए राज्य	
अंग्रेज सेनापतियों के नाम	
लक्ष्मी बाई के साथियों के नाम	
युद्ध में प्रयुक्त सामग्रियाँ	

तो देखा आपने, यह कविता भी इतिहास को जानने का एक स्रोत है। तो बन गए सब विद्यार्थी इतिहासकार !

प्रश्न 4: इतिहासकार और पुरातत्वविद में क्या अंतर होता है ?

प्रश्न 5: अपने माता-पिता, दादा- दादी और परिवार के अन्य सदस्यों से पूछकर अपने परिवार का इतिहास अपने हाथों से ए-4 आकार के कागज के पन्नों पर लिखिए। इस इतिहास के कुछ बिन्दु हो सकते हैं–

1. आपका परिवार दिल्ली कहाँ से और कब आया, 2. दिल्ली में वह किन किन स्थानों पर रहा, 3.आपके दादा जी और पिताजी- माता जी ने दिल्ली में क्या- क्या व्यवसाय किए, 4. आपके पिताजी, आपकी और भाई- बहनों की शिक्षा किन विद्यालयों में हुई आदि। इन सभी पन्नों को सुई धागे से सिलकर जोड़ दीजिए। इसके लिए अपने परिवार के किसी बड़े की सहायता लीजिए। इस प्रकार अपने परिवार का इतिहास बताने वाली एक पाण्डुलिपि स्वयं तैयार कीजिए।

नए शब्द

पाण्डुलिपि	:	हाथ से लिखी पुस्तकें।
अभिलेख	:	पत्थर अथवा धातु जैसी कठोर सतह पर शब्दों को खोद कर लिखे गए लेख।
पुरातत्वविद	:	अतीत में बनी और प्रयोग में लाई जाने वाली वस्तुओं का अध्ययन करने वाले विद्वान और विशेषज्ञ।
इतिहासकार	:	अतीत का अध्ययन करने वाले विद्वान।

नोट: (सभी चित्र: एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तक से साभार)

कार्यपत्रक: 3

विद्यार्थी का नाम - _____

आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक

आरंभिक मानव के बारे में जानकारी कैसे मिलती है?

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्राचीन काल में व्यापक विकासों यथा आखेट- संग्रहण की व्याख्या करेगा।

बच्चों, भारतीय उपमहाद्वीप में मानव ने 20 लाख वर्ष पूर्व रहना प्रारम्भ किया था। इन आरंभिक मानवों को कृषि करना नहीं आता था। वे केवल जानवरों, पक्षियों का शिकार करके और इधर-उधर से फल-फूल एकत्र करके अपना गुजारा करते थे। अत: इन प्रारंभिक मानवों को आखेटक-खाद्य संग्राहक मानव कहा जाता था। वे पत्थरों, लकड़ियों और हड्डियों के औजार बनाया करते थे। इन औजारों का प्रयोग आरंभिक मानव द्वारा अनेक कार्यों के लिए किया जाता था। इन औजारों और उनके उपयोगों को आप निम्न चित्रों के द्वारा देख सकते हैं
(सभी चित्र एनसीईआरटी की पुस्तक के सौजन्य से)

आखेटक- खाद्य संग्राहक के पत्थर के औजार

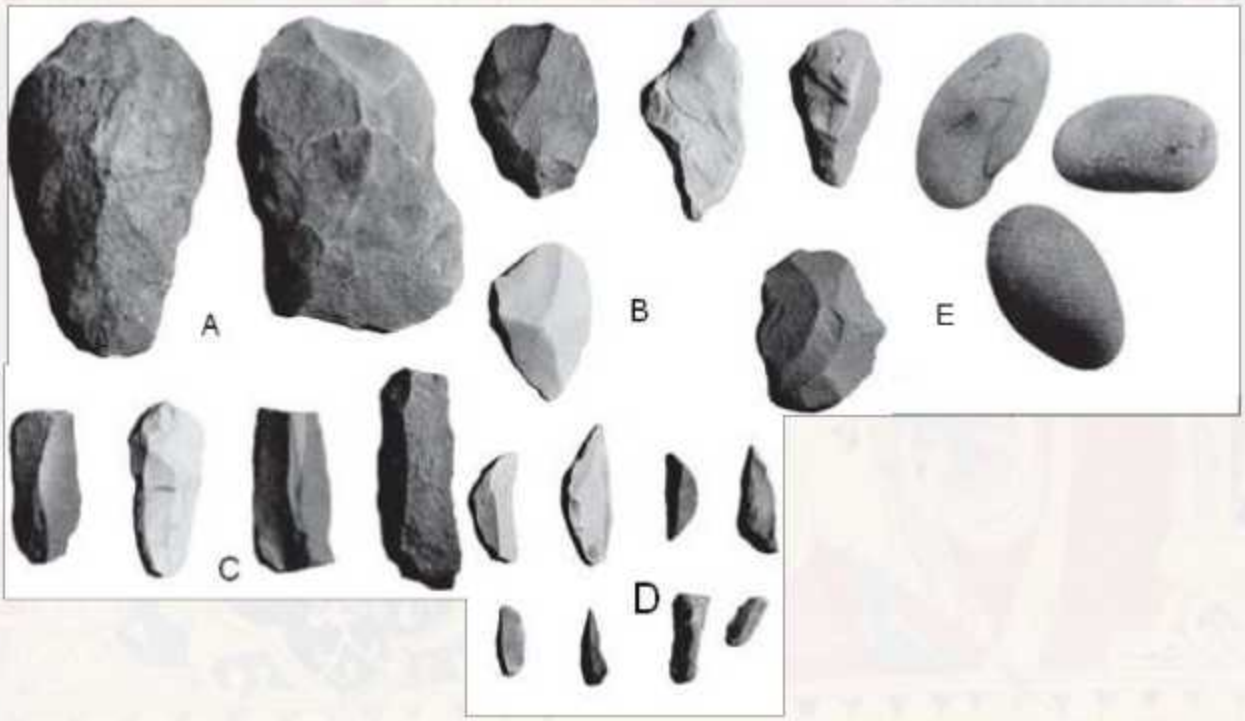

पत्थर के औजारों का उपयोग बाएँ : इंसान के खाने योग्य जड़ों को खोदने के लिए किया जाता था, और दाएँ : जानवरों की खाल से बने वस्त्रों को सिलने के लिए किया जाता था।

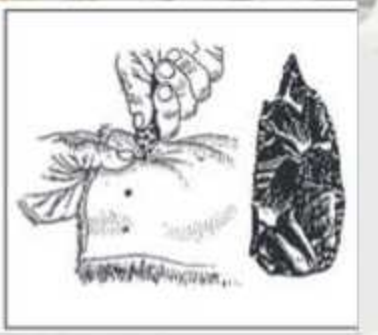

पत्थर से बने औजार

(क) ये पत्थरों से बने प्राचीनतम औजार हैं।

(ख) इन्हें कई हजार साल बाद बनाया गया।

(ग) इन्हें और बाद में बनाया गया।

(घ) इन्हें लगभग 10 हजार साल पहले बनाया गया था।

(ङ) और ये गुटिका (प्राकृतिक पत्थर) हैं।

प्रश्न 1: आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव अपने औजार किन सामग्रियों से बनाता था? उपरोक्त जानकारी के आधार पर निम्नचित्र में उन सामग्रियों के नाम खाली गोलों में लिखकर इसे पूरा करें।

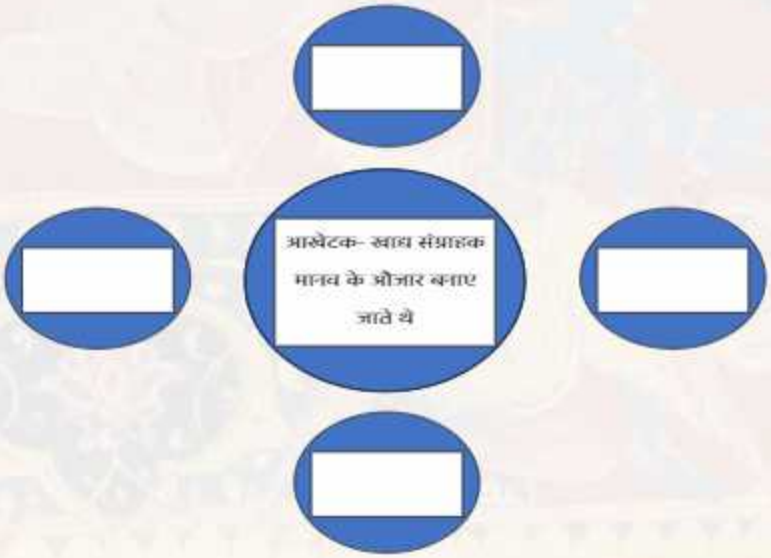

प्रश्न 2 : आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव अपने पत्थर के औजारों का किन कार्यों के लिए प्रयोग करता था ? इस बारे में सोचकर निम्न तालिका को पूर्ण कीजिए। आपकी समझ के लिए एक उपयोग हमने तालिका में लिख दिया है:

पत्थर के औजारों के प्रयोग को दिखाने वाली तालिका

फल- फूल काटने के लिए		

प्रश्न 3 : अपने पड़ोस में कार्य करने वाले श्रमिकों और कारीगरों को काम करते हुए देखिए। उनके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले औजारों की सूची बनाइए। तुलना कीजिए कि आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव किन्हीं कार्यों के लिए जो औजार प्रयोग करता था, आज के कारीगर उन कार्यों के लिए कौन से औजार प्रयोग कर रहे हैं ? यह तुलना अपनी कॉपी पर लिखिए। क्या आपको लगता है कि आधुनिक औजारों के प्रयोग से आज के कारीगरों का कार्य आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव के कार्य की तुलना में सरल हुआ है?

प्रश्न 4 : यदि आप आखेटक- संग्राहक होते तो आपका जीवन आपके वर्तमान जीवन से कैसे भिन्न होता- जैसे, क्या आप आज की तरह उस समय भी पढ़ाई के लिए विद्यालय जाते? ऐसी ही अन्य बातों को ध्यान में रख कर एक तुलनात्मक अनुच्छेद लिखिए।

प्रश्न 5 : आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव पत्थर के औजार किस प्रकार बनाते होंगें? क्या औजार बनाने के लिए कोई विशेष स्थान कारखाने की तरह प्रयोग किया जाता होगा? क्या महिलाएँ भी औजार बनाती होंगी? इस पर अपने विचार लिखिए।

कार्यपत्रक: 4

विद्यार्थी का नाम - _____

आखेट- खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक

आरंभिक मानव के रहने की जगह निर्धारित करना

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्राचीन काल में हुए विकासों जैसे आखेट से उत्पादन तक की चरणबद्ध व्याख्या कर सकेगा।

बच्चो, आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव भारतीय उपमहाद्वीप में जहाँ रहता था वे स्थान पुरास्थल कहलाते हैं। उपमहाद्वीप में विभिन्न स्थानों पर ऐसे पुरास्थल मिले हैं जिनमें से कुछ को आप निम्न मानचित्र में देख सकते हैं। यह पुरास्थल नदियों और झीलों के किनारे तथा ऐसे स्थानों पर पाए गए हैं जहाँ अच्छे पत्थर मिलते थे। यह पुरास्थल निम्न तीन प्रकार के थे:

1.उद्योगस्थल 2.आवास 3.आवास और उद्योग- स्थल

© NCERT not to be republished

भीमबेटका: एक पुरास्थल

प्रश्न 1 : भारत के दिए गए आरेख मानचित्र पर निम्न पुरास्थलों को प्रदर्शित कीजिए :

क) बुर्जहोम, ख) भीमबेटका, ग) इनामगाँव, घ) ब्रह्मगिरि, ड) कुरनूल गुफाएँ

प्रश्न 2 : आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव के पुरास्थल अनेक प्रकार के थे। उनके विभिन्न प्रकारों के नाम निम्न चतुर्भुजों में भरिए:

प्रश्न 3 : शैल चित्रकला आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव की एक महत्वपूर्ण कलाकृति है। आरंभिक मानव प्राय: अपनी आवासीय गुफाओं की दीवारों पर जानवरों के शिकारों के चित्र बनाया करता था। ऐसा वह शायद अपने मनोरंजन या पूजा पाठ के प्रयोजन के लिए करता था। निम्न त्रिकोण में आप अपना मनपसंद चित्र जैसे खेल के मैदान में अपने दोस्तों के साथ खेलते हुए अपना चित्र बनाइए :

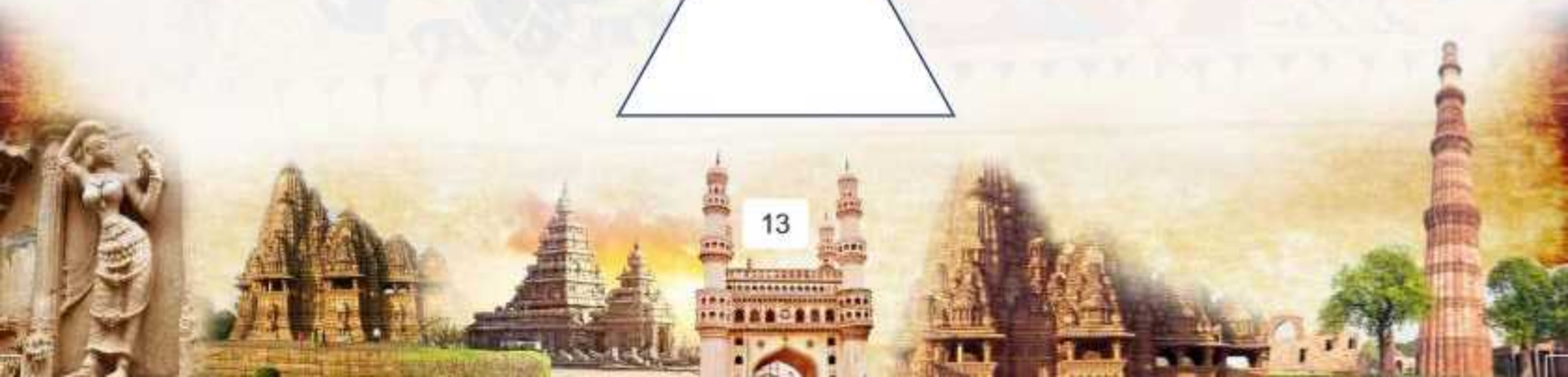

प्रश्न 4: हम यह कैसे तय कर पाते हैं कि आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव के द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कुछ स्थल वास्तव में उद्योग- स्थल थे। इनकी पहचान के तीन लक्षणों को निम्न बॉक्स में लिखिए :

प्रश्न 5 : बुर्ज होम कश्मीर में स्थित एक ऐसा नवपाषाणिक स्थल है जहाँ आखेटक खाद्य संग्राहक के जमीन के नीचे गड्डे मे बने आवास मिले हैं। आप अपने पास पड़ोस के आवासों का प्रकार जानने के लिए एक सर्वेक्षण कीजिए और इसके आधार पर निम्न गोलों को भरिए:

मेरे पड़ोस में पाई जाने वाली इमारतों के प्रकार

नए शब्द

1. भारतीय उपमहाद्वीप: वर्तमान भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और भुटान को शामिल कर के बना विस्तृत भू भाग।
2. नव पाषाण काल : आज से दस हज़ार वर्ष पहले से लेकर 4700 वर्ष पहले तक का कालखण्ड जिस में मानव पत्थर के पोलिशदार औजारों और पत्थर के छोटे औजारों का प्रयोग करने लगा, कृषि और पशुपालन का व्यापक प्रचलन हो गया और इस काल में कृषकों और पशुपालकों की बस्तियाँ भी आबाद होने लगीं।

कार्यपत्रक: 5

विद्यार्थी का नाम - _____

आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक

आग की खोज और बदलती जलवायु

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्राचीन काल में व्यापक विकासों यथा आखेट- संग्रहण तथा कृषि के प्रारंभ की व्याख्या करेगा।

बच्चो, आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव पत्थर से पत्थर को टकराकर तथा 'दबाव शल्क तकनीक' के द्वारा पत्थर के औजार बनाता था। उसने पत्थरों को रगड़कर आग जलाना भी सीख लिया। कुरनूल गुफा में राख के अवशेष मिले हैं। प्रकाश, माँस पकाने और जानवरों को दूर भगाने के लिए वह आग का प्रयोग करता था। फलस्वरूप मानव ने पशुपालन और अनाज उगाना सीख लिया। हम यह निश्चित रूप से नहीं जानते कि आखेटक- खाद्य संग्राहक मानवों के समाज में स्त्रियों और पुरुषों के बीच कार्य का बंटवारा कैसे होता था।

प्रश्न 1 : आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव जिन दो तकनीकों से पत्थर के औजार बनाता था, उन्हें निम्न दो गोलों में लिखो:

प्रश्न 2 : आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव आग का प्रयोग किन कार्यों के लिए करता था ? उन कार्यों को निम्न त्रिकोणों में लिखो

प्रश्न 3 : 12 हज़ार वर्ष पहले जलवायु में परिवर्तन होने पर आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव के जीवन में दो सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन क्या आए ? इन परिवर्तनों को निम्न दो चतुर्भुजों में लिखिए:

प्रश्न 4 : आखेटक- खाद्य संग्राहक मानवों के समाज में स्त्रियों और पुरुषों के बीच कार्यों का विभाजन कैसे होता था ? आप अपने परिवार, पड़ोस और विद्यालय में स्त्रियों और पुरुषों के बीच कार्यों के बंटवारे की सूची बनाइए। क्या आपको लगता है कि आखेटक- खाद्य संग्राहक मानवों के समाज में भी इसी प्रकार कार्यों का बंटवारा होता होगा ?

प्रश्न 5 : आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव द्वारा अपने रहने के लिए प्रयोग की जाने वाली गुफाओं की दीवारों पर मनमोहक चित्र बनाए जाते थे जिनका एक उदाहरण निम्न है :

निम्न रिक्त स्थान में आप भी अपने दैनिक क्रियाकलाप से संबंधित एक चित्र बनाइए:

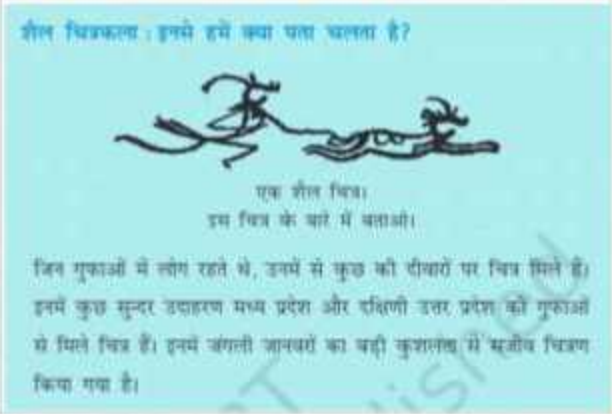

नए शब्द:

1. दबाव शल्क तकनीक: यह आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव द्वारा पत्थर के औजार बनाने के लिए प्रयोग की जाने वाली एक तकनीक थी। इसमें क्रोड को एक स्थिर सतह पर टिकाया जाता है और इस क्रोड पर हड्डी या पत्थर रखकर उस पर हथौड़ीनुमा पत्थर से शल्क (ब्लेड) निकाले जाते हैं जिससे वांछित उपकरण निकाले जाते हैं।

कार्यपत्रक: 6

विद्यार्थी का नाम - _____

आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्राचीन काल में व्यापक विकासों यथा आखेट- संग्रहण और कृषि के प्रारंभ की व्याख्या करेगा।

कृषि– पशुपालन– स्थाईजीवन– घरों, झोंपड़ियों का निर्माण – गाँव या बस्तियों की स्थापना – अनाज का भण्डारण – बर्तनों, टोकरियों का निर्माण – नवपाषाणयुगीन औजारों का प्रयोग – अनाज, कपास का उत्पादन और प्रयोग – कपड़ों की बुनाई – कब्रों में शवों के साथ परलोक में प्रयोग के लिए सामान रखने की प्रथा।

कुल मिलाकर आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव अब कृषक- पशु पालक मानव के रूप में अपना भोजन जुटाने के मामले में आत्म निर्भर हो गया।

मिट्टी के बर्तन: भण्डारण के लिए प्रयोग होते होंगे।

नव पाषाणयुग के पॉलिशदार औजार

सभी चित्र: एन सी ई आर टी पुस्तक से साभार

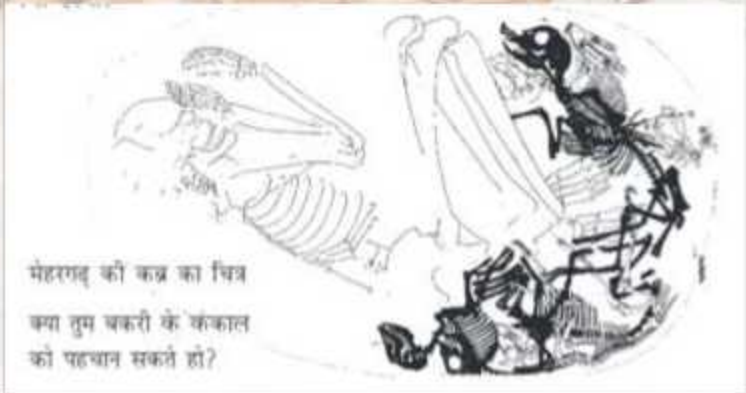

मेहरगढ़ की कब्र का चित्र

क्या तुम बकरी के कंकाल को पहचान सकते हो?

तालिका पूर्ण कीजिए:

प्रारंभिक कृषक द्वारा अनाज का प्रयोग	आधुनिक युग में हमारे द्वारा अनाज का प्रयोग

प्रश्न 2: आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव के कृषक- पशु पालक मानव बनने पर उस के जीवन में बहुत से परिवर्तन आए। इन परिवर्तनों को निम्न गोलों में लिखिए:

प्रश्न 3 : मानव पशु पालक बना क्योंकि उसके लिए पशुओं के अनेक उपयोग थे। पशुओं से उसे क्या-क्या मिलता होगा ? मानव को पशुओं से मिलने वाले लाभों को निम्न त्रिभुजों में भरो:

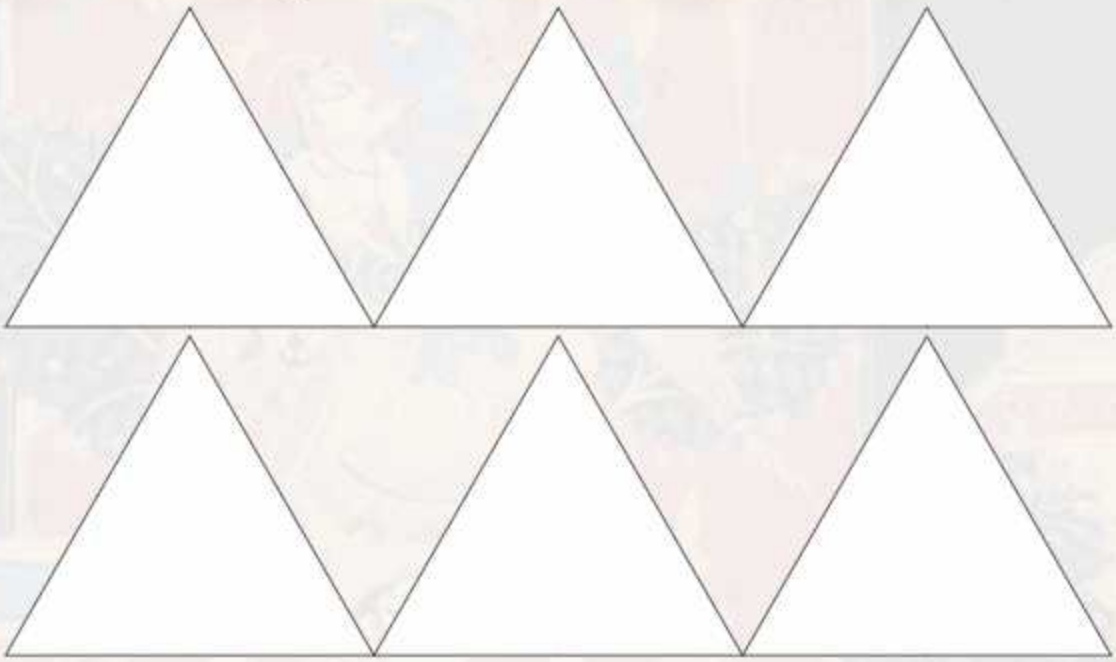

प्रश्न 4: इनाम गाँव में मिली कब्र में शव के साथ बकरी और अन्य वस्तुएं दफनाई गई हैं। यह उनके किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर किए जाने वाले रीति-रिवाज होंगे। क्या आपने अपने पास- पड़ोस में किसी व्यक्ति की मृत्यु के समय किए जाने वाले संस्कार और पालन किए जाने वाले रीति-रिवाजों को देखा है? यदि आपने नहीं भी देखा है तो आप इस बारे में अपने माता- पिता से पूछ सकते हो। आज कल मृत्यु के समय किए जाने वाले रीति-रिवाजों पर एक अनुच्छेद लिखिए।

प्रश्न 5: नव पाषाण काल में मानव ने बर्तन बनाना सीखा। बर्तन उसके लिए किस प्रकार उपयोगी रहे होंगे ? नव पाषाण युग के मानव के लिए बर्तनों के कम से कम 4 उपयोग लिखिए। आज हम बर्तनों का उपयोग किन प्रयोजनों के लिए करते हैं ? क्ले का प्रयोग करके नवपाषाण युग के मानव द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कुछ बर्तनों के मॉडल बनाइए।

कार्यपत्रक: 7

विद्यार्थी का नाम - _____

आरंभिक नगर

हड़प्पा की कहानी

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी भारत के मानचित्र पर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों को प्रदर्शित करता है।

एक विद्यार्थी राजू अपनी कक्षा के अन्य विद्यार्थियों और शिक्षक के साथ धौलावीरा के भ्रमण पर गुजरात आया हुआ है। धौलावीरा कच्छ के रण में खादिरबेत में स्थित है। उनके शिक्षक ने बच्चों को बताया कि धौलावीरा उन हडप्पा नगरों में से एक नगर है जो 4700 वर्ष पूर्व भारतीय उपमहाद्वीप में विशेषकर पाकिस्तान में पंजाब और सिंध तथा भारत में गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और भारतीय पंजाब में फले फूले थे।

प्रश्न 1 : भारत के एक आरेख मानचित्र पर भारत के उन राज्यों को रंग भर कर प्रदर्शित कीजिए जहाँ 4700 वर्ष पूर्व हडप्पा सभ्यता के नगर फले-फूले थे। क्या आप को लगता है हडप्पा सभ्यता के कुछ नगर दक्षिण भारत और पूर्वी भारत में भी स्थित थे? शिक्षक ने राजू और उसके मित्रों को बताया कि हडप्पा सभ्यता के कुछ सबसे महत्वपूर्ण नगर सिंध (पाकिस्तान) में मोहन जोदडो, पाकिस्तान के पंजाब में हडप्पा, राजस्थान में कालीबंगा, गुजरात में लोथल और धौलावीरा, तथा हरियाणा में राखी गढ़ी थे।

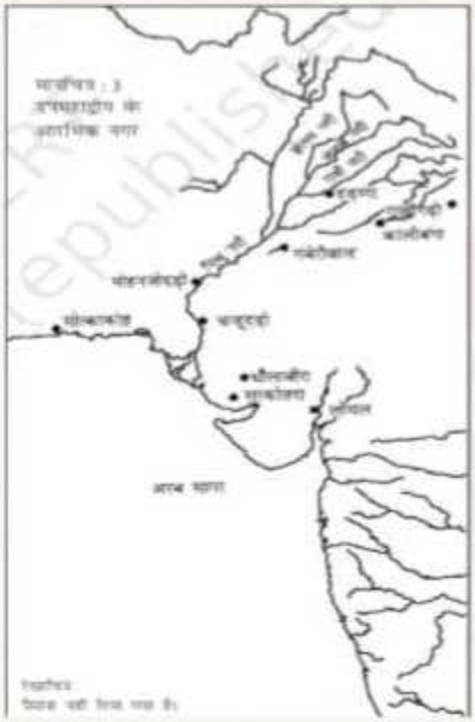

हडप्पा सभ्यता के कुछ महत्वपूर्ण नगर :

प्रश्न 2 : भारत के दिए हुए मानचित्र पर भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित हुए निम्न प्रारंभिक नगरों को प्रदर्शित कीजिए:

1. मोहन जोदड़ो, 2. हडप्पा, 3. कालीबंगा, 4. धौलावीरा, 5. लोथल, 6. राखीगढ़ी

प्रश्न : 3 हडप्पा सभ्यता के निम्न नगरों की दिल्ली से दूरी ज्ञात कर लिखिए:

1. हडप्पा, _____ 2.मोहनजोदड़ो, _____ 3.कालीबंगा, _____ 4.लोथल, _____

5.धौलावीरा, _____ 6.राखीगढ़ी, _____

प्रश्न 4 : कल्पना कीजिए कि आप भी राजू और उसके मित्रों के साथ धौलावीरा के भ्रमण पर गए हुए हैं। इस भ्रमण के अपने अनुभवों को बताने वाला एक अनुच्छेद लिखिए। आप अपना अनुच्छेद इन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर लिख सकते हैं जैसे धौलावीरा पहुँचने के लिए आपके द्वारा प्रयोग किए गए यातायात के साधन, अपने दोस्तों के साथ आप के द्वारा की गई मौज मस्ती, गुजरात में आप के द्वारा किया गया भोजन, गुजरात की स्थानीय संस्कृति और 4700 वर्ष पूर्व धौलावीरा में जीवन के बारे में आपके अनुमान आदि।

_____

_____

_____

प्रश्न 5: अपने शिक्षक और अपने मित्रों से बातचीत कीजिए और दिल्ली के आसपास स्थित हडप्पा सभ्यता के कुछ स्थलों के नाम पता लगाने का प्रयास कीजिए। डिस्कवरी चैनल पर सनोली नामक स्थान पर आधारित कार्यक्रम देखने का प्रयास कीजिए और कार्य क्रम में दिखाई गई महत्वपूर्ण बातों को अपने शब्दों में लिखिए।

_____

_____

_____

कार्यपत्रक: 8

विद्यार्थी का नाम - _____

आरंभिक नगर

इन नगरों की विशेषता क्या है ?

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्रारंभिक मानवीय संस्कृतियों के विशिष्ट लक्षणों को मान्यता देता है तथा सिंधु तट पर प्रथम नगरों के विशेष संदर्भ में इन संस्कृतियों के विकास की व्याख्या करता है।

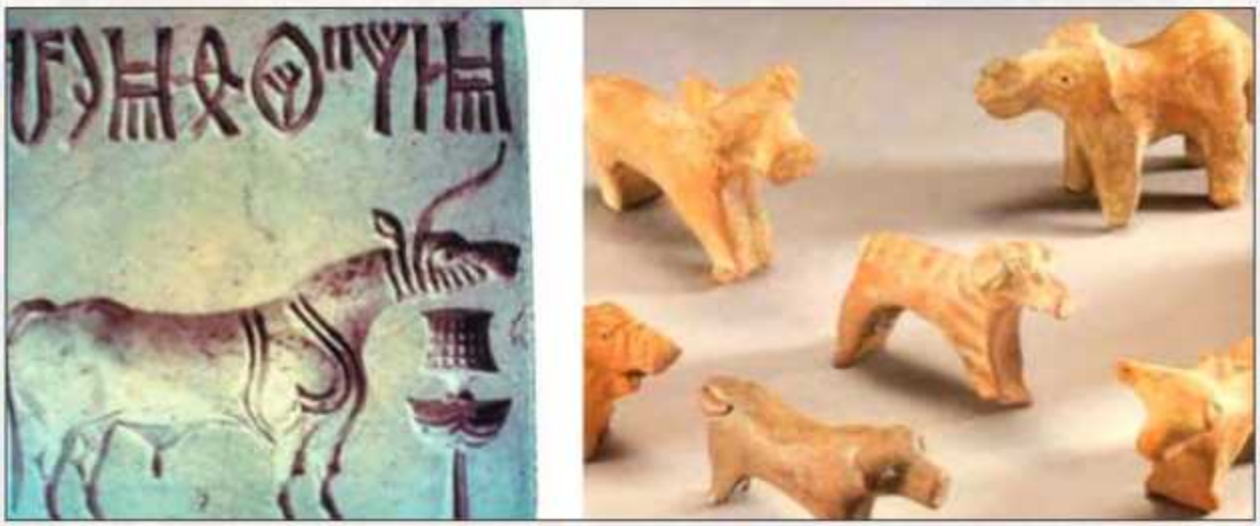

शिक्षक ने राजू और उसके मित्रों को बताया कि हडप्पा नगरों की एक विशिष्ट संस्कृति थी। इन सभी स्थलों से पुरातत्वविदों को अनोखी वस्तुएँ मिली हैं : जैसे मिट्टी के लाल बर्तन जिन पर काले रंग के चित्र बने थे, पत्थर के बाट, मुहरें, मनके, ताँबे के उपकरण और पत्थर के लंबे ब्लेड आदि।

प्रश्न 1 : हड़प्पा नगर कुछ अनोखी वस्तुओं के लिए जाने जाते हैं। उन अनोखी वस्तुओं के नाम लिखकर निम्न तालिका को पूर्ण कीजिए:

बच्चे धौलावीरा नगर के तीनों भागों के चारों ओर पत्थर की दीवारों तथा प्रवेश द्वारों को देखकर अचरज से भर गए थे। शिक्षक ने बताया कि हडप्पा संस्कृति का प्रत्येक नगर किसी विशेष आकर्षण के लिए जाना जाता है। मोहनजोदड़ो विशाल स्नानागार के लिए, कालीबंगा और लोथल अग्निकुंडों के लिए, मोहन जोदड़ो तथा हडप्पा बड़े-बड़े भंडार-गृहों के लिए एवं लोथल अपने बंदरगाह के लिए जाना जाता है।

प्रश्न 2 नीचे कुछ रिक्त गोले दिए गए हैं जिन के ऊपर हड़प्पा संस्कृति के किसी नगर का विशेष आकर्षण लिखा हुआ है। रिक्त गोलों में हड़प्पा सभ्यता के उन नगरों के नाम लिखिए जहाँ यह विशेष आकर्षण पाए गए हैं:

अग्नि कुण्ड, विशाल स्नानागार, बंदरगाह

राजू ने अपने शिक्षक से पूछा क्या हड़प्पा संस्कृति के यह नगर आधुनिक नगरों जैसे ही थे। शिक्षक ने बताया कि हड़प्पा सभ्यता के इन नगरों में बहुत-सी ऐसी विशेषताएँ थीं जो आधुनिक नगरों में भी पाई जाती हैं। हड़प्पा सभ्यता के नगरों में पक्की ईंटों से बने एक मंजिला और दो मंजिला मकान होते थे। इन नगरों में नाले ,मेनहोल और एक दूसरे को समकोण पर काटती सड़कें होती थी जो एक जाल या ग्रिड का निर्माण करती थीं।

प्रश्न : 3 अपने मोहल्ले के मकानों का एक सर्वेक्षण कीजिए तथा उन सामग्रियों की एक सूची बनाइए जिन से आप के मोहल्ले के मकानों का निर्माण हुआ है। हड़प्पा सभ्यता के मकानों के निर्माण में प्रयुक्त सामग्रियों से इनकी तुलना कीजिए। इसके लिए आप अपने परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त अपनी इतिहास की पाठ्य पुस्तक की भी सहायता ले सकते हैं।

प्रश्न: 4 हड़प्पा सभ्यता के लोग कुछ अनोखी वस्तुओं जैसे मोहरें, पत्थर के बाट इत्यादि का प्रयोग किया करते थे। इन वस्तुओं को किन उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता होगा ? अपनी इतिहास की पाठ्यपुस्तक की सहायता से निम्न तालिका को पूर्ण कीजिए :

हड़प्पा सभ्यता के लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली अनोखी वस्तुएँ	इन वस्तुओं को प्रयोग करने का प्रयोजन

प्रश्न: 5 हड़प्पा सभ्यता के नगरों में रहने वाले लोगों का जीवन आधुनिक नगरों में रहने वाले लोगों के जीवन से किस प्रकार भिन्न रहा होगा? एक तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए निम्न तालिका पूर्ण कीजिए। आप इस तालिका को अपनी समझ के अनुसार भर सकते हैं, आपको पुस्तकों से तथ्य तलाशने की आवश्यकता नहीं है:

अंतर का आधार	हड़प्पा सभ्यता के नगर	आधुनिक नगर
प्रयोग किए जाने वाले परिवहन के साधन		
घरों में प्रकाश करने की व्यवस्था		
विद्यालय		
स्वास्थ्य सुविधाएँ		
लोगों के कामधंधे		
जल निकासी व्यवस्था (सीवर)		
घरों के प्रकार		

कार्यपत्रक: 9

विद्यार्थी का नाम - _____

आरंभिक नगर

नगर में जीवन तथा कच्चे माल की तलाश

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्राचीन काल के दौरान हुए व्यापक विकासों की व्याख्या करेगा, उदाहरणार्थ सिंधु तट पर प्रारंभिक नगर इत्यादि एक स्थान पर होने वाले विकासों को अन्य स्थान पर होने वाले विकासों से संबंधित करेगा।

शिक्षक ने राजू और उसके मित्रों को बताया कि हड़प्पा सभ्यता के नगरों में शासक, लेखक तथा शिल्पकार रहते थे। वे पत्थर, शंख तथा धातु से मोहरे , मनके, बाट तथा ब्लेड बनाते थे। वे सुंदर काले रंग के डिजाईन वाले मिट्टी के बर्तन भी बनाते थे और साथ ही कपास उगाकर कपड़े का उत्पादन भी करते थे। हडप्पा सभ्यता के नगरों में अनेक विशेषज्ञ होते थे जो विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करते थे।

प्रश्न: 1 : कल्पना कीजिए कि आप हड़प्पा सभ्यता के किसी नगर के शासक हैं। नगर का प्रशासन चलाने के अपने कार्य पर एक अनुच्छेद लिखिए। यह भी लिखिए कि क्या यह कार्य करना आपके लिए चुनौती पूर्ण था या आपको इस कार्य में आनंद आता था ?

_____

_____

_____

प्रश्न: 2 : अपने अभिभावकों और मित्रों से चर्चा करके यह पता लगाने का प्रयास कीजिए कि आपके अड़ोस- पड़ोस में किन वस्तुओं का उत्पादन होता है। इन वस्तुओं की एक सूची तैयार कीजिए तथा इनकी तुलना हड़प्पा सभ्यता के लोगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं से कीजिए।

_____

_____

_____

राजू ने अपने शिक्षक से पूछा कि इन विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चा माल क्या हड़प्पा सभ्यता के लोगों को स्थानीय स्तर पर ही मिल जाया करता था। शिक्षक ने बताया कि कुछ कच्चा माल तो उन्हें स्थानीय स्तर पर ही मिल जाता था किंतु कुछ कच्चा माल वे दूर-दूर के स्थानों से लाते थे। वे ताँबा राजस्थान और ओमान से, टिन अफगानिस्तान और ईरान से, सोना कर्नाटक से और कीमती पत्थर गुजरात, ईरान और अफगानिस्तान से लाते थे।

प्रश्न: 3 निम्न तालिका पूर्ण कीजिए :

कच्चे माल का नाम	वह स्थान जहाँ से यह कच्चा माल हड़प्पा सभ्यता के लोगों को मिलता था	वह स्थान जहाँ से वर्तमान में यह कच्चा माल प्राप्त होता है

शिक्षक ने बच्चों को बताया कि हड़प्पा सभ्यता के सभी लोग नगरों में नहीं रहते थे।बहुत से लोग गाँवों में भी रहते थे,फसलें उगाते थे और पशुपालन करते थे। वे गेहूँ, जौ, दालें, मटर, चावल, तिल और सरसों उगाते थे। वे गाय, भैंस, भेड़ और बकरियाँ पालते थे। कृषि के लिए वे एक नए औजार हल का और सिंचाई के साधनों का प्रयोग करते थे।

प्रश्न: 4 निम्न तालिका पूर्ण कीजिए

हड़प्पा सभ्यता के लोगों द्वारा उगाई जाने वाली फसलें	हड़प्पा सभ्यता के लोगों द्वारा पाले जाने वाले पशु	कृषि के लिए हड़प्पा सभ्यता के लोगों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले उपकरण और तकनीकें

राजू ने अपने शिक्षक से पूछा कि हड़प्पा सभ्यता के नगरों का अंत कैसे हो गया। शिक्षक ने बताया कि हड़प्पा सभ्यता के नगरों के पतन के अनेक संभावित कारण रहे होंगे। हो सकता है कि नदियाँ सूख गई हों या बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई की गई हो, या पशुओं द्वारा अत्याधिक चराई के कारण भूमि का हरित आवरण (ग्रीनकवर अर्थात घास की परत) समाप्त हो गया हो या इन नगरों में बहुत अधिक बाढ़ आई होगी।

प्रश्न : 5 हड़प्पा सभ्यता के नगरों के अंत का सबसे अधिक संभावित कारण जलवायु में परिवर्तन और पर्यावरण का विनाश माना जाता है। क्या आप को लगता है कि आधुनिक नगरों को भी इसी प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ेगा ? आधुनिक नगरों में पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनाए जा सकने वाले 5 उपाय लिखिए।

कार्यपत्रक: 10

विद्यार्थी का नाम - _____

क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें

वेद और वैदिक समाज

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी काल विशेष की साहित्यिक कृतियों में उल्लेखित मुद्दों, घटनाओं तथा व्यक्तित्वों का वर्णन करता है।

आज गोलू के घर यज्ञ है। पंडित जी ऋग्वेद के श्लोकों का उच्चारण कर रहे थे। शाम को गोलू ने दादाजी से वेदों के बारे में पूछा। दादाजी ने बताया कि ऋषियों ने प्राचीन संस्कृत भाषा में चार वेदों की रचना की थी-ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अर्थवेद। वेदों को पढ़ने के स्थान पर बोला और सुना जाता था।

प्रश्न: 1 चार वेदों के नाम लिखिए। आपके अनुसार इस का क्या कारण होगा कि वेदों को पढ़ने के स्थान पर बोला और सुना जाता था? वेदों की भाषा क्या थी ? क्या यह भाषा आज भी चलती है ?

_____

_____

_____

दादाजी ने यह भी बताया कि जहाँ पुरातत्वविद बर्तन, सिक्कों जैसी भौतिक सामग्री का अध्ययन करते हैं, वहीं इतिहासकार इसके अतिरिक्त साहित्यिक कृतियों का अध्ययन करके भी अतीत के बारे में पता लगाते हैं। इतिहासकार विश्वामित्र और दो नदियों के बीच के संवाद वाले श्लोकों का अध्ययन करते हैं तथा उनके आधार पर इतिहास की रचना करने का प्रयास करते हैं।

कहानी का समय काल	
कहानी में उल्लेखित व्यक्तियों का व्यवसाय	
कहानी में उल्लेखित व्यक्तियों का मजहब	

कहानी में उल्लेखित सरकार का रूप	
कहानी में उल्लेखित व्यक्तियों द्वारा मनाए जाने वाले त्यौहार	

दादाजी ने गोलू को बताया कि ऋग्वैदिक लोग पशुओं, पुत्रों, तथा घोड़ों के लिए प्रार्थना किया करते थे। पशुओं, भूमि, जल और लोगों को हथियाने के लिए युद्ध लड़े जाते थे। सरदारों, पुजारियों (ब्राह्मणों)और आम लोगों के बीच युद्ध में जीती सम्पत्ति का बँटवारा किया जाता था। कुछ संपदा यज्ञ करवाने के लिए भी प्रयोग की जाती थी। कोई नियमित सेना नहीं होती थी। वीर और कुशल योद्धाओं को सरदार के रूप में चुना जाता था।

प्रश्न: 3 गोलू की कहानी पढ़कर आपको जो सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं उनके आधार पर निम्न तालिका पूर्ण कीजिए :

वे वस्तुएँ जिनके लिए ऋग्वैदिक लोग प्रार्थना करते थे	वे वस्तुएँ जिनके लिए ऋग्वैदिक लोग युद्ध करते थे	वे लोग जिनके बीच ऋग्वैदिक समाज की संपदा का बँटवारा होता था	ऋग्वेद काल में सेना का प्रकार	ऋग्वेद काल में समाज का नेता किस प्रकार चुना जाता था

दादाजी ने गोलू को बताया कि ऋग्वेद में ब्राह्मणों पुजारियों और राजाओं का उल्लेख है। आर्य वे लोग थे जिन्होंने वेदों की रचना की थी और उनके विरोधी दास या दस्यु कहलाते थे। बाद में चलकर दास/दासी शब्द का प्रयोग गुलामों के लिए किया जाने लगा।

प्रश्न 4 : ऋग्वेद में वर्णित निम्न शब्दों की व्याख्या करते हुए निम्न तालिका को पूर्ण कीजिए

ऋग्वेद में उल्लेखित शब्द	शब्द का वर्णन/व्याख्या
ब्राह्मण (पुजारी)	
राजा	
जन	
विश्	
आर्य	
दस्यु (दास)	
दास/ दासी	

प्रश्न: 5 जब आप कोई ऐतिहासिक फिल्म या टीवी धारावाहिक देखते हो तो आप को लगता है कि फिल्म में दिखाया जाने वाला राजा विलासितापूर्ण जीवन जीता है और उसके पास बड़े-बड़े महल, विशाल सेना होती है, वह लोगों से कर लेता है और उस की मृत्यु होने पर उसका बेटा उसके स्थान पर अपने आप राजा बन जाता है, इत्यादि। क्या आपको लगता है कि ऋग्वेदकालीन राजा फ़िल्मों और धारावाहिकों में दिखाए गए राजाओं जैसे ही होते थे ? अपनी पाठ्य पुस्तक से मिली जानकारी की सहायता से निम्न तालिका पूर्ण कीजिए।

ऋग्वैदिक राजाओं की विशेषताओं से संबंधित प्रश्न	आपका उत्तर (हाँ/ नहीं)
क्या उन के बेटे अपने पिता की मृत्यु होने के बाद अपने आप राजा बन जाते थे ?	
क्या उन के पास महल होते थे ?	
क्या वे लोगों से कर इकठ्ठा करते थे ?	

कार्यपत्रक: 11

विद्यार्थी का नाम - _____

क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें

खामोश प्रहरी

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्रारंभिक मानव संस्कृतियों के विशिष्ट लक्षणों की पहचान करता है और उनके विकास की व्याख्या करता है।

कहानी महापाषाणों की तथा इनाम गाँव में एक विशिष्ट व्यक्ति की कब्र।

प्रश्न: निम्न तालिका में भारतीय उपमहाद्वीप के 3000 वर्ष पूर्व के इतिहास से संबंधित कुछ पद और उनके अर्थ दिए गए हैं। इन पदों का वर्णन अपने शब्दों में करते हुए निम्न तालिका को पूर्ण कीजिए। आप इन पदों से संबंधित काल (समय) स्थान, उनकी भौगोलिक स्थिति, उनके उपयोग, उनके स्रोत बता सकते हैं और साथ ही इन पदों का वर्णन करने के लिए कोई उदाहरण भी दे सकते हैं -

महत्वपूर्ण पद	पद का अर्थ	पद का वर्णन
महापाषाण	बड़े पत्थर	
कब्रें	वह स्थान जहाँ मृत व्यक्ति को गाड़ा जाता था	
काले और लाल मिट्टी के बर्तन	विशिष्ट बर्तन	
ब्रह्मगिरी	एक महापाषाण स्थल	
इनाम गाँव	एक प्रारंभिक गाँव	

प्रश्न: 2 कल्पना कीजिए कि आप इनाम गाँव के निवासी थे। आपके एक पड़ोसी की मृत्यु हो गई। यह आपकी परंपरा थी कि मरे हुए लोगों के लिए महापाषाण कब्रें बनाई जाएँ। आपको महापाषाण कब्र बनाने के लिए अनेक कार्य करने पड़ते थे जैसे पत्थरों को दूर के स्थानों से ढोकर लाना, मरे हुए व्यक्ति को जमीन में गाड़ना, पत्थरों को तोड़ना, उपयुक्त पत्थरों की तलाश करना, गड्ढे खोदना, पत्थरों को तराशना ,पत्थरों को उपयुक्त स्थिति में रखना। इन सभी कार्यों /चरणों को एक उचित क्रम में व्यवस्थित करते हुए अर्थात् यह बताते हुए कि सबसे पहले क्या कार्य किया जाएगा, फिर उसके बाद क्या किया जाएगा निम्न तालिका पूर्ण कीजिए :

1.
2.
3.
4.
5.
6.

प्रश्न : 3 सभी महापाषाण कब्रों में कुछ सामान्य विशेषताएँ हैं। आमतौर पर मरे हुए व्यक्तियों को विशिष्ट बर्तनों, जिन्हें काले और लाल मिट्टी के बर्तन कहा जाता था ,के साथ दफनाया जाता था। लोहे के औजार और हथियार भी मिले हैं और कई बार घोड़े के कंकाल , घोड़े की साज सज्जा के सामान एवं पत्थर तथा सोने के आभूषण भी मिले हैं।

क्या आप सोचते हैं कि मृत व्यक्तियों को दफनाने की यह परंपराएँ लोगों के व्यवहार से उत्पन्न हुई थीं अथवा वे शासकों द्वारा लोगों पर थोपी गई थीं? क्या हड़प्पा सभ्यता के नगरों में लोहे का प्रयोग होता था ?

प्रश्न : 4 अपने मोहल्ले के मकानों का एक सर्वेक्षण कीजिए। क्या आपको अमीर और गरीब लोगों के घरों में कोई अंतर दिखाई देता है ? अपने सर्वेक्षण में आपने अमीर और गरीब लोगों के मकानों में जिन अंतरों की पहचान की उनकी एक सूची बनाइए। कब्रें भी सामाजिक अंतरों को दिखाती हैं। ब्रह्मगिरी और इनाम गाँव में स्थित कब्रें उन लोगों के सामाजिक स्तर में अंतर को दिखाती हैं जिन्हें यहाँ दफनाया गया था। इनमें से कुछ धनी थे, तो कुछ निर्धन कुछ अपने समुदाय के सरदार थे, तो कुछ उनके अनुयायी। कुछ कब्रें कुछ निश्चित परिवारों के उपयोग के लिए ही रखी जाती थीं। अपनी इतिहास की पाठ्यपुस्तक को पढ़कर निम्न तालिका पूर्ण कीजिए

महत्वपूर्ण कब्र स्थल	वर्तमान भारत के वे राज्य जहाँ यह कब्र स्थल स्थितहैं	इस कब्र के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य
ब्रह्मगिरी		
इनाम गाँव		

प्रश्न : 5 लोग अपनी रोजी-रोटी चलाने के लिए अनेक कार्य करते हैं और इस प्रक्रिया में वे कुछ निश्चित वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। उदाहरणार्थ वह व्यक्ति जो लकड़ी की वस्तुएँ बनाता है बढ़ई कहलाता है और पेशे को बढ़ईगिरी कहते हैं। इनाम गाँव के लोग बहुत सी वस्तुएँ उत्पादित करते थे जिनके साक्ष्य (सबूत) पुरातत्वविदों को मिले हैं और उन साक्ष्यों को निम्न तालिका में दिया गया है। इनाम गांव के जो लोग इन वस्तुओं का उत्पादन करते थे उनके पेशों की पहचान करते हुए निम्न तालिका पूर्ण कीजिए

इनामगाँव में मिले पुरातात्विक साक्ष्य	इनामगाँव के लोगों का संभावित पेशा और उस पेशे में लगे लोग क्या कहलाते थे
गेंहू, जौ, चावल, दाल, बाजरा, मटर, तिल के बीज़	
गाय, भैंस, बकरी, भेड़, कुत्ते, घोड़े, गधे, सूअर जैसे घरेलु पशुओं की हड्डियाँ	
सांभर, चितकबरा हिरण, कालामृग, खरगोश और नेवले जैसे जंगली जानवरों की हड्डियाँ	
मगरमच्छ, कछुए, केकड़े और मछलियों की हड्डियाँ	
पक्षियों की हड्डियाँ	
फल और बेर जैसी वस्तुओं को इकट्ठा करने के साक्ष्य भी मिले हैं	

कार्यपत्रक: 12

विद्यार्थी का नाम - _____

राजा, राज्य और एक प्राचीन गणराज्य

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी भारत के बाह्य रेखा मानचित्र पर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों, स्थानों की अवस्थिति दिखाता है।

जनपद में जन शब्द का अर्थ है- जन के बसने की जगह।	महाजनपद करीब 2500 साल पहले, कुछ जनपद अन्यों से अधिक महत्वपूर्ण हो। उन्हें महाजन पद कहा जाने लगा।

महाजनपदों की संख्या 16 थी जिनमें से कुछ को निम्न मानचित्र पर दिखाया गया है
मानचित्र : एनसीईआरटी की पुस्तक के सौजन्य से

प्रश्न 1 : भारत के नीचे दिए गए बाह्य रेखा मानचित्र पर निम्न महाजनपदों को प्रदर्शित कीजिए :

1. अवंति, 2. कुरु, 3. वज्जी, 4. मगध, 5. कोसल, 6. गांधार, 7. अंग, 8. पांचाल

प्रश्न 2 : दिल्ली से निम्न नगरों (जो कि महाजनपदों की राजधानियाँ थे) की दूरी पता कीजिए तथा निम्न तालिका में उन्हें दिल्ली से दूरी के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित कीजिए

1. राजगृह , 2. तक्षशिला, 3. उज्जैन, 4. हस्तिनापुर, 5. कौशांबी , 6. वैशाली

दिल्ली से दूरी के बढ़ते क्रम में नगर	दिल्ली से दूरी (किमी में)
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	

प्रश्न 3 . कल्पना कीजिए कि आप अवंति महाजनपद की राजधानी उज्जैन में रहने वाले एक व्यापारी हैं। आप अपने माल के साथ गांधार महाजनपद की राजधानी तक्षशिला जाने के लिए एक काफिले में यात्रा कर रहे हैं। अपनी यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में करें। इस वर्णन में रास्ते में पड़ने वाली नदियों, नगरों, वनों, गाँवों का उल्लेख कीजिए, रास्ते में जो लोग आपको मिले उनके बारे में बताइए, और रास्ते में आपको क्या कठिनाइयाँ आईं और आपने किन बातों का यात्रा में आनंद लिया उनका भी वर्णन कीजिए।

प्रश्न 4 . जनपद और महाजनपद में अंतर बताइए।

प्रश्न 5 . क्या हम जनपदों की तुलना आज के जिलों से और महाजनपदों की तुलना आज के राज्यों से कर सकते हैं ? भारत के वर्तमान राजनीतिक मानचित्र की सहायता से निम्न तालिका को पूरा कीजिए :

महाजनपदों के नाम	भारत के उन राज्यों/ देशों के नाम जहाँ यह वर्तमान में स्थित हैं
गांधार	
कुरु	
पांचाल	
कोसल	
मगध	
अंग	
अवंति	
वज्जी	

कार्यपत्रक: 13

विद्यार्थी का नाम - _____

राज्य, राजा और एक प्राचीन गणराज्य

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्रारंभिक मानवीय संस्कृतियों के विशिष्ट लक्षणों की पहचान करता है तथा उनके विकास की व्याख्या करता है।

प्रश्न 1. निम्न तालिका पूर्ण कीजिए :

कुछ जनपदों की खुदाई से मिली वस्तुएँ

खुदाई स्थल	वे कहाँ स्थित हैं	खुदाई स्थलों से प्राप्त वस्तुएँ	वहाँ के निवासियों का संभावित पेशा
पुराना किला	दिल्ली	लोग झोपड़ियों में रहते थे	
हस्तिनापुर	उत्तर प्रदेश में मेरठ के पास	मवेशी तथा अन्य जानवर पालते थे और अनेक फसलें उगाते थे	
अतरंजी खेड़ा	उत्तर प्रदेश में ऐटा के पास	"चित्रित धूसर पात्र" वाले नाम के मिट्टी के बर्तन बनाते थे	

प्रश्न 2. निम्न तालिका में महाजनपदों की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। इन विशेषताओं के उत्पन्न होने के क्या कारण रहे होंगें ? अपनी इतिहास की पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ 49-50 का अध्ययन करके तथा अपनी समझ से निम्न तालिका पूर्ण कीजिए:

महाजन पदों की विशेषताएँ	इन विशेषताओं के उत्पन्न होने के कारण (इन बातों की आवश्यकता क्यों पड़ी होगी)
राजधानी नगर	
किलेबंदी	
नियमित सेना	
आहत सिक्के	
राजकर्मचारी	
कर	

प्रश्न 3 : महाजनपद काल के राजा और ऋग्वेद काल के राजाओं में क्या समानता और असमानता थी ? अपनी इतिहास की पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ 38-39 तथा 49-50 पढ़िए और उनके आधार पर निम्न तालिका पूर्ण कीजिए :

अंतर/ समानता का आधार	ऋग्वैदिक काल का राजा (हाँ/नहीं)	महाजनपद काल का राजा (हाँ/नहीं)
क्या ये बड़ी राजधानी / नगर में रहते थे ?		
क्या ये बड़े और भव्य महलों में रहते थे ?		
क्या इनके पास नियमित सेना होती थी ?		
क्या ये कर वसूलते थे ?		
क्या राजा की मृत्यु के बाद उसका बेटा अपने आप राजा बन जाता था ?		
क्या ये राजा किले बनवाते थे ?		
क्या इनके पास बड़ी संख्या में राजकर्मचारी होते थे?		
क्या इनकी प्रजा इनका कहना मानती थी ?		
क्या इनको अपना राज काज चलाने के लिए विशाल संसाधनों अर्थात अधिक धन की आवश्यकता पड़ती थी ?		

प्रश्न 4. महाजनपद के राजा विशाल किले बनवाते थे, बड़ी सेना रखते थे और बड़ी संख्या में राज कर्मचारी नियुक्त करते थे। इसके लिए उन्हें अधिक धन की आवश्यकता पड़ती थी। अत: अब वे केवल समय समय पर लाई जाने वाली भेंट पर ही निर्भर न रह कर नियमित रूप से कर वसूलने लगे। अपनी इतिहास की पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ 51 का अधययन कर के निम्न तालिका पूर्ण कीजिए :

कर का प्रकार	इस कर का भुगतान किस व्यक्ति को करना पड़ता होगा ? (उसका पेशा लिखिए)	कर का भुगतान किस रूप में किया जाता होगा (उस वस्तु या सेवा का नाम लिखिए जो कर के रूप में दी जाती थी)	कर की मात्रा (कर के रूप में कितनी वस्तु या सेवा देनी पड़ती थी)
फसलों पर कर			
			राजा के लिए एक महीने में एक दिन काम करना पड़ता था
		जानवरों या उनके उत्पाद के रूप में कर देना पड़ता था	
	व्यापारियों को कर देना पड़ता था		
		जंगल से प्राप्त वस्तुएँ देनी पड़ती थीं	

प्रश्न 5. महाजनपदों में मुख्यतः दो प्रकार की शासन व्यवस्थाएँ थीं– मगध जैसे महाजन पदों में राजतंत्र था जहाँ एक ही शक्तिशाली राजा राज करता था, जबकि वज्जी जैसे महाजन पद में एक साथ अनेक राजा होते थे जो मिलकर राज काज चलाते थे और ऐसे महाजनपद को गण या संघ कहा जाता था। इन सभी महाजनपदों में मगध सबसे शक्तिशाल महाजनपद बन गया। इसके अनेक कारण थे। अपनी इतिहास की पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ 52 का अध्ययन कीजिए और निम्न तालिका पूर्ण कीजिए

शक्तिशाली राज्य बनने के लिए आवश्यक शर्तें	क्या मगध इन शर्तों को पूरा करता था? (हाँ/ना)	इस बात का वर्णन कि मगध इन शर्तों को कैसे पूरा करता था
यातायात के लिए अच्छे जल मार्ग होने चाहिए।		
सिंचाई के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध होना चाहिए जिससे अच्छी फसल हो।		
बड़ी नदियाँ होनी चाहिए जिनमें आने वाली बाढ़ से जमीन उपजाऊ रहे।		
सेना को मजबूत बनाने के लिए राज्य में बड़ी संख्या में हाथी होने चाहिए।		
अच्छी लकड़ी उपलब्ध होनी चाहिए।		
औजार और हथियार बनाने के लिए लोहा उपलब्ध होना चाहिए।		
योग्य और शक्तिशाली शासक होने चाहिए।		

कार्यपत्रक: 14

विद्यार्थी का नाम - _____

नए प्रश्न और विचार

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्राचीन काल में विभिन्न पंथों एवं विचार प्रणालियों के मूलभूत विचारों और मूल्यों का विश्लेषण करता है।

प्रश्न 1 : बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ थे जिन्हें गौतम के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म लगभग 2500 वर्ष पूर्व हुआ था। अपनी इतिहास की पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ 57-58 का अध्ययन कीजिए और उसके आधार पर निम्न तालिका पूर्ण कीजिए :

गौतम बुद्ध से संबंधित पद/ स्थान/व्यक्ति	इन पदों/स्थानों/व्यक्तियों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए
शाक्य गण	
क्षत्रिय	
बोधि वृक्ष	
बोधगया	
बुद्ध	
सारनाथ	
कुशीनगर	
तन्हा	
कर्म	
प्राकृत	
किसा गौतमी	
संघ	
विनय पिटक	

प्रश्न 2 : जैनों के अंतिम और 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे और उन्होंने भी अपना संदेश 2500 वर्ष पूर्व फैलाया था। अपनी इतिहास की पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ 61-62 का अध्ययन कीजिए और उसके आधार पर निम्न तालिका पूर्ण कीजिए

वर्धमान महावीर से संबंधित पद/व्यक्ति/ स्थान	इन पदों/व्यक्तियों/स्थानों का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए
लिच्छवी	
वज्जिसंघ	
ज्ञान प्राप्ति	
अहिंसा	
मागधी	
जैन	
भिक्खु और भिक्खुणी	
वल्लभी	
ब्रह्मचर्य	
तीर्थंकर	

प्रश्न 3 : गौतम बुद्ध और वर्धमान महावीर दोनों ही महान विचारक और उपदेशक थे जो 2500 वर्ष पूर्व इस उपमहाद्वीप पर रहे। उन्होंने लोगों को दुख और कष्टों से मुक्ति पाने का तरीका बताया। अपनी इतिहास की पाठ्यपुस्तक में उनके विचारों और शिक्षाओं को पढ़िए और गौतम बुद्ध और वर्धमान महावीर की शिक्षाओं को लिखते हुए निम्न तालिका पूर्ण कीजिए। यदि आपको किसी बिंदु पर लिखने के लिए कुछ नहीं मिलता है तो आप उस खाने में केवल "लागू नहीं "लिख सकते हैं।

अंतर/समानता का आधार	बौद्ध मत	जैन मत
जीवन के प्रति दृष्टिकोण		
दुख और अप्रसन्नता का कारण		
दुख के निवारण का उपाय		
दूसरों के साथ हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए		
कर्म के संबंध में विचार		

उपदेशों के लिए प्रयोग की गई भाषा		
क्या अनुयायियों को अपने गुरु/उपदेशक की बातों का आंखें मूँद कर पालन करना चाहिए ?		
क्या सत्य को जानने के लिए घर छोड़ना आवश्यक है?		
अनुयायियों के लिए बताया गया आदर्श आचरण		
इस पंथ के मुख्य समर्थक कौन थे ?		
इनकी शिक्षाओं को कैसे लिखा गया और किसने लिखा ?		
वह स्थान जहाँ यह पंथ फैला		

प्रश्न 4 : आपने प्राय: टी वी पर अनेक पंथों के धर्म गुरुओं को धार्मिक उपदेश देते हुए देखा होगा। टी वी पर किसी धार्मिक नेता द्वारा दिए जाने वाले धार्मिक उपदेशों को कुछ समय के लिए सुनिए और उनके उपदेश की मुख्य बातों को अपनी नोटबुक में लिखिए। इस धार्मिक गुरु द्वारा दी गई शिक्षाओं की तुलना बुद्ध और महावीर की शिक्षाओं से कीजिए। उनके बीच समानताओं और असमानताओं को लिखिए।

प्रश्न 5 : क्या आपको लगता है कि बुद्ध और महावीर की शिक्षाएँ आपके दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में उपयोगी और प्रासंगिक हैं ? उदाहरणार्थ यदि कक्षा में बैठने के स्थान के मुद्दे पर आपका अपने सहपाठी से झगड़ा हो जाता है तो क्या बुद्ध और महावीर की शिक्षाएँ इस झगड़े को सुलझाने में उपयोगी और प्रासंगिक सिद्ध होंगी ? अपने दैनिक जीवन से पाँच उदाहरण दीजिए जहाँ आप बुद्ध और महावीर की शिक्षाओं को उपयोगी और प्रासंगिक पाते हैं। विस्तार से उनकी व्याख्या कीजिए।

कार्यपत्रक: 15

विद्यार्थी का नाम - _____

नए प्रश्न और विचार

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्राचीन काल में विभिन्न पंथों एवं विचार प्रणालियों के मूलभूत विचारों और मूल्यों का विश्लेषण करता है।

प्रश्न : उपनिषद उत्तर वैदिक ग्रंथों (वैदिक काल के अंत में लिखे गए ग्रंथों) का हिस्सा थे। अपनी इतिहास की पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ 59-60 का अध्ययन कीजिए और उसके आधार पर निम्न तालिका पूर्ण कीजिए:

उपनिषद

उपनिषद से संबंधित पद/व्यक्ति/स्थान	अपने शब्दों में इनकी व्याख्या कीजिए
उपनिषद	
औपनिषदिक विचारक	
गार्गी	
जाबालि	
गौतम	
शंकराचार्य	
छांदोग्य उपनिषद	

प्रश्न 2: जिस समय जैन पंथ और बौद्ध मत प्रसिद्ध हो रहे थे, उसी समय ब्राह्मणों ने आश्रम व्यवस्था का विकास किया। अपनी इतिहास की पाठ्यपुस्तक के प्रष्ठ64 का अध्ययन कीजिए और उसके आधार पर निम्न तालिका पूर्ण कीजिए:

आश्रम व्यवस्था

आश्रम व्यवस्था से संबंधित पद	अपने शब्दों में इनकी व्याख्या कीजिए
आश्रम	
ब्रह्मचर्य	
गृहस्थ	
वानप्रस्थ	
सन्यास	
आश्रम व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति	

प्रश्न: 3 महावीर और बुद्ध दोनों ने यह अनुभव किया कि जो व्यक्ति अपना घर छोड़ते हैं केवल वही सच्चा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे लोगों के लिए उन्होंने संघ नामक संगठन बनाया जहाँ घर का त्याग करने वाले लोग एक साथ रह सकें। भिक्षुकों और भिक्षुणीयों के स्थायी निवास के रूप में विहार भी बनवाए गए। यह विहार विद्यालय या छात्रावास की तरह थे। अपनी इतिहास की पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ 62-63 का अध्ययन कीजिए और उसके आधार पर एवं अपनी समझ का प्रयोग करके निम्न तालिका पूर्ण कीजिए:

संघ एवं विहार

नियम/व्यवहार	संघ और विहार में जिनका पालन किया जाता था	आपके विद्यालय/ छात्रावास में जिनका पालन किया जाता है
उस पुस्तक का नाम जिसमें यह नियम लिखे हुए हैं		
क्या यहाँ सह-शिक्षा लागू है अथवा नहीं		
संघ/ विद्यालय में प्रवेश के नियम		
संघ/ विद्यालय में जीवन		
संघ/ विद्यालय में रहने/ पढ़ने वालों के लिए प्रयुक्त शब्द		
संघ/ विद्यालय में उत्पन्न झगड़ों को सुलझाने का तरीका		

संघ/ विद्यालय में शामिल होने वाले लोगों की सामाजिक पृष्ठभूमि		
संघ/विद्यालय में रहने/ पढ़ने वालों का साहित्यिक योगदान		
विहार/ विद्यालय के लिए प्रयोग होने वाले आश्रय/ भवन का वर्णन		
भिक्षुओं/ विद्यार्थियों के द्वारा प्रयोग किए जाने वाले आश्रय का नाम		
विहार/विद्यालय बनवाने के लिए भूमि किसने दी		
भिक्षओं/ विद्यार्थियों को भोजन कौन प्रदान करता था/है		
स्थानीय लोग भिक्षुओं/ विद्यार्थियों की सहायता किस प्रकार करते थे/ हैं		
बदले में भिक्षुक/ विद्यार्थी समाज को क्या देते थे/हैं		

प्रश्न 4: कल्पना कीजिए कि आप कार्ले (Karle) विहार में रहने वाले एक बौद्ध भिक्षु हैं।यह विहार पहाड़ी को काटकर बनाई गई एक गुफा है। यह वर्तमान महाराष्ट्र में स्थित है। इस विहार में एक बौद्ध भिक्षु के रूप में अपने जीवन का वर्णन करते हुए एक अनुच्छेद लिखिए। वर्णन कीजिए कि आप वहाँ कैसे रहते थे और किस प्रकार ध्यान करते थे ?

प्रश्न 5: सदियों से, भारत द्वारा की जाने वाली सत्य की बौद्धिक खोज दर्शन के छह सिद्धांतों के रूप में प्रकट होती है। अपनी इतिहास की पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ **59** का अध्ययन कीजिए और इन्टरनेट की भी सहायता लेते हुए निम्न तालिका पूर्ण कीजिए :

भारतीय दर्शन के छह सिद्धांत

दर्शन के सिद्धांत का नाम	इस सिद्धांत के स्थापक	इस सिद्धांत का संक्षिप्त विवरण
वैशेषिक		
	गौतम	
		योग का मार्ग यम और नियम के नैतिक सिद्धांतों पर आधारित है और इसके द्वारा मोक्ष प्राप्त होता है। योग शारीरिक और साँस के व्यायामों के लिए भी जाना जाता है
पूर्वमीमांसा		
	व्यास	

नए शब्द:

मोक्ष: जीवन-मरण के चक्र से अंतिम मुक्ति

कार्यपत्रक: 16

विद्यार्थी का नाम - _____

अशोक, एक ऐसा सम्राट जिसने युद्ध छोड़ दिया

अधिगम सम्प्राप्ति

: छात्र अशोक के अभिलेखों से संबंधित स्थानों को जान सकेंगे और मानचित्र पर उन्हें दर्शा सकेंगे।

नीचे तस्वीर में दी गई मूर्ति पर ध्यान दें। क्या आप उन जगहों/स्थानों को याद कर सकते हैं जहाँ आपने यह तस्वीर पहले देखी है?

मूर्ति पर अंकित चक्र को देखें। इसका क्या मतलब है? आप इस चक्र को कहाँ देख सकते हैं?

_____

_____

_____

इस मूर्ति में आपको सबसे ज्यादा क्या आकर्षक क्या लगा और क्यों?

_____

_____

_____

चित्र-1

चित्र का संबंध किस राजा से है ? वे किस वंश के थे? आइए आगे पढ़ते हैं और जानते हैं।

_____

जब एक ही परिवार के सदस्य एक के बाद एक शासक बनते हैं, तो परिवार को अक्सर राजवंश कहा जाता है। मौर्य राजवंश के तीन महत्वपूर्ण शासक थे चंद्रगुप्त, उनके पुत्र बिंदु सार और बिंदु सार के पुत्र अशोक। अशोक इतिहास के ज्ञात महानतम शासकों में से एक था। क्या आप जानते हैं अशोक एक अद्वितीय शासक थे। उन्होंने अपनी प्रजा से बात करने के लिए विभिन्न स्तंभों और चट्टानों की सतहों पर विभिन्न निर्देश खुदवाए। उनके शिलालेख पूरे देश में और देश के बाहर यहाँ तक कि अफगानिस्तान में भी पाए गए हैं।

आपको क्या लगता है, सम्राट अशोक के शिलालेख भारत के बाहर क्यों पाए गए? इसका क्या महत्व है?

_____

_____

_____

अशोक ने जिस क्षेत्र पर शासन किया उसे राज्य नहीं, बल्कि साम्राज्य कहा जाता था। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि क्यों? उत्तर जानने के लिए नीचे दिए गए मान चित्र को देखें।

चित्र-2

कर एवं नजराने के बीच अंतर कर स्थाई रूप से एक निश्चित समय पर लगातार इकट्ठा किए जाते हैं जबकि नजराना एक निश्चित समय पर नहीं बल्कि जब संभव हो तब इकट्ठा किए जाते हैं। लोग कई तरह की चीजें नजराने के तौर पर स्वेच्छा से देते हैं।

प्रश्न 1: उन स्थानों के नाम लिखिए जहाँ अशोक के शिलालेख भारत के बाहर भी पाए गए हैं। यह किस देश में स्थित हैं?

प्रश्न 2: अशोक बौद्ध धर्म से प्रभावित थे। दो ऐसे स्थानों के नाम लिखे जिनका संबंध बौद्ध धर्म से है और जहाँ उनके अभिलेख मिले हैं।

प्रश्न 1: उन स्थानों के नाम लिखिए जहाँ अशोक के शिलालेख भारत के बाहर भी पाए गए हैं। यह किस देश में स्थित हैं?

प्रश्न 2: अशोक बौद्ध धर्म से प्रभावित थे। दो ऐसे स्थानों के नाम लिखे जिनका संबंध बौद्ध धर्म से है और जहां उनके अभिलेख मिले हैं।

प्रश्न 3: मानचित्र में उस स्थान को खोजें जहां अशोक ने वह प्रसिद्ध युद्ध लड़ा जिसके बाद उन्होंने युद्ध सदा के लिए छोड़ दिया।

प्रश्न 4: कल्पना करें आप दक्षिण भारत के एक व्यापारी हैं जो अशोक के साम्राज्य की यात्रा करना चाहते हैं। आप सम्राट अशोक के लिए अपने क्षेत्र की कौन सी प्रसिद्ध चीजें नजराने के रूप में ले जाना चाहेंगे?

कार्यपत्रक: 17

विद्यार्थी का नाम - _____

अशोक, एक ऐसा सम्राट जिसने युद्ध छोड़ दिया

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी मौर्य साम्राज्य की महत्वपूर्ण विशेषताओं और योगदानों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

मौर्य साम्राज्य के अधीन प्रशासन

मौर्य साम्राज्य एक विशाल साम्राज्य था। साम्राज्य के अलग-अलग हिस्सों पर अलग प्रकार से शासन किया गया।

केंद्रीय प्रशासन

राजा द्वारा सीधा नियंत्रण

राजा द्वारा नियुक्त अधिकारी कर इकट्ठा करते थे।

राजा राज परिवार के विशिष्ट लोगों व मंत्रियों द्वारा शासन करता था।

प्रशासनिक केंद्रों के बीच के विस्तृत क्षेत्र

मौर्य शासक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण नदियों व सड़कों पर नियंत्रण रखते थे।

संसाधनों को नजराने के रूप में इकट्ठा किया जाता था

महत्त्वपूर्ण राज्य जिन्हें क्षेत्रीय राजधानियों द्वारा नियंत्रित किया जाता था जैसे कि तक्षशिला और पाटलिपुत्र

राजकुमारों को इन राज्यों का राज्यपाल बनाकर भेजा जाता था।

स्थानीय नियमों व कायदे कानूनों का पालन होता था

वन क्षेत्र

जिन्हे राजा द्वारा अनियंत्रित छोड़ा गया था।

उनसे नजराने के रूप में शहद, लकड़ी, मोम इत्यादि की अपेक्षा की जाती थी।

मौर्यों की राजधानी क्या थी ? यह वर्तमान समय के किस राज्य में स्थित था ?भारत के मान चित्र पर मौर्य साम्राज्य की राजधानी और वर्तमान में भारत की राजधानी को चित्रित करें।

आप को क्या लगता है कि राजा साम्राज्य की महत्वपूर्ण सड़कों और नदियों को क्यों नियंत्रित करते थे?

आज के समय में यदि सरकार सड़कों को नियंत्रित ना करे, तो क्या परिणाम होंगे?

प्रान्तों में प्रशासन की क्या व्यवस्था थी? भारत के मानचित्र पर किन्हीं दो प्रान्तीय राजधानियों के नाम लिखिए और उन्हें दर्शाएं।

पाटलिपुत्र, राजधानी शहर

पाटलिपुत्र की राजधानी का वर्णन मेगस्थनीज द्वारा किया गया है। वह पश्चिम एशिया के यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर के राजदूत थे। उन्हें चंद्रगुप्त के दरबार में भेजा गया था। आइए पढ़ते हैं उनके द्वारा शहर के बारे में लिखा हुआ एक दिलचस्प वाकया।

राजधानी में सम्राट

मेगस्थनीज, चन्द्रगुप्त के दरबार में पश्चिम-एशिया के यूनानी राजा सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था। मेगस्थनीज ने जो कुछ देखा उसका विवरण दिया।

यहाँ हम उसके विवरण का एक अंश दे रहे हैं :

सम्राट का, जनता के सामने आने के अवसरों पर शोभायात्रा के रूप में जश्न मनाया जाता है। उन्हें एक सोने की पालकी में ले जाया जाता है। उनके अंगरक्षक सोने और चाँदी से अलंकृत हाथियों पर सवार रहते हैं। कुछ अंगरक्षक पेड़ों को लेकर चलते हैं। इन पेड़ों पर प्रशिक्षित तोतों का एक झुण्ड रहता है जो सम्राट के सिर के चारों तरफ चक्कर लगाता रहता है। राजा सामान्यत: हथियारबंद महिलाओं से घिरे होते हैं। वे हमेशा इस बात से डरे रहते हैं कि कहीं कोई उनकी हत्या करने की कोशिश न करे। उनके खाना खाने के पहले खास नौकर उस खाने को चखते हैं। वे लगातार दो रात एक ही कमरे में नहीं सोते थे।

और पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) के बारे में :

यह एक विशाल और खूबसूरत नगर है। यह एक विशाल प्राचीर से घिरा है जिसमें 570 बुर्ज और 64 द्वार हैं। दो और तीन मंजिल वाले घर, लकड़ी और कच्ची ईंटों से बने हैं। राजा का महल भी काठ से बना है जिसे पत्थर की नक्काशी से अलंकृत किया गया है। यह चारों तरफ से उद्यानों और चिड़ियों के लिए बने बसेरों से घिरा है।

राजा द्वारा खाना खाने के पहले खास नौकर उस खाने को क्यों चखते थे?

पाटलिपुत्र मोहनजोदड़ो से किस तरह भिन्न था? (संकेत: अध्याय 3 देखो)

प्रश्न 1: आपको क्या लगता है कि राजा दो रातों के लिए एक ही शयन कक्ष में क्यों नहीं सोता है?

प्रश्न 2: क्या आपको इस विवरण में कुछ असामान्य लगा? वह क्या था?

प्रश्न 3: मेगस्थनीज लिखता है कि राजा को डर था कि कहीं कोई उसे मार न दे। उपरोक्त विवरण से दो प्रमाण दीजिए जो इस बात को सिद्ध करते हैं।

कार्यपत्रक: 18

विद्यार्थी का नाम - _____

अशोक, एक ऐसा सम्राट जिसने युद्ध छोड़ दिया

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी भारत के रेखा मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थलों, स्थानों का पता लगाकर उन्हें दर्शाता है।

विभिन्न साम्राज्यों की महत्वपूर्ण विशेषताओं जैसे अशोक के शिला लेखों और योगदानों को सूचीबद्ध करता है।

अशोक का कलिंग युद्ध और उसका धम्म

कलिंग तटीय उड़ीसा का प्राचीन नाम है। अशोक ने कलिंग को जीतने के लिए युद्ध लड़ा। इस युद्ध में हुए कत्लेआम, हिंसा और रक्तपात से वह इतना दुखी हुआ कि उसने सदा के लिए युद्ध नहीं करने का फैसला किया। क्या आप जानते हैं कि वह दुनिया के इतिहास में एकमात्र ऐसे शासक हैं जिन्होंने युद्ध जीतने के बाद सदा के लिए युद्ध का त्याग कर दिया था?

हम जानते हैं कि वह पहले शासक थे जिन्होंने अपने शिला लेखों के माध्यम से अपने संदेशों को लोगों तक पहुँचाया। अशोक के अधिकांश अभिलेख ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं। हमने देखा है कि उन के शिला लेख पूरे भारत में और यहाँ तक कि देश के बाहर भी पाए गए थे।

अपने एक शिला लेख में उन्होंने कलिंग युद्ध के बाद के अपने अनुभव का वर्णन किया है। आइए उनके शिला लेख को ध्यान से देखें और पता करें कि वह अपनी प्रजा को क्या संदेश देना चाहते थे?

कलिंग युद्ध का वर्णन करता हुआ अशोक का अभिलेख

चित्र-1

स्रोत: एनसीईआरटी

- अशोक ने कलिंग पर कब विजय प्राप्त की थी?

- युद्ध के बाद वह पश्चाताप से क्यों भर गया?

- वह अपनी आने वाली पीढ़ियों को क्या संदेश दे रहे हैं?

- यदि युद्ध और बल से नहीं, तो राजा लोगों को कैसे जीत सकता है?

अशोक की धम्म नीति

हमने उपरोक्त शिला लेख में देखा है कि अशोक ने युद्ध की नीति को त्याग दिया और धम्म की नीति अपनाई। वह बुद्ध की शिक्षाओं से भी प्रेरित थे। वह अपनी प्रजा को अपने बच्चों की तरह मानते थे और उन्हें उसी तरह निर्देश देते थे जैसे एक पिता अपने बच्चों को निर्देश देता है। इसके लिए उन्होंने अपने संदेश चट्टानों और खंभों पर खुदवाए। उन्होंने लोगों को इन निर्देशों को पढ़ने के लिए धम्म महामत्र नामक विशेष अधिकारी नियुक्त किए जो धम्म की शिक्षा देने के लिए जगह-जगह गए। उनके दूत अन्य दूर दराज देशों जैसे सीरिया, मिस्र, ग्रीस और श्रीलंका में धम्म फैलाने के लिए गए।

अशोक ने जन्म, विवाह और अन्य अवसरों पर लोगों द्वारा किए जाने वाले कई अनुष्ठानों को बहुत उपयोगी नहीं माना। इसके बजाय, उन्होंने अपनी प्रजा को अन्य प्रथाओं का पालन करने के लिए कहा जो अधिक फलदायी होंगे जैसे कि:

दासों और नौकरों के साथ नम्र होना।

बड़ों का सम्मान करना

सभी प्राणियों के साथ दयालु व्यवहार करना।

ब्राह्मणों और भिक्षुओं दोनों को उपहार देना।

दूसरे के धर्म का सम्मान करना। दूसरे के धर्म के मुख्य विचारों को समझना और उसका सम्मान करना।

प्रश्न 1: अशोक के अभिलेख किस भाषा और लिपि में मिले हैं?

प्रश्न 2: राजा अशोक ने एक पिता की तरह अपनी प्रजा को निर्देश दिया। आपको अपने पिता या बड़ों से ज्ञान के कई शब्द मिले होंगे। आपको कौन सा सबसे महत्वपूर्ण लगता है और क्यों?

प्रश्न 3: अशोक की धम्म नीति की मुख्य विशेषताएं क्या थीं?

प्रश्न 4: क्या आपको लगता है कि अपने धर्म के अलावा दूसरे के धर्म का सम्मान करना महत्वपूर्ण है? क्यों ?

प्रश्न 5: अपने अभिभावकों या अध्यापक से बात कर अपने धर्म की किसी ऐसी सीख के विषय में लिखें जो अन्य धर्मों में भी पाई जाती है।

कार्यपत्रक: 19

विद्यार्थी का नाम - _____

महत्वपूर्ण गाँव और संपन्न शहर

अधिगम सम्प्राप्ति

शिकारियों और किसानों, शिल्पकारों और व्यापारियों, संतों और तीर्थ यात्रियों के बारे में कस्बों और गांवों में आम लोगों के जीवन और गतिविधियों में विकास से परिचित कराता है।

इस भावना का विकास करना कि इतिहास केवल राजनीतिक घटनाओं के बारे में नहीं है बल्कि समाज में होने वाली हर घटना के बारे में है।

उत्पादन में वृद्धि – लोहे के औजार और सिंचाई

लगभग 2500 वर्ष पूर्व लोहे के औजारों के बढ़ते उपयोग के प्रमाण मिलते हैं। ये कुल्हाड़ी और लोहे के हलके फाल थे। इनका उपयोग जंगलों को साफ करने और उत्पादन बढ़ाने के लिए किया जाता था। इस अवधि के दौरान निर्मित नए सिंचाई कार्य जैसे नहरें, कुएँ, तालाब और कृत्रिम झीलें। प्रत्यारोपण जैसी नई तकनीकों ने भी उत्पादन बढ़ाने में मदद की।

आपके विचार से कृषि उत्पादन में वृद्धि होने पर राजा को किस प्रकार लाभ होता है?

_____

_____

_____

सिंचाई के कुछ अन्य कृत्रिम साधनों के नाम बताइए जिनका उपयोग आज के किसान करते हैं।

_____

_____

_____

गांवों में जीवन

गांवों में रहने वाले विभिन्न प्रकार के लोग

जमींदार साधारण जोतदार। भूमिहीन मजदूर और दास

(वेल्लालर/ग्राम भोजक) उझावर/गृहपतिदास कर्मकार

अधिकांश गाँवों में लोहार, कुम्हार, बढ़ई और बुनकर जैसे कुछ शिल्पकार भी थे। धनी लोग जमींदार, न्यायाधीश और पुलिसकर्मी के रूप में भी कार्य करते थे। उन्होंने श्रमिकों को काम पर रखा और जमीन पर खेती करने के लिए उनके पास गुलाम थे।

गांवों में रहने वाले विभिन्न प्रकार के लोग

- जमींदार, साधारण जोतदार
- भूमिहीन मजदूर और दास
- गृहपति/दास कर्मकार

शहरों में जीवन

सामान्य लोगों द्वारा रचित और बौद्ध भिक्षुओं द्वारा प्रस्तुत जातक कथाएँ हमें कस्बों और गाँवों के लोगों के जीवन और व्यवसाय की एक झलक देती हैं। इसके बारे में जानने के लिए कुछ अन्य स्रोत मूर्तिकारों द्वारा रेलिंग, खंभों या लोगों द्वारा देखी जाने वाली इमारतों के प्रवेश द्वारों पर उकेरे गए दृश्य हैं। शुरुआती शहरों के बारे में पता लगाने का एक और तरीका नाविकों और उन यात्रियों के यात्रा वृतांत हैं जो बाहर से आए थे। एक अज्ञात यूनानी नाविक ने उन सभी बंदरगाहों का वर्णन किया है जिनका उसने दौरा किया था। उन्होंने भरूच के बारे में वर्णन किया है जहाँ शराब, ताँबा, सीसा, मूंगा, पुखराज, कपड़ा, सोने और चाँदी के सिक्के आयात किए जाते हैं। शहर से निर्यात में हिमालय के पौधे, हाथी दाँत, सुलेमानी, सूती रेशम और इत्र शामिल थे। व्यापारियों ने राजा के लिए विशेष उपहार खरीदे। चाँदी के पात्र, उत्तमदाख, उत्तममधु और उत्तमवस्त्र।

प्रश्न 1: भारत के मानचित्र पर भरूच का पता लगाएँ। यह भारत के वर्तमान समय में किस राज्य में स्थित है?

प्रश्न 2: भरूच से आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएँ क्या थीं? किन्हीं दो वस्तुओं के नाम लिखिए जिनका भारत आज अन्य देशों से आयात करता है।

प्रश्न 3: नीचे दी गई सांची की एक मूर्ति का चित्र देखें। मूर्ति कला पर दर्शाए गए दृश्य के बारे में अपने शब्दों में एक कहानी लिखें।

कार्यपत्रक: 20

विद्यार्थी का नाम - _____

महत्वपूर्ण गाँव और संपन्न शहर

अधिगम सम्प्राप्ति

शिकारियों और किसानों, शिल्पकारों और व्यापारियों, संतों और तीर्थ यात्रियों के बारे में कस्बों और गांवों में आम लोगों के जीवन और गतिविधियों में विकास से परिचित होना।

इस भावना का विकास करना कि इतिहास केवल राजनीतिक घटनाओं के बारे में नहीं है बल्कि समाज में होने वाली हर चीज के बारे में है।

भारत के मानचित्र पर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों को चिन्हित करना।

इस काल के महत्त्वपूर्ण शहर

उस काल के दौरान आज की तरह ही, एक ही शहर कई कारणों से महत्वपूर्ण था।

मथुरा के विषय में : यह 2500 से अधिक वर्षों से महत्वपूर्ण शहर रहा है। यह यात्रा और व्यापार के दो प्रमुख मार्गों के चौराहे पर स्थित था- उत्तर से पूर्व और उत्तर से दक्षिण तक। यह एक ऐसा केंद्र भी था जहाँ अत्यंत उत्तम मूर्तियों का निर्माण किया जाता था। इस काल के दौरान मथुरा एक धार्मिक केंद्र भी था- यहाँ बौद्ध मठ थे, जैन मंदिर थे। इसके अलावा यह कृष्ण की पूजा के लिए भी एक महत्वपूर्ण केंद्र था जैसा कि आज भी है। मथुरा के शिलालेखों में विभिन्न व्यवसायों का उल्लेख है जैसे- लोहार, बुनकर, टोकरी बनाने वाले, माला बनाने वाले और इत्र बनाने वाले।

अरिकामेडु के विषय में : २२०० और १९०० साल पहले के बीच तटीय बस्ती थी जहाँ जहाज दूर-दूर से माल उतारते थे। भूमध्य सागरीय क्षेत्र से मिट्टी के बर्तन जैसे एम्फ़ोर, स्टैम्प्डरेडग्लेज़ेडपॉटरी भी मिली है जिन्हें इटली के एक शहर के नाम पर एरेंटाइन वेयर के नाम से जाना जाता है। इस महत्त्वपूर्ण साइट से रोमन लैंप, काँच के बने पदार्थ और रत्न भी मिले हैं। साक्ष्यों से पता चलता है कि यहाँ कीमती पत्थर और काँच के मोती भी बनते थे।

भारत के मानचित्र पर मथुरा और अरिकामेडु को दर्शाएँ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

प्रश्न 1: मथुरा प्रमुख रूप से एक धार्मिक केंद्र था जबकि अरिकामेडु मुख्य रूप से एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था। क्या आप सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में दो कारण दीजिए।

प्रश्न 2: क्या आप आज के किसी ऐसे शहर/कस्बे का नाम बता सकते हैं जो कई कारणों से लोकप्रिय है। इसका कारण बताइए कि यह किसके लिए महत्वपूर्ण या लोकप्रिय है?

प्रश्न 3: इस काल के कुछ ऐसे महत्वपूर्ण व्यवसायों के नाम बताइए जिनमें शहरों और कस्बों के लोग लगे हुए थे।

कार्यपत्रक: 21

विद्यार्थी का नाम - _____

महत्वपूर्ण गाँव और संपन्न शहर

अधिगम सम्प्राप्ति

1. शिकारियों और किसानों, शिल्पकारों और व्यापारियों, संतों और तीर्थ यात्रियों के बारे में, कस्बों और गाँवों में आम लोगों के जीवन और गतिविधियों से परिचित होना।
2. इस भावना का विकास करना कि इतिहास केवल राजनीतिक घटनाओं के बारे में नहीं है बल्कि समाज में होने वाली हर चीज के बारे में है।
3. भारत के मानचित्र पर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों को चिन्हित करना।

इस काल के दौरान सिक्के और शिल्प नीचे दिए गए सिक्कों के चित्रों को ध्यान से देखिए। एक सिक्का आज प्रचलन मे है और दूसरा CE की प्रारंभिक शताब्दियों में प्रचलन में थे। सिक्कों पर चित्रित सामग्री, आकार, और चित्रों का अवलोकन करें। आप दोनों सिक्कों में क्या अंतर देखते हैं?

चित्र-1

प्राचीनतम सिक्के जो लगभग ५०० वर्ष पूर्व प्रचलन में थे, आहत सिक्के कहलाते हैं।

क्या आपको लगता है कि बिक्री, खरीद, विनिमय आदि प्राचीन काल से ही सिक्कों के माध्यम से किया जाता था ? जब सिक्के या नोट प्रचलन में नही थे तो लोग अपने उपयोग की चीजें कैसे खरीदते या बेचते थे? अपने परिवार से जानने का प्रयास कीजिए।

शिल्प और शिल्पकार

हमारे पास विभिन्न शिल्पों के पुरातात्विक साक्ष्य भी हैं। उनमें से कुछ बच गए हैं जबकि अन्य शायद नहीं बच पाए हैं। जहाँ पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ हम उस काल के साहित्यिक ग्रंथों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इन ग्रंथों के अनुसार कपड़े का निर्माण महत्वपूर्ण था। उत्तर में वाराणसी और दक्षिण में मदुरै कपड़ा निर्माण के प्रसिद्ध केंद्र थे।

कई शिल्पकारों और व्यापारियों ने अब श्रेणियों के नाम से जाने जाने वाले संघों का गठन किया। श्रेणियों के माध्यम से उन्होंने कच्चे माल की खरीद फरोख्त की और तैयार उत्पाद का वितरण किया। उन्होंने व्यापार का आयोजन किया और धन जमा करने के लिए बैंकों के रूप में कार्य किया।

प्रश्न 1: श्रेणियाँ क्या थीं? ये किस प्रकार के कार्य करती थीं?

प्रश्न 2: वे कौन से विभिन्न स्रोत हैं जिन के माध्यम से हम उस काल के विभिन्न शिल्पों के बारे में जान पाते हैं?

प्रश्न 3: आपको क्या लगता है कि श्रेणी का सदस्य होने से व्यापारियों को क्या फायदा या नुकसान होता होगा?

आहत सिक्के
प्राचीनतम सिक्के जो लगभग 500 वर्ष पूर्व प्रचलन में थे ये ज्यादातर आयताकार और कभी कभी गोल या चौकोर भी होते थे।

कार्यपत्रक: 22

विद्यार्थी का नाम - _____

व्यापारी, राजा और तीर्थ यात्री

अधिगम सम्प्राप्ति

प्राचीन काल के दौरान मूल विचारों, विभिन्न धर्मों के मूल्यों और विचार प्रणाली का विश्लेषण करता है।

इस काल में भक्ति का विचार बहुत लोकप्रिय हुआ। शिव, विष्णु और देवी दुर्गा सहित कुछ देवी देवताओं की पूजा लोकप्रिय हो गई। भक्ति आमतौर पर अपने इष्ट देव के प्रति समर्पण है। कई जातियों और वर्गों के लोग भक्ति मार्ग के अनुयायी बन गए। भक्ति परंपरा में विस्तृत बलि आदि के बजाय भगवान या देवी की भक्ति और पूजा पर जोर दिया गया। एक भक्त की कविता पढ़ें जो हमें भक्ति के मूल विचार को जानने में मदद करेगी। ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

एक भक्त द्वारा लिखी गई एक कविता

अधिकांश भक्ति साहित्य हमें यही बताते हैं कि धन, ऐश्वर्य या ऊँचे पद के जरिए कभी ईश्वर से आत्मीयता नहीं बन सकती। करीब 1400 साल पहले शिवभक्त अप्पार द्वारा तमिल में लिखी एक कविता का यह एक अंश है। अप्पार एक वेल्लाल (अध्याय 8) था।

'नष्ट होते अंगों वाला कुष्ठ रोगी
ब्राह्मणों की नजर में निचली जाति का व्यक्ति।
कूड़ा करकट बटोर कर अपनी जीविका चलाने वाला इंसान,
अगर ये लोग भी गंगा को अपनी जटाओं में छिपा लेने वाले
शिव के दास बन जाएँ, तो मैं उनकी आराधना करूँगा।
क्योंकि वे मेरे ईश्वर समान हैं।'

कवि सामाजिक प्रतिष्ठा और भक्ति में किसको ज्यादा महत्व देते हैं?

प्रश्न 1: अप्पार एक वेल्लाल था। उसका पेशा क्या था और वह किस की पूजा करता था?

_____

_____

_____

प्रश्न 2: आपके विचार से भक्त के अनुसार देवता के साथ घनिष्ठ संबंध क्या सुनिश्चित करताहै?

प्रश्न 3: भक्ति के मार्ग पर कौन चल सकता है?

प्रश्न 4: अप्पार किस तरह के लोगों की पूजा करना पसंद करता है? वह इस प्रकार से पूजा क्यों करना चाहता है ?

कार्यपत्रक: 23

विद्यार्थी का नाम - _____

व्यापारी, राजा और तीर्थ यात्री

अधिगम सम्प्राप्ति

अधिगम सम्प्राप्ति :छात्र धर्म, कला और वास्तु कला के क्षेत्र में भारत के अन्य देशों से संपर्क में आने पर होने वाले प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।

बौद्ध धर्म का प्रसार

नीचे दी गई तस्वीर को देखिए। यह बौद्ध धर्म के पूर्व रूप जिसे हीनयान कहा जाता था से सम्बंधित है। हीनयान बौद्ध धर्म में, बुद्ध की उपस्थिति को कुछ संकेतों का उपयोग कर दिखाया जाता था। क्या आप नीचे दिए गए चित्र में उन चिन्हों को पहचान सकते हैं ? प्रत्येक संकेत के साथ एक अर्थ जुड़ा है। वह क्या था ?

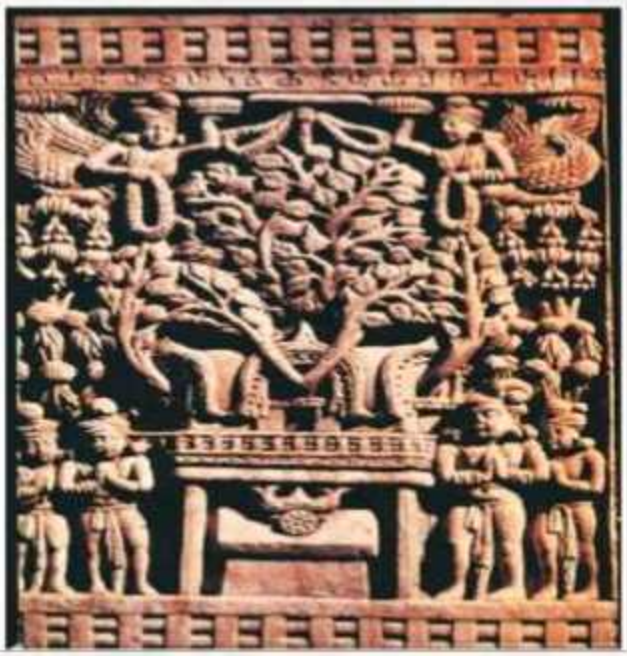

चित्र-1

लगभग 1900 साल पहले बौद्ध धर्म का एक नया रूप विकसित हुआ जिसे महायान बौद्ध धर्म के नाम से जाना जाता है। इसकी दो विशेषताएं थीं -

1. चिन्हों के स्थान पर अब बुद्ध की मूर्तियाँ बनाई गईं। ये तक्षशिला में बनती थीं।
2. बोधिसत्व अब, अपने स्वयं के उद्धार के लिए काम करने के बजाय, दूसरों को सिखाने और उनकी मदद करने के लिए दुनिया में बने रहे। बोधि सत्व की पूजा लोकप्रिय हो गई और मध्य एशिया, चीन और बाद में कोरिया और जापान में फैल गई। महायान पश्चिमी और दक्षिणी भारत में भी फैल गया। राजाओं, रानियों, व्यापारियों और किसानों के आदेश पर भिक्षुओं के रहने के लिए दर्जनों गुफाएँ बनाई गईं। व्यापारी अपनी यात्रा के दौरान गुफा में बने मठों में रुकते थे I यह दक्षिण पूर्व की ओर श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड और इंडोनेशिया सहित दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य हिस्सों में भी फैल गया।

नीचे दिए गए चित्रों में बुद्ध की मूर्तियों को ध्यान से देखें। मूर्ति कला 1 मथुरा कला विद्यालय से है जबकि मूर्तिकला 2 गांधार कला विद्यालय से है। इन दोनों को देखें और बताएँ कि आप दोनों चित्रों में पोशाक, बालों की शैली, मुद्रा आदि के संदर्भ में क्या देखते हैं। क्या आपको लगता है कि इनमें से कोई भी विदेशी तत्वों से प्रभावित है? यदि हाँ, तो कृपया अपने शब्दों में इसका वर्णन करें।

चित्र-2

A cave at Karle, Maharashtra

चित्र-3

प्रश्न 1: पश्चिमी भारत में बौद्ध धर्म के प्रसार के दौरान बनी गुफाओं में से एक का चित्र देखें। इस चित्र में आप वास्तु कला की कौन सी विशेषताओं को देख पा रहे हैं?

प्रश्न 2: इन गुफाओं का उपयोग किस लिए किया जाता होगा ? कोई दो उपयोग सुझाइए।

कार्यपत्रक: 24

विद्यार्थी का नाम - _____

व्यापारी, राजा और तीर्थ यात्री

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी साहित्यिक कार्यों में उल्लिखित मुद्दों, घटनाओं, व्यक्तित्वों का वर्णन कर सकेंगे।

काल के इतिहास के बारे में जानने के लिए स्रोत- साहित्यिक कृतियाँ और उस समय के यात्रा वृतांत।

इस काल के बारे में जानने के लिए महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक उस समय की साहित्यिक कृतियाँ हैं। ये भारत आने वाले यात्रियों द्वारा लिखे गए यात्रा वृतांत हो सकते है। या दरबारी कवियों द्वारा लिखी गई रचनाएँ जैसे बाणभट्ट द्वारा लिखित हर्षचरित्र और गुप्त शासक चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान कवि कालिदास द्वारा लिखित अभिज्ञान शकुंतलम। आपको जानकर हैरानी होगी कि गुप्त शासक चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान चीनी तीर्थयात्री फाह्यान ने पैदल भारत की यात्रा की थी।

वह उन लोगों की दुर्दशा के बारे में लिखता है जिन्हें उच्च और पराक्रमी लोग अछूत मानते थे।

वह उनके बारे में लिखता है....."

"उनके शहर के बाहरी इलाके में रहने की उम्मीद की जाती है। यदि ऐसा कोई व्यक्ति किसी कस्बे या बाज़ार में प्रवेश करता है, तो वह खुद को अलग रखने के लिए लकड़ी के एक टुकड़े से टकराता है। उसकी आवाज़ सुनने वाले लोग इसका मतलब जानते हैं और उसे छूने या टकराने से बचते हैं।"

चित्र-1

प्रश्न 1: अछूतों से शहर के बाहरी इलाके में रहने की उम्मीद क्यों की जाती थी?

_____

_____

_____

प्रश्न 2: क्या आपको लगता है कि हमारे समाज में अब भी अस्पृश्यता प्रचलित है? क्या आप इस का एक उदाहरण दे सकते हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 3: अस्पृश्यता भेदभाव का एक रूप है - एक व्यक्ति या समूह से दूसरों की तुलना में बदतर व्यवहार करना। भेद भाव के दो अन्य उदाहरणों के बारे में सोचकर लिखिए।

_____

प्रश्न 4: फाह्यान ने हजारों साल पहले अपना वृत्तांत लिखा था। आपके अनुसार क्या कारण हो सकता है कि हमारे समाज में अस्पृश्यता जैसी कुरीतियाँ हज़ारों वर्षों बाद भी विद्यमान हैं?

कार्यपत्रक: 25

विद्यार्थी का नाम - _____

नए साम्राज्य और राज्य

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी काल के साहित्य में लिखे मुद्दों, घटनाओं, व्यक्तियों का वर्णन कर सकेंगे।

इस काल के साहित्यिक स्रोत

1400 साल पहले शासन करने वाले राजा हर्ष वर्धन की जीवनी लिखने वाले बाणभट्ट का विवरण शिला लेखों और सिक्कों के अलावा हम कुछ राजाओं के बारे में आत्म कथाओं से पता लगा सकते हैं। लगभग 1400 साल पहले शासन करने वाले हर्ष वर्धन एक ऐसे शासक थे, उनके राज कवि बाणभट्ट नेअपनी जीवनी "हर्ष चरित" संस्कृत में लिखी थी। हर्ष ने कन्नौज के राज्य पर अधिकार कर लिया और फिर बंगाल के शासक के खिलाफ सेना का नेतृत्व किया।

बाण भट्ट राजा की सेना का सजीव चित्रण करते हैं।

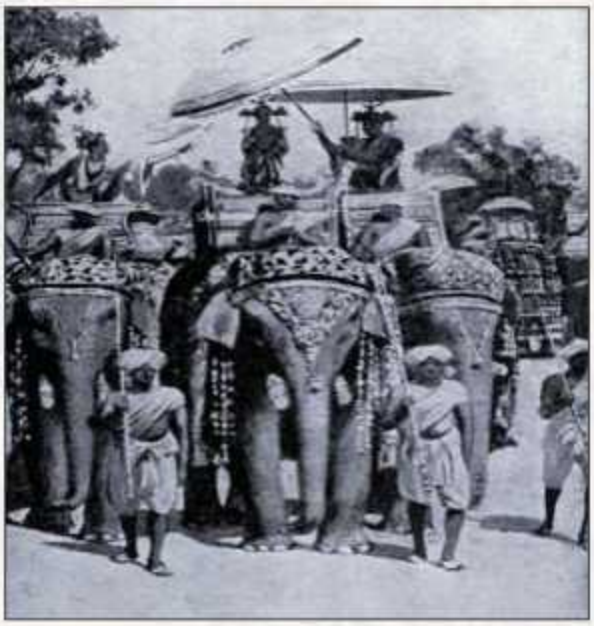

चित्र-1

राजा की सेना

राजा बड़ी ठाठ से सजी-सजाया रथ पर यात्रा करते थे। इनके अतिरिक्त, सेवकों के उपयोग में आने वाली चीजें, जैसे छाता, अंगवस्त्र (जिसमें बैठने के आसन भी शामिल थे), सुहाने पीने का सामान (चकती, तिरण, सहरगेल, सम्मिलनी, मसाले) आदि, विभिन्न प्रकार की चीजें शामिल होती थीं। ये सारी चीजें घोड़ेगाड़ियों पर या ऊँटों तथा हाथियों जैसे सामान ढोने वाले जानवरों की पीठ पर लादकर ले जायी जाती थीं। इस विशाल सेना के साथ-साथ संगीतकार नगाड़े, शिंगुर तथा तुरही बजाते हुए चलते रहते थे।

रास्ते में पड़ने वाले गाँव वालों को उनका सामान ढोना पड़ता था। वे गायों, गुड़ तथा चूल्हों का उपहार लाते थे तथा जानवरों को चारा भी देते थे। वे राजा से भी विनम्रता चाहते थे, ताकि अपनी शिकायतें या कोई अनुरोध उनके सामने रख सकें।

पर वे सेनाएँ अपने पीछे विनाश और विध्वंस की निशानी छोड़ जाती थीं। अक्सर गाँव वालों को छोटी-छोटी बातों पुरुषार्थ दिखाने से और नवयुवतियों के जोड़ियों से चुने जाने, इस अवसर भर मनोरंजन से उत्पन्न भाव खड़े होते थे। जानकार लिखते हैं : "पूरी पुलिस महल के गर्त में डूब जाती थी।"

सेना के साथ ले जाई जाने वाली चीजों की सूची बनाओ।

जानवरों को ढोने के लिए क्या-क्या लेकर आते थे?

प्रश्न 1: ऊपर दिए गए विवरण में कई वस्तुओं का उल्लेख है। उन्हें नीचे दी गई तालिका में वर्गीकृत करें।

खाने पीने की वस्तुएँ	जानवर	व्यक्ति

प्रश्न 2: "राजा का अपनी सेना के साथ यात्रा करना एक ओर वरदान था तो दूसरी ओर अभिशाप।" दिए गए गद्यांश से ऐसा एक कारण बताएं जिससे ऐसी यात्रा ग्रामीणों के लिए फायदे मंद रही हो और दूसरा जिससे यह विनाशकारी रही हो।

प्रश्न 3: आपके अनुसार "सारा संसार धूल में समा गया है"? से बाण भट्ट का क्या अर्थ है ?

प्रश्न 4: राजा की विशाल सेना में क्या क्या शामिल था? आपको क्या लगता है, राजा इतनी बड़ी सेना के साथ क्यों चलते थे ?

प्रश्न 5: जब भी ग्रामीण राजा से मिलने जाते तो नज़राना या उपहार लेकर आते थे। कल्पना कीजिए की आप राजा हैं। दूर-दूर से व्यापारी आप से मिलने आते हैं। आप अलग-अलग जगहों से नज़राने के रूप में कौन-सी चीज़ें मंगवाना चाहेंगे? विचार करें और नीचे दी गई तालिका को पूरा करें।

वस्तु का नाम	वह स्थान जहाँ से वह आएगी	आप उसे क्यों मंगवाना चाहेंगे- कारण

कार्यपत्रक: 26

विद्यार्थी का नाम - _____

इमारतें, किताबें और चित्र

अधिगम सम्प्राप्ति

संस्कृति और विज्ञान में इस काल की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ जैसे खगोल विज्ञान, चिकित्सा, गणित, धातुओं का ज्ञान आदि को समझना।

जागृति के लिए सोने का समय मतलब कहानी सुनने का समय, जो हर रोज़ उसकी प्यारी माँ सोते हुए उसे सुनाती हैं. है। उसकी माँ हर रोज़ उसे एक कहानी सुनाती हैं और साथ ही कुछ रोचक तथ्य भी बताती है। जागृति उत्सुकता से अपनी माँ से पूछती है-

जागृति :रात में सूरज कहाँ गायब हो जाता है और सुबह कहाँ से उग आता है?

माँ: क्या आपको लगता है कि सूरज घूम रहा है? क्या दिन और रात सूर्य की गति के कारण होते हैं?

जागृति: बिल्कुल माँ, हम स्पष्ट रूप से सूर्य को उगते और अस्त होते देख सकते हैं तो सूर्य तो चलता ही रहता है ना?

माँ: पहले लोग ऐसा ही सोचते थे। प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोल शास्त्री आर्य भट्ट ने आर्य भटियम नामक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने उल्लेख किया कि दिन और रात वास्तव में अपनी धुरी पर पृथ्वी की गति (घूर्णन) के कारण होते हैं। जब कि देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि सूरज रोज उग रहा है और अस्त हो रहा है।

माँ: क्या तुम जानती हो आर्य भट्ट ने कई अद्भुत काम किए जैसे ग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या। उन्होंने वृत्त की परिधिकी गणना भी की जो आज उपयोग में आने वाले सूत्र के समान सटीक है।

चित्र-1

जागृति: वाह, यह जानना बहुत रोमांचक है!

माँ: अच्छा ,बताओ जब हम एक अंक के बाद शून्य जोड़ते हैं तो क्या होता है?

जागृति: उस संख्या का मूल्य बढ़ जाता है।

जागृति : सचमुच माँ ? यह बहुत आश्चर्यजनक है। मैं ऐसा सोंचती थी कि सूर्य अपनी स्थिति बदलता रहता है।

माँ: तुम जानती हो भारतीय गणितज्ञों ने ही शून्य का आविष्कार किया था। इस प्रणाली को अरबों ने अपनाया और फिर यह समूचे यूरोप में फैल गई। वास्तव में, रोम के लोगों ने गणना की एक ऐसी प्रणाली का इस्तेमाल किया जिसमे शून्य का उपयोग नहीं होता था.

जागृति : हे भगवान ! यह तो बिलकुल अकल्पनीय है कि शून्य के बिना गणित अस्तित्व में था? मेरे देश का योगदान कितना महत्वपूर्ण है!

माँ: हाँ, तुम्हें यह जान कर खुशी होगी कि चिकित्सा में भी हमारा उल्लेखनीय कार्य है, वह भी प्राचीन काल से। चरक द्वारा लिखित चरक संहिता और सुश्रुत द्वारा लिखित सुश्रुत संहिता, प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सा और शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं के बारे में हमें बताती हैं।

जागृति: यह जानना बहुत रोमांचक है। क्या उन दिनों भी सर्जरी संभव थी? क्या उन दिनों अस्पताल भी थे?

माँ: मेरे पास अभी और भी दिलचस्प कहानियाँ हैं। परन्तु प्रिय जागृति अब सोने का समय हो गया है। हम कल चर्चा जारी रखेंगे।

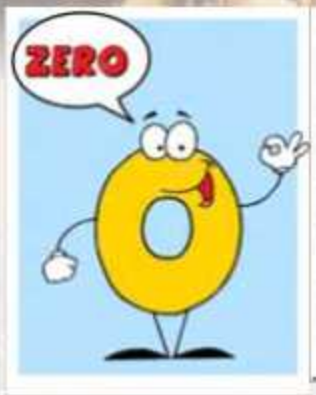

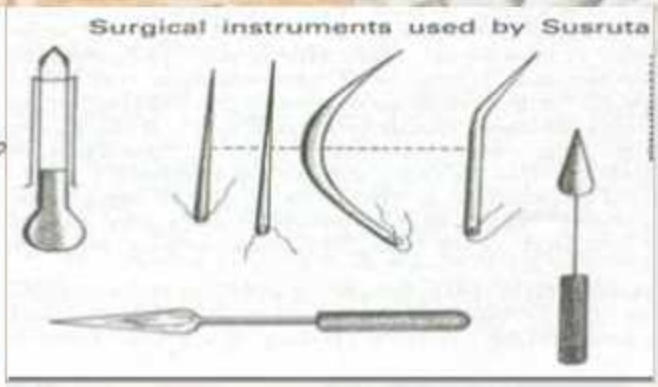

चित्र-2

प्रश्न 1: दिन और रात के कारण के बारे में जागृति पहले क्या सोचती थी?

प्रश्न 2: क्या उसका ऐसा सोचना सही था? माँ ने इसका क्या कारण बताया ?

प्रश्न 3: यदि हम शून्य के उपयोग को नहीं जानते तो क्या होता ? कोई दो बिंदु लिखिए।

कार्यपत्रक: 27

विद्यार्थी का नाम - _____

इमारतें, किताबें और चित्र

अधिगम सम्प्राप्ति

संस्कृति और विज्ञान में इस काल की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ जैसे खगोल विज्ञान, चिकित्सा, गणित, धातुओं का ज्ञान आदि को समझना।

जागृति आज बहुत उत्साहित थी क्योंकि आज उसकी कक्षा के विद्यार्थी स्कूल से वार्षिक दिल्ली दर्शन यात्रा के लिए जा रहे थे। माँ ने उसके लिए पूरी सब्जी पैक कर दी थी। उसने अपने लिए ठंडा ठंडा नींबू पानी भी बनाया था। बाहर बहुत गर्मी थी।लेकिन जागृति का उत्साह कम नहीं हुआ।

वह बस में चढ़कर अपनी पसंदीदा खिड़की वाली सीट पर बैठ गई। भव्य कुतुबमीनार दूर से दिखाई दे रही थी। बस कुछ ही समय में ऐतिहासिक स्मारक के पास पहुँच गई। जागृति ने सोचा कि मीनार कितनी भव्य दिखती है। उनकी शिक्षिका मीनल मैम उन्हें कुतुब परिसर तक ले गई।

मीनल मैम: भव्य कुतुबमीनार पर एक नज़र डालें ।इसे ध्यान से देखें। क्या आप बता सकते हैं कि इस इमारत में कौन कौन सी आकृतियाँ दिखाई देती हैं?

जागृति: मैं बताऊँ? एक वृत्त, तारा, तिरछी रेखाएँ और यहाँ तक कि वर्ग भी दिखाई देता है।

मीनल मैम: बढ़िया! क्या आप जानते हैं यह इमारत 800 साल से भी ज्यादा पुरानी है। यह लाल बलुआ पत्थर से बनी है और 72.5 मीटर ऊंची है। कुतुबमीनार के आलावा भी इस परिसर में देखने लायक कई दिलचस्प चीजें हैं।अनु तुम इन दिनों अपनी साइकिल स्कूल क्यों नहीं ला रही हो ?

चित्र-1

अनु: मैडम साइकिल मेरे घर के पिछवाड़े में खड़ी थी। हम करीब एक महीने के लिए अपने गांव गए थे। जब मैं वापस लौटी तो देखा कि भारी बारिश के कारण इसकी लोहे की चेन जंग खा चुकी थी।

मीनल : हाँ, होना ही चाहिए। जंग तब लगती है जब लोहा नमी और हवा के संपर्क में आता है। अब इस भव्य लौहस्तंभ पर एक नजर डालते हैं। यह भारतीय शिल्पकारों के कौशल का एक उल्लेखनीय उदाहरण है। यह 7.2 मीटर ऊंचा है, जो लोहे से बना है और इसका वजन 3 टन है। क्या आप अंदाजा लगा सकते हैं कि यह कितना पुराना है? इसे 1500 साल पहले बनाया गया था।

अमू: वाह! यह खुले में कितनी शान से खड़ा है फिर भी जंग का नामोनिशान भी नहीं हैं। आखिर क्या रहस्य है?

मीनल: यही इस स्तंभ की सबसे खास बात है। भारत ने अत्यधिक उन्नत प्रकार के लौह-जाली लोहा, गढ़ा लोहा और कच्चा लोहा का उत्पादन किया।

अमू: मैडम हम कब से लोहे का प्रयोग करते आए है?

मीनल : प्राचीन काल से। क्या आप जानते हैं कि हड़प्पा के लोग कुशल शिल्पकार थे और उन्हें ताम्र धातु का ज्ञान था। जब कि हड़प्पावासी कांस्य युग के हैं, उनके उत्तराधिकारी लौह युग के हैं। भारतीय वुट्ज़ स्टील यूरोप में भी लोकप्रिय था। भारतीय लोहे को सबसे अच्छा माना जाता था। आज लोहा और इस्पात उद्योग देश के सबसे महत्वपूर्ण उद्योगों में से एक है।

कुतुबमीनार और लौहस्तंभ पर अंकित शिलालेख।
चित्र-2

प्रश्न 1: अनु अपनी साइकिल से स्कूल क्यों नहीं जा पा रही थी?

प्रश्न 2: कुतुब परिसर में खड़े लौहस्तंभ के बारे में क्या उल्लेखनीय था? यह भारतीय शिल्पकारों के बारे में क्या दर्शाता है?

प्रश्न 3; प्राचीन काल में लोहे का उपयोग और किन कार्यों में किया जाता था ? यदि आपको लोहे की एक उपयोगी वस्तु बनानी होतो आप क्या बनाएँगे और क्यों?

सामाजिक और राजनीतिक जीवन

सामाजिक विज्ञान

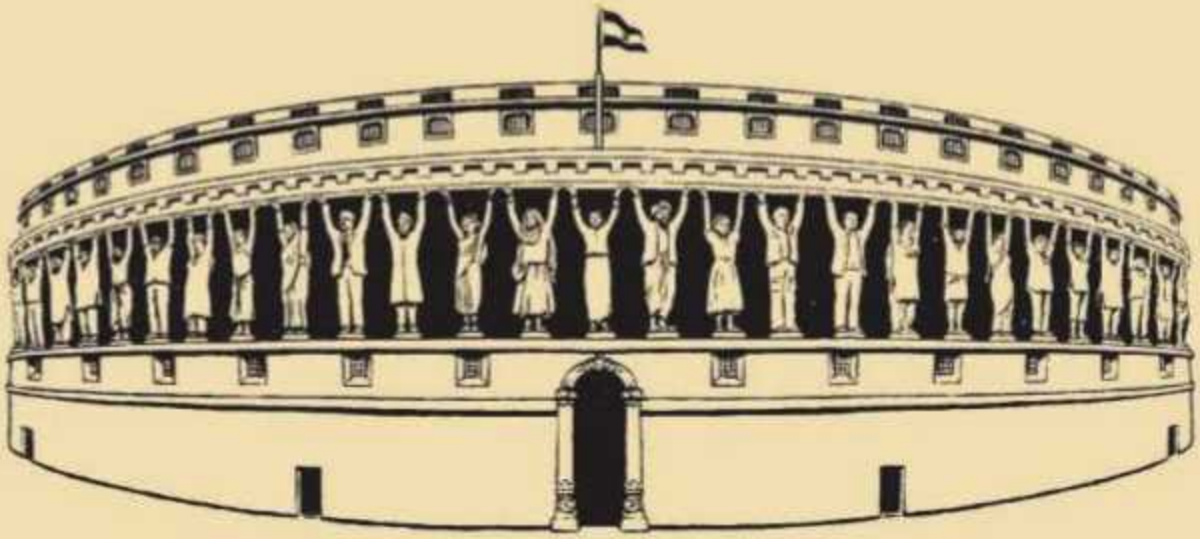

CONSTITUTION
OF
INDIA

कार्यपत्रक संख्या : 01

विद्यार्थी का नाम - _____

विविधता की समझ

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी समाज में व्याप्त विविधताओं को समझ सकेंगे।

क्रियाकलाप-1

विविधता का अर्थ है –" भिन्न होना अर्थात दूसरे से अलग"

यह विविधता धर्म, भाषा, खानपान तथा अलग सभ्यताओं को दर्शाती है। भारत में उत्तर-पूर्व राज्यों की भाषा उत्तर भारत से भिन्न तथा एक धर्म में मनाए जाने वाले त्यौहार, वेशभूषा एवं खानपान अलग अलग हो सकते हैं।

आइए इन भिन्नताओ को निम्न कथनों से समझते हैं--

कथन –(1) भारत के उत्तर पूर्वी राज्य मणिपुर में रहने वाले लोहान मिज़ो की भाषा आपकी भाषा से अलग है।

कथन.(2) दिल्ली में दक्षिण भारत से आई चिनेम्या का खान पान आप से अलग है।

कथन .(3) सोफिया अपने त्यौहार को अलग ढंग से मनाती हैं तथा उसकी वेशभूषा अलग हो सकती है।

इस प्रकार की भिन्नता विविधता को दर्शाती है। आइए इन प्रश्नों के माध्यम से इसे समझने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न -1 आपकी कक्षा में ऐसे कितने विद्यार्थी हैं, जो किसी दूसरे राज्यों से आए हैं ?

उत्तर- _____

_____

_____

प्रश्न -2. क्या आप इन राज्यों के नाम जानते हैं, जिन राज्यों से यह विद्यार्थी आए हैं ? यदि हाँ, तो किन्ही 3 राज्यों के नाम लिखिए ?

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न-3 क्या इन विद्यार्थियों की भाषा आप से अलग है? यदि हां, तो किन्ही दो भाषाओं के नाम लिखिए?

उत्तर - _____

_____

_____

प्रश्न -4 क्या इन विद्यार्थियों का पहनावा (वेशभूषा) आप से अलग है?

उत्तर- _____

_____

_____

प्रश्न 5 भारत के किन्ही चार धर्मों के नाम लिखिए।

उत्तर- _____

_____

_____

उपरोक्त प्रश्नों के बाद आप किस निष्कर्ष पर पहुँचे? आइये उसकी जाँच करें।

सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाएं।

1. एक विविधता, भाषा, धर्म, संस्कृतियों के आधार पर भी हो सकती है। ☐
2. विविधता में देश की सांस्कृतिक सुंदरता दिखाई देती है। ☐
3. भाषा या धर्म हमें जोड़ते हैं। ☐
4. मेरे दोस्त की भाषा धर्म खानपान मुझसे अलग हो सकते हैं। ☐
5. मेरे साथियों की विभिन्नता में ही सुंदरता है। ☐

Picture from: - www.shutterstock.com

प्रश्न : ऊपर दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि चित्र में दिखाए गए लोग भारत के किन किन राज्यों के हो सकते हैं? उन राज्यों की पहचान कीजिए।

उत्तर- _____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या : 02

विद्यार्थी का नाम - _____

विविधता की समझ

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी समाज में व्याप्त विविधताओं की पहचान कर पाएँगे।

क्रियाकलाप -1

भारत में विविधता की पहचान

विविधता का अर्थ है अलग-अलग धर्म, बोली, भाषा, खान-पान, रहन-सहन और अलग-अलग सभ्यताएँ आइए इन विविधताओं की पहचान निम्न तालिका को पूरा करके करें।

गतिविधि --1

क्रम संख्या	भारत में धर्म नाम	पूजा स्थल के नाम
1	हिंदू	
2	मुस्लिम	
3	सिख	
4	ईसाई	

गतिविधि –2

क्रम संख्या	भारत में भाषाएँ	राज्य का नाम
1	मैथिली	
2	तेलुगू	
3	डोंगरी	
4	असमी	

गतिविधि –3

क्रम संख्या	भारत में खानपान	राज्य का नाम
1		गुजरात
2		पंजाब
3		सिक्किम
4		केरल
5		पश्चिम बंगाल

उपरोक्त गतिविधियों के माध्यम से हम किस निष्कर्ष पर पहुंचे? आइए इसकी जाँच करें-

प्रश्न -1. दक्षिण भारत की किन्ही दो भाषाओं के नाम लिखिए।

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -2. पंजाब राज्य के प्रसिद्ध व्यंजन (खानपान) का नाम लिखिए।

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -3 गुजरात राज्य की राजधानी का नाम क्या है?

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -4. ईसाई धर्म का प्रमुख त्यौहार कौन सा है?

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -5. भारत के दो प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों के नाम लिखिए।

उत्तर. _____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या : 03

विद्यार्थी का नाम - _____

विविधता एवं भेदभाव

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी समाज में विविधताओं के महत्व को समझ सकेंगे।

क्रियाकलाप -1 .

विविधता की सुंदरता

विविधता एक और अलग (भिन्न) होना दर्शाती है। यह भिन्नता दूसरी ओर इसकी सुंदरता को भी दर्शाती है। कल्पना कीजिए आप दो बगीचों में जाते हैं। एक बगीचे में केवल एक ही रंग व एक ही प्रकार के फूल हैं, वहीं दूसरे बगीचे में रंग बिरंगें, अलग-अलग किस्मों के फूल है। तो बताइए आपको कौन सा बगीचा अधिक सुंदर लगेगा ?

आइए भारत में इस विविधता की सुंदरता की पहचान निम्न कथनों के माध्यम से करते हैं-

कथन -1 .मीराबाई चानू ने टोक्यो ओलंपिक में सिल्वर मेडल जीता तो पूरे भारत में इसकी खुशियां मनाई गई।

कथन -2. भारतीय महिला हॉकी टीम में अलग-अलग राज्यों की लड़कियों ने कमाल कर दिया।

कथन-3. मेरी कक्षा में अलग-अलग राज्यों की भाषा के विद्यार्थी पढ़ते हैं और वह सभी मेरे दोस्त हैं।

कथन-4. मुझे अलग अलग राज्यों में घूमना पसंद है।

उपरोक्त कथनों के माध्यम से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कीजिए -:

प्रश्न -1. मीराबाई चानू का संबंध भारत के किस राज्य से है?

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -2. मीराबाई चानू के ओलंपिक में मेडल जीतने पर सभी को खुशी क्यों हुई?

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -3. आपका पसंदीदा व्यंजन कौन सा है ? क्या आपको पता है वह किस राज्य का व्यंजन है ? यदि हां तो, उसका नाम लिखिए।

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -4. क्या आपको रोज-रोज एक जैसा खाना पसंद है? यदि नहीं तो क्यों नहीं?

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -5. जब आप किसी को दूसरी भाषा में बात करते देखते हैं तो आपको कैसा लगता है?

उत्तर. _____

_____

_____

Picture from: - www.iStock.com

ऊपर दिए गए चित्र को देखकर बताइए, चित्र में दिए गए नृत्य भारत के किन-किन राज्यों के है?

उत्तर. _____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या : 04

विद्यार्थी का नाम - _____

विविधता एवं भेदभाव

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी समाज में व्याप्त भेदभाव को समझ सकेंगे।

क्रियाकलाप -1.

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि जाति, धर्म, भाषा, रंग रूप के आधार पर भेदभाव हो रहा है। यह भेदभाव पूर्ण व्यवहार व्यक्ति के प्रति पूर्वाग्रहों के कारण भी होता है। जब हम किसी के बारे में कोई राय अपने दिमाग में बैठा लेते हैं तो वह पूर्वाग्रह का रूप ले लेती है। आइए जाँचें कि हम पूर्वाग्रह से ग्रस्त तो नहीं है?

उचित कथन पर सही (✓) का निशान लगाएँ।

कथन -1. अंग्रेजी सबसे अच्छी भाषा है। ☐

कथन -2.अंग्रेजी बोलने वाले ज्यादा बुद्धिमान होते हैं। ☐

कथन -3.लड़के रोते नहीं है। ☐

कथन -4.लड़कों को खाना नहीं बनाना चाहिए। ☐

कथन -5.वह मांसाहारी है। वह मेरी दोस्त नहीं हो सकती। ☐

कथन -6.लड़कियों को क्रिकेट नहीं खेलना चाहिए। ☐

क्रियाकलाप -2

जब हम पूर्वाग्रहों से ग्रसित होते हैं तो हम भेदभाव करना आरंभ कर देते हैं। यह भेदभाव जाति, धर्म, भाषा व क्षेत्र के आधार पर होता है। आपने अपनी पाठ्य पुस्तक में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर जी के विषय में पढ़ा होगा। कैसे उनको जाति विशेष का होने के कारण भेदभाव व अस्पृश्यता को सहन करना पड़ा। उन्हें बहुत सी परेशानियां केवल जातिवाद के कारण उठानी पड़ी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न -1. पूर्वाग्रहों से हम क्या समझते हैं?

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -2 पूर्वाग्रह से ग्रसित होने पर हम किस प्रकार का व्यवहार करने लगते हैं ?

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -3 बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर को किस कारण भेदभाव का शिकार होना पड़ा?

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -4. बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को अपने स्कूली दिनों में किस प्रकार के भेदभाव का सामना करना पड़ता था?

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -5. क्या किसी के साथ धर्म ,जाति ,भाषा के आधार पर भेदभाव करना उचित है? यदि नहीं तो क्यों नहीं? कोई दो तर्क लिखिए।

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -6. उपरोक्त चित्र को देखकर आपको किस प्रकार की असमानता नजर आती है?

उत्तर. _____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या : 05

विद्यार्थी का नाम - _____

सरकार के स्तर

अधिगम संप्राप्ति

सरकार के प्रकार एवं उनके कार्य आदि को समझ सकेंगे

क्रियाकलाप -1

किसी भी देश में सरकार का काम लोगों के हितों के लिए निर्णय लेना होता है। देश की सुरक्षा, नागरिकों को भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा और प्राकृतिक विपत्तियों से बचाना सरकार के प्रमुख कार्य होते हैं। जैसे - कोरोना काल में लोगों को स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना, मुफ्त टीका लगवाना आदि सरकार के कार्य हैं।

निम्नलिखित तालिका के माध्यम से सरकार के कार्यों की पहचान करते हैं-

गतिविधि -1

क्रम संख्या	समस्याएँ	समाधान (सरकार के कार्य)
1	नागरिकों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए	
2	गरीब बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने के लिए	
3	कोरोना से बचाव के लिए क्या करना चाहिए	

क्रियाकलाप -2

सरकार लोगों की समस्याओं के निदान के लिए अलग-अलग स्तर पर काम करती है। जैसे स्थानीय स्तर पर पंचायतें व नगर निगम, राज्य स्तर पर राज्य सरकारें, केंद्रीय स्तर पर केंद्र सरकार।

क्या आप निम्नलिखित समस्याओं के निदान हेतु बता सकते हैं कि किस स्तर की सरकार आपकी सहायता कर सकती है ?

क्रम संख्या	समस्याएँ	सरकार का स्तर
1	आप की गली में नाली की सफाई .	
2	आपके स्कूल में डेस्क व अध्यापकों की व्यवस्था .	
3	देश में शांति की स्थापना	
4	देश को युद्धों से बचाना	
5	सड़कें बनवाना	
6	पानी की व्यवस्था करना	

क्रियाकलाप -3. सरकार के प्रकार

जब किसी देश में राजा या रानी अपने तरीके से शासन चलाते हैं और उन पर किसी भी प्रकार का अंकुश नहीं होता तो वह शासन व्यवस्था राजतंत्र कहलाती है। जब किसी देश की जनता के द्वारा सरकार चुनी जाती है और सरकार जनता के प्रति जवाबदेह होती है तो उसे लोकतंत्र कहा जाता है।

आइए निम्नलिखित कथनों के माध्यम से सरकार के प्रकार को समझने का प्रयास करते हैं--

उचित कथन पर (सही) का निशान लगाएं।

कथन-1. जनता के हित में कानून के अनुसार कार्य करने वाली सरकार कहलाती है। (राजतंत्र /लोकतंत्र)

कथन-2. जनता अपनी सरकार स्वयं चुनती है। (राजतंत्र /लोकतंत्र)

कथन-3. शासक जब तक चाहे राजा रह सकता है। (राजतंत्र /लोकतंत्र)

कथन-4.राजा किसी को भी फांसी दे सकता है। (राजतंत्र /लोकतंत्र).

कथन-5 .शासक पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं होता। (राजतंत्र /लोकतंत्र)

उपरोक्त गतिविधि के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

प्रश्न -1. सरकार के तीन स्तर कौन-कौन से हैं? उनके नाम लिखिए।

उत्तर. _____

_____

_____

प्रश्न -2 . राज्य सरकार के प्रमुख कार्य कौन-कौन से होते हैं? कोई तीन कार्य बताइए।

उत्तर. _____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या : 06

विद्यार्थी का नाम - _____

सरकार के स्तर

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी सरकार के विभिन्न स्तरों स्थानीय, प्रांतीय और संघीय स्तर की पहचान कर पाएंगे।

क्रियाकलाप-1

- लगता है आज गांव में कोई खास दिन है। गांव के सभी लोग एक जगह इकट्ठा हो रहे हैं। चलो चल कर देखते हैं, क्या हो रहा है?

गांव के कुछ लोग एक चबूतरे पर बैठे हैं तथा बाकी लोग दूसरी ओर बैठे हैं। यह ग्राम सभा की बैठक है।

ग्राम सभा एक पंचायत क्षेत्र में रहने वाले सभी व्यक्तियों जिनकी उम्र 18 वर्ष या अधिक है की सभा होती है।

आइए ग्राम सभा को इस गतिविधि के माध्यम से समझते हैं।

विद्यालय में हम एक विद्यार्थी सभा यानी स्टूडेंट काउंसिल बनाते हैं। जिसमें सभी कक्षाओं और विभागों के मॉनिटर तथा कुछ विद्यार्थी इसके सदस्य होते हैं। यह एक तरीके से ग्रामसभा की तरह ही विद्यालय सभा होती है।

प्रश्न 1 आप ग्राम सभा से क्या समझते हैं?

उत्तर _____

_____

_____

क्रियाकलाप-2

ग्राम पंचायत ग्राम के सभी लोगों के हितों की रक्षा तथा गाँव की भलाई के लिए काम करती है। आइए ग्राम पंचायत के कार्यों को समझते हैं-

1. गाँव में सफाई, सड़कों, नालियों, भवनों आदि का निर्माण एवं देखभाल करना।
2. गाँव में पानी की व्यवस्था करना।
3. गाँव में स्कूलों की व्यवस्था करना एवम् उसकी देखभाल करना।
4. स्थानीय कर लगाना आदि।

ये सब ग्राम सभा के कार्य होते हैं।

आइए इस प्रश्न के माध्यम से ग्राम सभा के कार्यों को और गहराई से समझते हैं

ग्राम सभा के कार्यों की सूची बनाएँ।

अपने क्षेत्र में काम करने वाली स्थानीय संस्था के कार्यों की सूची बनाइए।

क्रियाकलाप -3

जब आप अपने आसपास गलियों में पानी भरा देखते हैं और आसपास गंदगी के ढेर देखते हैं तो आपको गुस्सा आता है। आप यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि आखिर इन सब को साफ करने की जिम्मेदारी किसकी है ?

प्रश्न 1. क्या आप जानते हैं कि आपके मोहल्ले की सफाई करने की जिम्मेदारी किसकी है?

उत्तर

प्रश्न 2. सरकार क्या है?

उत्तर

आइए लोकतंत्र के इस महत्वपूर्ण प्रश्न को समझते हैं।

हमारी स्थानीय समस्याओं के निवारण के लिए स्थानीय सरकार की आवश्यकता होती है। यह स्थानीय सरकारें गाँव में पंचायतों के रूप में और शहर में नगर निगम के रूप में काम करती है।

प्रश्न 1 - आप बताइए आपके यहाँ जो निगम हैं, उसका नाम क्या है?

उत्तर _____

_____

_____

- ग्रामीण स्तर पर पंचायती राज एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें जनता की सीधी भागीदारी होती है। यह तीन स्तर की व्यवस्था है, जिसमें प्रथम स्तर पर ग्राम सभा व दूसरे स्तर पर विकासखंड है। इसे हम पंचायत समितियों के नाम से जानते हैं और तीसरे स्तर पर जिला परिषद् होती है।

आइए अब स्थानीय स्तर की सरकारों को हम इस गतिविधि के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 1. जो कथन आपको सही लगे उस पर सही (✓) का निशान लगाएँ।

कथन 1. ग्राम सभा ग्राम पंचायत का प्रथम स्तर है। ☐

कथन 2. ग्राम पंचायत का कार्य स्थानीय समस्याओं का समाधान करना है। ☐

कथन 3. सच्चे लोकतंत्र के लिए स्थानीय शासन महत्वपूर्ण है। ☐

कथन 4. हम अपनी समस्याओं का समाधान स्थानीय सरकारों से करवा सकते हैं। ☐

प्रश्न 2. पंचायती राज व्यवस्था के तीन महत्वपूर्ण स्तंभ कौन-कौन से हैं?

उत्तर _____

_____

_____

प्रश्न 3- स्थानीय सरकार से आप क्या समझते हैं?

उत्तर _____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या : 07

विद्यार्थी का नाम - _____

स्थानीय सरकार एवं प्रशासन

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी सरकार के विभिन्न स्तरों- केंद्र सरकार, राज्य सरकार और स्थानीय सरकार के कार्यों की पहचान कर पाएंगे।

क्रियाकलाप-1

लोगों की केंद्र, राज्य सरकार तथा स्थानीय सरकार के कार्यों में भागीदारी करना लोकतंत्र का मूल आधार है। लोकतंत्र में सरकार जनता की भागीदारी को सुनिश्चित करती है। जब यह भागीदारी जनता के हर वर्ग तक पहुँचती है तो वह सच्चा लोकतंत्र कहलाता है।

उदाहरण -: भारत में सरकार के तीन स्तर - एक केंद्रीय सरकार, दूसरा राज्य सरकार और तीसरा स्थानीय सरकार हैं।

स्थानीय स्तर पर जनता की भागीदारी लोकतंत्र का मूल आधार है।

आइए इसको इस गतिविधि के माध्यम से समझते हैं –:

कविता कक्षा छठी की छात्रा है। उसकी कक्षा में उसकी अध्यापिका ने उसे लोकतंत्र पर एक लेख लिखने के लिए दिया, जिसकी चर्चा वह अपनी माँ से करती है।

कविता अपनी मां से-: माँ लोकतंत्र में भागीदारी का क्या अर्थ है ?

माँ-: बेटा जैसे आप अपनी कक्षा में विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते हैं जैसे अपना मॉनिटर चुनना ,अपनी क्लास का कार्य करना ,क्लास को सुंदर बनाए रखना आदि। इसी प्रकार जब लोग देश की राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं -:जैसे -चुनाव में वोट डालना ,व सरकार चुनना ,चुनाव लड़ना इत्यादि तो यह लोकतंत्र में भागीदारी कहलाता है।

आइए लोकतंत्र में भागीदारी को इन प्रश्नों का उत्तर देकर समझने का प्रयास करते है –:

प्रश्न 1 अपनी कक्षा की उन गतिविधियों की सूची बनाइए जिसमें आप भागीदारी करते हैं?

उत्तर- _____

_____

_____

क्रियाकलाप-2

जब लोकतंत्र में जनता वोट देकर चुनाव में भागीदारी करके लोकतांत्रिक मूल्यों जैसे स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, न्याय आदि का पालन करके लोक सरकार के कार्यों में रुचि लेकर और सरकार की सकारात्मक आलोचना करके अपनी भागीदारी निभाते हैं, तो इसे लोकतंत्र में भागीदारी कहते हैं।

आइए इन प्रश्नों का उत्तर देकर इस भागीदारी को समझने का प्रयत्न करते हैं-

प्रश्न 1. लोकतंत्र में भागीदारी का क्या अर्थ है?

उत्तर _____

_____

_____

प्रश्न 2 लोकतंत्र में आप कैसे भागीदार हो सकते हैं?

उत्तर _____

_____

_____

क्रियाकलाप- 3

लोकतंत्र में सरकार की भूमिका-

लोकतंत्र में सरकार तीन स्तर पर कार्य करती है -- प्रथम स्तर जिसे हम केंद्र सरकार कहते हैं, दूसरा स्तर जिसे हम राज्य सरकार और तीसरे स्तर पर स्थानीय सरकार होती है। केंद्र सरकार जहां एक और देश की सुरक्षा पर आंतरिक शांति व्यवस्था और वैश्विक संबंध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है , वही राज्य सरकार राज्य स्तर पर लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली आदि की व्यवस्था करती है। साथ ही स्थानीय सरकार स्थानीय स्तर पर लोगों की समस्याओं को हल करती है।

उपरोक्त चार्ट के आधार पर केंद्र सरकार, राज्य सरकार व स्थानीय सरकारों को वर्गीकृत कीजिए।

1. केंद्र सरकार के कार्य

1. _____

2. _____

2. राज्य सरकार के कार्य

1. _____

2. _____

3. स्थानीय सरकार के कार्य

1. _____

2. _____

कार्यपत्रक संख्या : 08

विद्यार्थी का नाम - _____

गाँव का प्रशासन - नगर प्रशासन

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में ग्रामीण एवं शहरी शासकीय निकायों के कार्यों का वर्णन कर सकेंगे।

क्रियाकलाप-1

*गाँव का प्रशासन – भारत में 600000 से अधिक गाँव है। उनकी पानी, बिजली, सड़क की व्यवस्था करना, साथ ही गांव के लोगों के जमीनों के विवाद को हल करने के लिए उनके जमीनों के दस्तावेजों को रखरखाव करना, जमीनी विवादों को हल करना आदि कार्य को गाँव का प्रशासनिक ढांचा कहते हैं।

आइए इसको हम निम्नलिखित समस्या के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं।

किसी गाँव में मोहन और रघु दो किसान रहते हैं। इन दोनों के बीच जमीनी विवाद को लेकर झगड़ा हो जाता है और मोहन को रघु और उसके परिवार वाले बुरी तरह पीट देते हैं।

*अब आप बताइए मोहन को इसकी शिकायत कहाँ करनी चाहिए ?

उत्तर _____

_____

_____

*एक स्थानीय पुलिस स्टेशन या शहर के बड़े पुलिस स्टेशन में?

उत्तर _____

_____

_____

मोहन अपने जमीनी विवाद को सुलझाना चाहता है इसलिए वह अपने विवाद को कानूनी तरीके से हल करना चाहता है। इसके लिए वह गाँव के पटवारी के पास जाता है। गाँव का पटवारी जिसे हम लेखपाल व ग्रामीण अधिकारी भी कहते हैं, वह अधिकारी होता है जो जमीनों के लेखे -जोखो को रखने का काम करता है। वह अपनी जमीन से संबंधित कागजातों को वहां से प्राप्त करता है।

अब आप बताइए.

प्रश्न 1- मोहन अपने जमीनी विवाद के लिए पटवारी के पास क्यों गया?

उत्तर _____

_____

_____

प्रश्न 2. पटवारी का कार्य क्या होता है?

उत्तर _____

_____

_____

इसी प्रकार की समस्याएं आए दिन देखने को मिलती है तो नीचे दी गई तालिका को पूरा करते हैं और यह पता लगाते हैं किसका समाधान कौन करता है?

समस्या----- समाधान

1. झगड़ों का निपटारा _____
2. जमीनी विवाद _____
3. विद्यालय में पीने के पानी की समस्या _____
4. आसपास की सफाई _____

क्रियाकलाप-2

स्थानीय शासन----

रवि दिल्ली के शहरी स्लम क्षेत्र में रहता है, जहां आए दिन उसको कई तरीके की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे- गली की सड़क टूट जाना, गली में पानी भर जाना, सड़क की लाइट का ना जलना, बिजली का अक्सर चले जाना आदि।

इसी प्रकार की किन्ही चार समस्याओं को लिखिए जिनका अक्सर आपको सामना करना पड़ता है।

1. _____
2. _____
3. _____
4. _____

क्रियाकलाप-2

- रामनगर में आज लोग इकट्ठा हो रहे है। पिछले कुछ दिनों से लगातार बारिश हो रही है। जिसके कारण गलियों में पानी इकट्ठा हो रहा है और यह पानी लोगों के घर में घुस रहा है। सभी लोग इकट्ठे होकर इस समस्या के समाधान के लिए अपने स्थानीय निगम पार्षद के दफ्तर जाते हैं और अपनी समस्या उनको बताते हैं। निगम पार्षद स्थानीय स्तर के प्रशासन का वह प्रतिनिधि है जो जनता से सीधे जुड़ा होता है। उसका कार्य अपने क्षेत्र में सफाई, पानी की समस्या, स्कूल में अच्छी शिक्षा की व्यवस्था, निगम के अस्पतालों में अच्छे इलाज की व्यवस्था करवाना होता है।

आइए स्थानीय स्तर एवं शहरी क्षेत्र के प्रशासन को समझने के लिए इन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 1. रामनगर के लोग इकट्ठा क्यों हो रहे हैं?

उत्तर _____

_____

_____

प्रश्न 2.- निगम पार्षद के क्या क्या कार्य हैं?

उत्तर _____

_____

_____

उपरोक्त प्रश्नों के पश्चात हम यह समझ सकते हैं कि हमारे नगर में साफ-सफाई पानी की व्यवस्था, स्कूलों-अस्पतालों की व्यवस्था, बिजली की व्यवस्था जैसी स्थानीय काम नगर निगम के होते हैं। यह सब कार्य हम अपने स्थानीय प्रतिनिधि निगम पार्षद के द्वारा करवा सकते हैं।

क्रियाकलाप-3

कोरोना वायरस के कारण हजारों लोग प्रभावित हुए। यह वायरस इतनी तेजी से फैल रहा है। जिसके कारण हमारी स्वास्थ्य सेवाएं चरमरा गई, साथ ही हमारे स्कूल भी बंद हो गए। हमें ऑनलाइन शिक्षा पर निर्भर होना पड़ रहा है।

इस समस्या में स्थानीय सरकार यानी हमारे नगर निगम व पंचायतों ने स्थानीय स्तर पर अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाओं को चालू रखने तथा अच्छे स्वास्थ्य सेवा देने का काम किया। साथ ही लोगों को वैक्सीन लगवाने में सहायता प्रदान की तथा गरीब बच्चों को उनकी ऑनलाइन शिक्षा में परेशानी ना आए इसके लिए उनके लिए ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था भी की है।

आइए अब इन प्रश्नों के माध्यम से स्थानीय शासन के कार्य एवं भूमिका को समझने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 1. अस्पतालों में दवाइयों एवं स्वास्थ्य सेवाओं को उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी किसकी है?

उत्तर _____

_____

_____

प्रश्न 2. कोरोना के समय में बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा बाधित ना हो इसके लिए क्या किया जा सकता है?

उत्तर _____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या : 09

विद्यार्थी का नाम - _____

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में आजीविका

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी हमारे समाज में विभिन्न प्रकार के व्यवसाय को देखकर उसका वर्णन कर पाएंगे ।गांव और शहर में व्यवसाय में अंतर कर पाएंगे।

क्रियाकलाप-1

नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखें. -:

उपरोक्त चित्र को देखकर बताइए आपको चित्र में दिए गए व्यवसायो के बारे में क्या-क्या जानकारी है। आइए उसकी जांच नीचे दी गई एक छोटी सी कहानी से करते हैं।

- चंदू अपने गांव से शहर में काम की तलाश में आया है । शहर में उसका दोस्त रवि किशन भी रहता है। यह दोनों ही अपने गांव में खेतिहर मजदूर थे किंतु कुछ समय पहले रवि किशन अपने परिवार के साथ शहर में आकर बस गया था और एक कॉल सेंटर में काम करने लगा। जब चंदू शहर में काम की तलाश में आया तो उसने शहर में कुछ दिन रिक्शा चलाने का काम किया तथा उसके बाद उसने एक चाय की दुकान पर काम किया। चंदू की पत्नी सीमा गांव में मनरेगा में मजदूरी करती है और अपने परिवार का भरण पोषण कर रही है। इसी तरह से गांव से शहर में काम की तलाश में आए लोग फैक्ट्री में, सड़क पर ठेला लगाने और कुछ पढ़े लिखे लोग शहर में अच्छी नौकरी की तलाश में आ जाते हैं।

खाली स्थान को भरे--:

- मछली पकड़ने के लिए _____ (गाँव /शहर) के लोगों को जाना ही पड़ता है।
- रवि _____ (शहर /गाँव) के एक कॉल सेंटर में काम करता है।
- चंदू को _____ (कार/ रिक्शा) एक शहर से दूसरे शहर में चलानी पड़ती है।
- चंदू की पत्नी _____ (गाँव/ शहर) में मनरेगा में मजदूरी करती है।

क्रियाकलाप -2

शहर के एक साप्ताहिक बाजार में तरह-तरह की दुकानें लगी हुई है इसमें अशरफ जो कि उत्तर प्रदेश के एक गाँव से आकर शहर में चूड़ियाँ बेच रहा है, वही कमलेश जो कि उड़ीसा के एक गाँव से आई है, बच्चों के कपड़े और खिलौने बेच रही है।

- **शहर में लोग किस किस तरीके के काम करते हैं, उसकी एक सूची बनाइए।**

1 .....

2 .....

3 .....

4 .....

5 .....

उपरोक्त गतिविधि से आप क्या समझे आइए इसे इस तालिका को पूरा करके समझने का प्रयास करते हैं।

प्रमुख काम	शहर	गांव	गाँव व शहर (दोनों में)
खेती करना			
कॉल सेंटर			
रिक्शा चलाना			
मजदूरी करना			
हस्तशिल्प			
मछली पकड़ना			
रेहड़ी-पटरी लगाना			
शोरूम में काम करना			
टैक्सी चलाना			
फैक्ट्री में मजदूरी करना			

उपरोक्त गतिविधियों के माध्यम से हमें यह जानने में सहायता मिली कि गाँव और शहर में लोगों के व्यवसाय में क्या-क्या अंतर है और वह किस प्रकार अपना गुजारा करते हैं।

भूगोल

सामाजिक विज्ञान

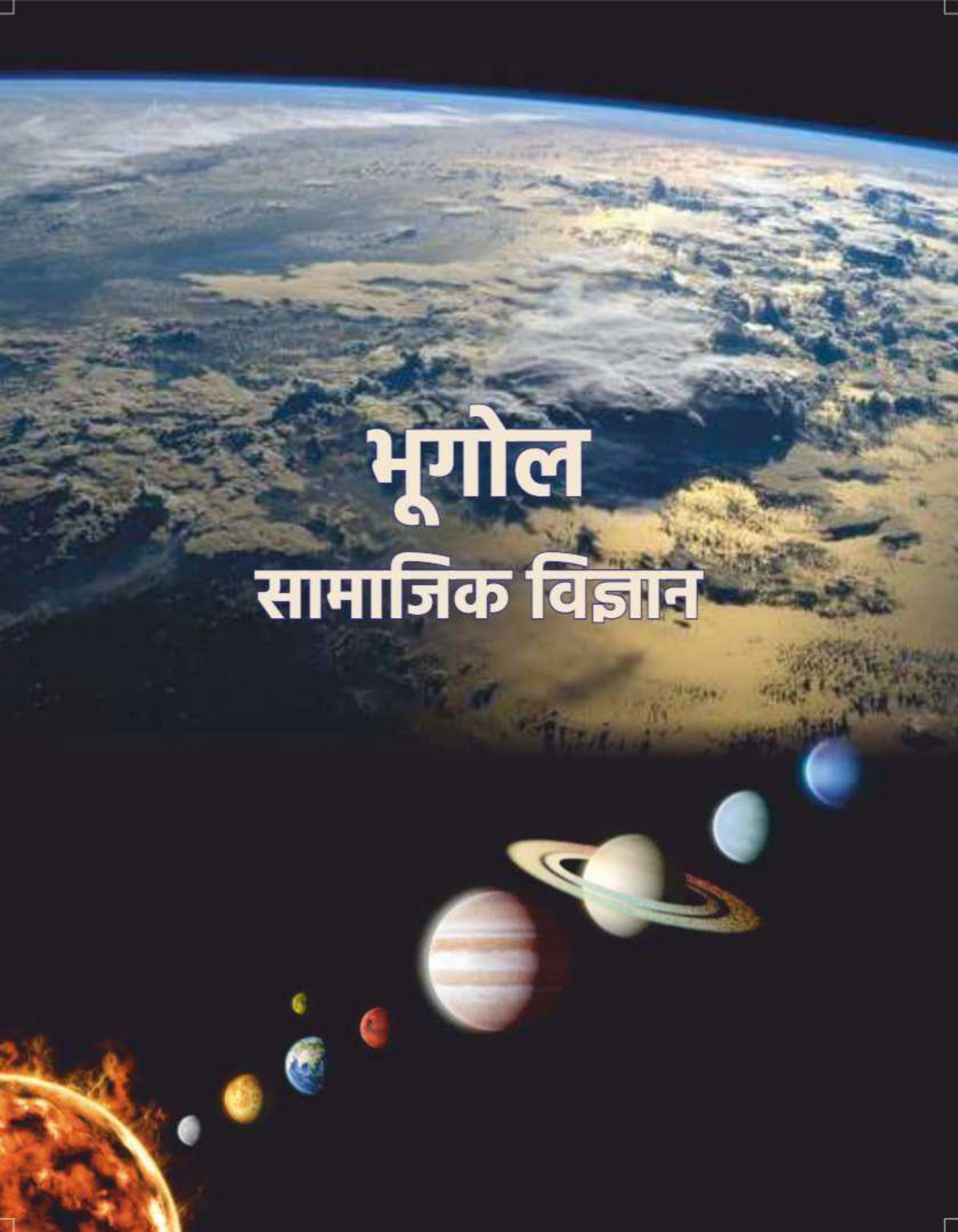

कार्यपत्रक संख्या: 01

विद्यार्थी का नाम:_____

ग्लोब, अक्षांश और देशान्तर रेखाएँ

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी अक्षांशों और देशांतर जैसे ध्रुवों, विषुवतवृत्त, कर्क व मकर रेखाओं को पहचान पाएँगे।

प्यारे बच्चों! इस कार्यपत्रक में हम पृथ्वी के संदर्भ में ग्लोब और अक्षांश वृत्तों को जानेंगे। साथ ही अक्षांशवृत्तों और देशांतर रेखाओं के महत्व को भी समझेंगे।

ग्लोब:

ग्लोब पृथ्वी का छोटा प्रतिरूप या नमूना है। आप देखेंगे कि एक सूई ग्लोब में झुकी हुई है जिसे अक्ष कहा जाता है। इसी के सहारे ग्लोब घूमता है। इसी तरह पृथ्वी भी पश्चिम से पूर्व की ओर अपने अक्ष पर घूमती है। परंतु याद रहे पृथ्वी पर ऐसी कोई सूई नहीं है। बस एक काल्पनिक बिंदु है।

चित्र-1

अक्षांश और देशांतर रेखाओं का महत्व:

गतिविधि:

एक गेंद लीजिए। उस पर किसी भी स्थान(जैसे- दिल्ली या जहाँ आप रहते हैं,) पर पेंसिल से एक बिंदु अंकित कीजिए। देखिए क्या आपके मित्र ने भी गेंदपर उसी स्थान पर बिंदु अंकित किया है, जिस स्थान पर आपने किया है? हाँ/नही

प्यारे बच्चों, किसी भी बिंदु या स्थान की स्थिति का पता लगाने के लिए हम अक्षांश वृत्त या देशांतर रेखाओं की मदद लेते हैं। अक्षांश वृत्त और देशांतर रेखाएँ पृथ्वी पर कुछ काल्पनिक रेखाएँ हैं जिनकी सहायता से हम पृथ्वी पर किसी भी स्थान की सही स्थिति का पता लगा सकते हैं।

चित्र-2

अक्षांश वृत्त:

ग्लोब को ध्यान से देखने पर आपको इसके मध्य एक वृत्त नजर आएगा जो कि पृथ्वी को दो बराबर गोलार्द्धों (गोले का आधा) में बांटता है। इसे विषुवत वृत्त कहा जाता है। उत्तर दिशा का आधा भाग, उत्तरी गोलार्द्ध तथा दक्षिण दिशा का आधा भाग दक्षिणी गोलार्द्ध कहलाता है। ग्लोब में दो बिंदु होते हैं जिनसे होकर सूई गुजरती है। उसी तरह पृथ्वी पर एक काल्पनिक सूई या बिंदु होते हैं। उत्तर दिशा के बिंदु को उत्तरी ध्रुव या दक्षिण दिशा के बिंदु को दक्षिणी ध्रुव कहा जाता है। विषुवत वृत्त से ध्रुव तक स्थित सभी समानांतर वृत्तों को अक्षांश वृत्त कहा जाता है। अक्षांशों को अंश या डिग्री में मापा जाता है।

विषुवत वृत्त का मान 0° अक्षांश माना जाता है। विषुवत वृत्त से उत्तरी ध्रुव तक कुल 90 तथा दक्षिणी ध्रुव तक भी कुल 90 अक्षांश वृत्त माने गए हैं। प्रत्येक अक्षांश के बीच 1° का अंतर माना जाता है। इसी आधार पर उत्तरी ध्रुव को 90° उ० ध्रुव तथा दक्षिण ध्रुव को 90°द० ध्रुव कहा जाता है।

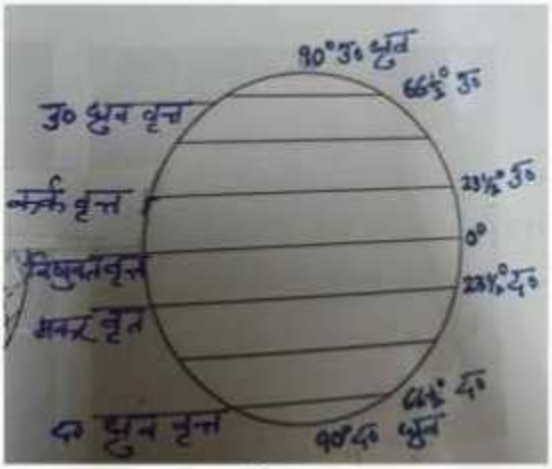

चित्र-3

मुख्य अक्षांश वृत्त

प्रश्न 1. खाली स्थान भरो------

(क) विषुवत वृत्त का मान-------- होता है।

(ख) पृथ्वी अपने अक्ष पर---------से -------- दिशा में घूमती है।

प्रश्न 2. ग्लोब को देखकर बताइए कि भारत देश किस गोलार्द्ध में स्थित है।

_____

_____

प्रश्न 3. दिए गए चित्र में विषुवत वृत्त, उत्तरी ध्रुव, दक्षिणी ध्रुव को उनके मान के साथ दर्शाइए।

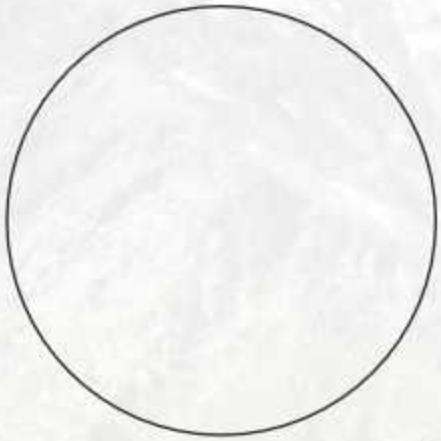

प्रश्न 4. कल्पना कीजिए यदि अक्षांश नहीं बनाए गए होते तो क्या होता ?

कार्यपत्रक संख्या: 02

विद्यार्थी का नाम:_____

ग्लोब, अक्षांश और देशान्तर रेखाएँ

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी अक्षांशों और देशांतर जैसे—ध्रुवों, विषुवत वृत्त, कर्क व मकर रेखाओं को पहचान पाएँगे।

- बच्चों जब दिल्ली में सर्दी का मौसम होता है तब उत्तर प्रदेश में कैसा मौसम होता है? सर्दी/ गर्मी
- जब दिल्ली में सर्दी होती है तब तमिलनाडु में कैसा मौसम होता है? सर्दी/ गर्मी
- क्या एक समय में सभी स्थानों पर एक जैसा मौसम होता है? हां /ना

बच्चों एक समय पर सभी स्थानों पर एक जैसा मौसम नहीं होता। परंतु कुछ स्थान ऐसे भी होते हैं जहाँ एक ही समय पर एक जैसा मौसम होता है या एक जैसा तापमान होता है इसी आधार पर पूरी पृथ्वी को तीन ताप कटिबंधों में बाँटा गया है।

पृथ्वी के ताप कटिबंध:

प्यारे बच्चों, पृथ्वी को औसत वार्षिक तापमान के आधार पर कुल तीन ताप कटिबंधों में बाँटा गया है। जोकि निम्न हैं-

उष्णकटिबंध	23 ½ ° उ॰ to 23 ½° द॰	बहुत ज्यादा गर्मी।
शीतोष्णकटिबंध	23 ½° उ॰ to 66 ½° उ॰ 23 ½° द॰ to 66° द॰	ना ज्यादा गर्मी ना ज्यादा ठंड।
शीतकटिबंध	66 ½° उ॰ to 90 ° उ॰ 66 ½° द॰ to 90° द॰	बहुत ज्यादा सर्दी

महत्वपूर्ण अक्षांश एवं ताप कटिबंध

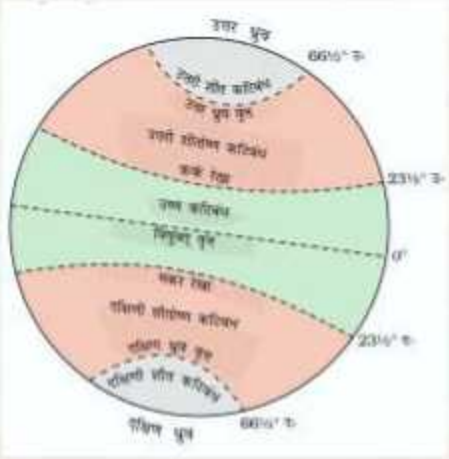

चित्र-1

देशांतर रेखाएँ:

ग्लोब पर हमें अक्षांश वृत्त के अतिरिक्त उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को जोड़ने वाली कुछ रेखाएँ भी नजर आती है। यह रेखाएँ देशांतर रेखाओं के नाम से जानी जाती है। पृथ्वी को पश्चिमी गोलार्द्ध व पूर्वी गोलार्द्ध (दो बराबर भागों) में बांटने वाली रेखा को प्रमुख याम्योत्तर या मुख्य देशांतर रेखा के नाम से जाना जाता है। यह रेखा ग्रेट ब्रिटेन के ग्रीनविच शहर में ब्रिटिश राजकीय वैधशाला से होकर गुजरती है। इसका मान 0° देशांतर माना गया है तथा यहाँ से हम 180° पूर्व तथा 180° पश्चिम तक गणना करते हैं।

देखें चित्र - NCERT 2.5

ग्रिड: पृथ्वी पर जहाँ अक्षांश व देशांतर रेखाएँ एक दूसरे को काटती है, उन्हें ग्रिड/जाल कहा जाता है। पृथ्वी पर इस तरह की ग्रिड का पूरा जाल बिछा हुआ है। इस ग्रिड को हम पृथ्वी पर किसी भी स्थान की सही स्थिति जानने के लिए प्रयोग में लाते हैं।

देखें चित्र - NCERT 2.6

प्रश्न 1. प्रमुख याम्योत्तर या देशांतर रेखा किस देश से होकर गुजरती है?

(क) भारत (ख) ग्रेट ब्रिटेन (ग) अमरीका

प्रश्न 2. 90° उ॰ध्रुव कौन से कटिबंध में आता है ?

प्रश्न 3. दिए गए वृत्त पर मुख्य देशांतर रेखा और विषुवत वृत्त खींचिए और उसमें दिए गए प्रश्न के अनुसार नीचे लिखे बिंदुओं को दर्शाइए-

(i) बिंदु A को मुख्य देशांतर के पूर्व में।

(ii) बिंदु B को मुख्य देशांतर के पश्चिम में।

(iii) बिंदुC को उ॰गोलार्द्ध में।

(iv) बिंदु D को विषुवत वृत्त पर कहीं भी।

प्रश्न 4. पृथ्वी को मुख्य रूप से तीन ताप कटिबंधों में ही क्यों बांटा गया है ?

कार्यपत्रक संख्या: 03

विद्यार्थी का नाम:_____

ग्लोब, अक्षांश और देशांतर रेखाएँ

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी अक्षांशों और देशांतर जैसे—ध्रुवों, विषुवतवृत्त, कर्क व मकर रेखाओं को पहचान पाएँगे।

प्यारे बच्चों, पिछले कार्यपत्रकों में हमने जाना कि अक्षांश वृत्तों और देशांतरों की सहायता से हम किसी भी स्थान की सटीक (सही) स्थिति का पता लगा सकते हैं।

आओ हम भी चित्र में दिए गए बिंदु की सही स्थिति का पता लगाते हैं-

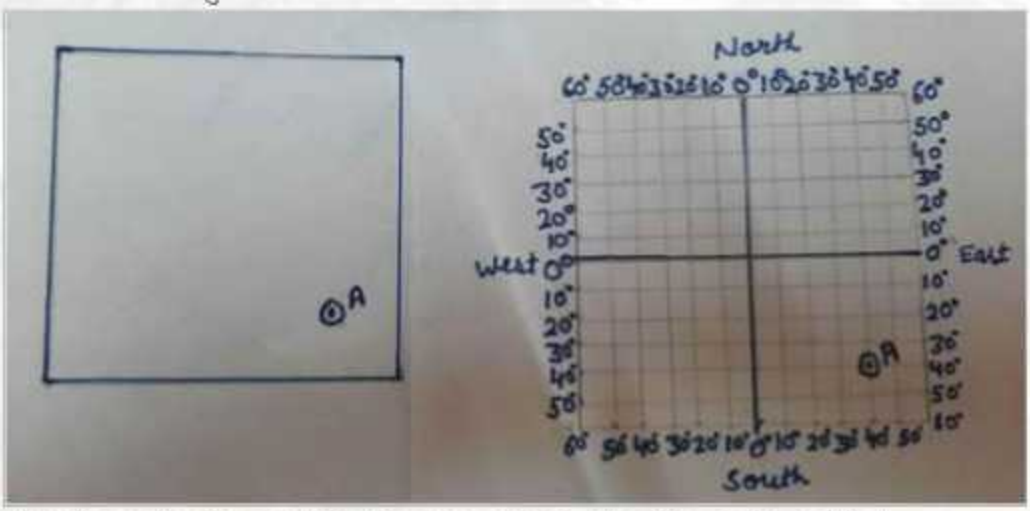

चित्र-1

(I) सर्वप्रथम दिए गए चित्र के मध्य, पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण दिशा में एक एक रेखा खींचिए।

(ii) इन रेखाओं पर दिशा निर्देशित कीजिए, साथ ही इनका मान 0° लिखिए।

(iii) अब मध्य रेखा के दोनों तरफ बराबर संख्या में कुछ अन्य रेखाएं भी खींचिए।

(iv) प्रत्येक रेखा का मान बराबर अनुपात में लिखिए जैसे मध्य रेखा, 0° मध्य रेखा के बाद सभी में 10° का अंतर रखते हुए उनका मान 10°, 20°, 30° आदि लिखिए।

(v) आप देखेंगे कि A बिन्दुसे किसी ना किसी ग्रिड पर या उसके अंदर आ रहा होगा। अब हम A बिंदु की सही स्थिति आसानी से बता पा रहे हैं।

तो बच्चों आपने देखा कि किस तरह अक्षांश वृत्त और देशांतर रेखाओं के माध्यम से हम किसी भी स्थान की सही स्थिति आसानी से बता सकते हैं।

देशांतर रेखाओं के द्वारा समय की गणना:

वर्तमान काल में जो हम समय देख पाते हैं उसकी गणना मुख्य देशांतर रेखा ग्रेट ब्रिटेन में ग्रीनविच के अनुसार की गई है। इस रेखा पर सूर्य जिस समय आकाश के सबसे ऊंचे बिंदु पर होता है उस समय इस देशांतर पर स्थित सभी स्थानों पर दोपहर के 12:00 बजे होते हैं। पृथ्वी के अपने अक्ष पर झुकी होने और पश्चिम से पूर्व की ओर घूमने के कारण मुख्य देशांतर के पूर्वी भाग के क्षेत्रों में समय मुख्य देशांतर के आगे रहेगा और पश्चिम भाग के क्षेत्रों में समय मुख्य देशान्तर से पीछे रहेगा।

भारत की मानक या मयोत्तर ग्रीनविच से 82°30' पूर्व में है इसलिए यहाँ का समय ग्रीनविच के समय से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है इसलिए जब लंदन में दोपहर के 2 बजे होंगे तो भारत में शाम के 7:30 बजे होंगे।

समय की गणना की विधि:

हम जानते हैं कि पृथ्वी अपने अक्षपर 24 घंटे में एक चक्कर लगाती है अर्थात 360° घूम जाती है। इस आधार पर पृथ्वी 1 घंटे में 15° और 4 मिनट में 1° घूमती है।

उदाहरण:

माना कोई स्थान ग्रीनविच से 30° दूर है और ग्रीनविच में 12 बजे हैं तो उस स्थान का समय होगा-------

30°×4= 120 मिनट, अर्थात् 2 घंटे।

- अब यदि वह स्थान 30° पूर्व में है तो वहाँ 2 बजे होंगे और यदि वह स्थान 30° पश्चिम में है तो 10 बजे होंगे।

स्थानीय मानक समय :

प्रत्येक देश का अपना स्थानीय मानक समय भी होता है उसी के अनुसार हम अपने समय को निर्धारित करते हैं।
भारत का स्थानीय मानक समय 82°30' पूर्वी देशांतर को माना गया है क्योंकि यह भारत के लगभग मध्य में आता है यहाँ के स्थानीय समय को पूरे भारत का मानक समय माना जाता जाता है इसे भारतीय मानक समय (IST) के नाम से भी जाना जाता है।

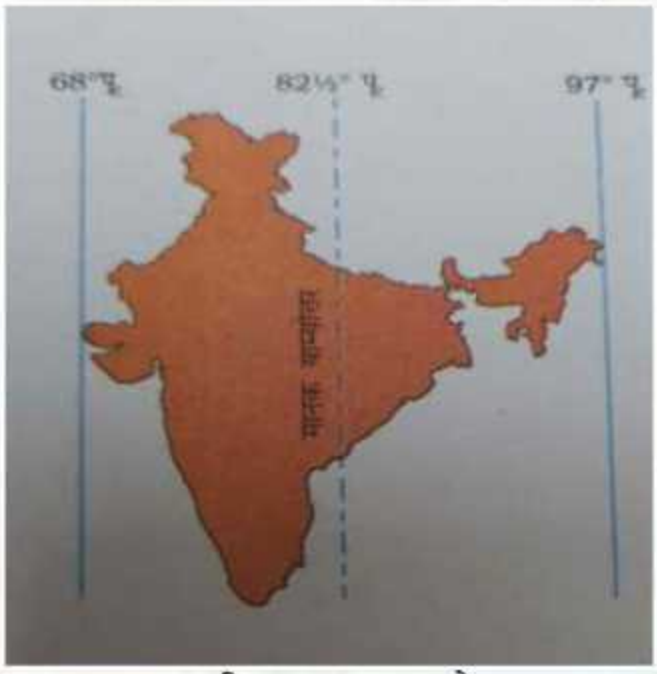

भारतीय मानक याम्योत्तर

चित्र-2

मुख्य तत्व:
GMT: ग्रीनविचमीन टाइम।
IST :भारतीय मानक समय।

प्रश्न 1. खाली स्थान भरो-----'

(i) भारत की मानक याम्योत्तर---------° पर मानी गई है।

(ii) पृथ्वी अपने अक्ष पर------'घंटे में एक चक्कर लगाती है

प्रश्न 2. यदि ग्रीनविच में सुबह के 4 बजे हैं तो उसी समय 20° पश्चिम में क्या समय होगा ?

प्रश्न 3. ग्रिड/जाल किसे कहते हैं?

प्रश्न 4. भारतीय मानक समय किस देशांतर पर माना गया है?

प्रश्न 5. अपने बड़ों से पता कीजिए कि उनके समय में समय की गणना कैसे की जाती थी?

भूगोल

कार्यपत्रक संख्या: 04

विद्यार्थी का नाम:_____

मानचित्र

अधिगम सम्प्राप्ति

अपने आस-पड़ोस का मानचित्र बना पाएंगे। और उस पर मापक, दिशाएँ तथा अन्य विशेषताओ को रूढ़ चिह्नों की सहायता से दिखा पाएंगे।

गीता (विद्यार्थी) : (कैलेंडर की तरफ इशारा करते हुए।) इसमें तो कोई चित्र नहीं है। बस, कुछ रेखाएं खींची हुई है और रंग भरे हुए हैं। क्या ऐसा भी कोई चित्र होता है?

मैडम : ये मान चित्र हैं।

सभी बच्चे : मान चित्र क्या होता है ?

मैडम : बच्चों, जब हमें पृथ्वी या उसके किसी हिस्से के बारे में जानना होता है तब हम मानचित्र का प्रयोग करते हैं।

सुनीता (विद्यार्थी) : लेकिन मैडम, उसके लिए तो हम ग्लोब का उपयोग करते हैं।

मैडम : हाँ, जब हम पूरी पृथ्वी का अध्ययन करते हैं तो एक ग्लोब उपयोगी हो सकता है लेकिन जब हम पृथ्वी के किसी एक हिस्से जैसे देश राज्य, जिले, कस्बे और गाँवों का ही अध्ययन करना चाहते हैं तो यह बहुत मदद नहीं करता है, ऐसे मामलों में हम मानचित्रों का उपयोग करते हैं।

सभी विद्यार्थी : ओह..... अब हम समझ गए मैडम। (खुशी से)

गीता : हाँ मैडम, मैंने शादी के कार्ड पर भी मानचित्र देखा है।

मैडम : वह मानचित्र नहीं रेखाचित्र होता है जो कि हमारी याददाश्त और प्रेषण पर आधारित होता है।

* मानचित्र और रेखाचित्र की भाँति एक खाका भी होता है। एक खाका बड़े पैमाने पर छोटे क्षेत्र का एक चित्र है।

एटलस :- मानचित्र की किताब को एटलस कहते हैं।

मान चित्र के प्रकार : मानचित्र को बनाना, पढ़ना, और उस पर किसी भी स्थान को दर्शाना आसान हो सके इसलिए मानचित्र को विभिन्न प्रकार में बाँटा गया है जो कि निम्न हैं-

मानचित्र

भौतिक	राजनीतिक	भौगोलिक या थिमैटिक
पर्वत, पठार, मैदान नदियाँ, झीलें, सागर, महासागर आदि	महाद्वीप, देश, राज्य, शहर, गाँव, कस्बा, जिला आदि	किसी स्थान की विशेष जानकारी दिखाता हुआ मानचित्र जैसे—सड़क मानचित्र, जनसंख्या
		मानचित्र, वर्षा मानचित्र आदि

मानचित्र और ग्लोब में अंतर :

ग्लोब पृथ्वी का एक लघु नमूना होता हैजो कि पृथ्वी के सही आकार,स्थिति, अक्षांश और देशांतर की जानकारी बताता है। मानचित्र पृथ्वी की सतह का पैमाने के द्वारा खींचा गया चित्र होता है। मानचित्र के द्वारा पृथ्वी के छोटे से छोटे हिस्से का अध्ययन भी बहुत ही आसानी से किया जा सकता है।

प्रश्न 1. मानचित्र किस तरह की सतह पर खींचा जाता है?

A. गोल सतह B. चपटी सतह C. तिकोनी सतह

प्रश्न 2. मानचित्र के प्रकार को पहचानिए -

A. विभिन्न देश, राज्य आदि को दिखाता मानचित्र ----------

B. पर्वत, पठार, मैदान तथा नदियों को दिखाता मानचित्र--------

प्रश्न 3. यदि हमें किसी देश की जनसंख्या को मानचित्र में दिखाना हो तो हमे किस प्रकार का मानचित्र लेना होगा?

प्रश्न 4. ग्लोब और मानचित्र में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 5. भारत के राजनीतिक मानचित्र में निम्नानुसार राज्यों को दर्शाएँ--------

(i) उत्तर दिशा में एक राज्य।

(ii) पूर्व दिशा में एक राज्य।

(iii) पश्चिम दिशा में एक राज्य।

(iv) दक्षिण दिशा में एक राज्य।

(v) भारत के मध्य में कोई एक राज्य।

भूगोल

कार्यपत्रक संख्या: 05

विद्यार्थी का नाम:_____

मानचित्र

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी अपने आस-पड़ोस का मानचित्र बना पाएंगे और उस पर मापक, दिशाएँ तथा अन्य विशेषताओं को रूढ़ चिह्नों की सहायता से दिखा पाएंगे।

पिछले कार्यपत्रक में हमने मान चित्र और उसके प्रकार के बारे में जाना, मानचित्र को बनाने, पढ़ने तथा समझने के लिए तीन बातों का जानना बहुत जरूरी है जिन्हें हम मानचित्र के घटक भी कहते हैं जो कि निम्न है-

मानचित्र के घटक–

मापक	दिशा प्रतीक	चिह्न	संकेत

मापक:

* बच्चो क्या हम अपने विद्यालय का मानचित्र इस छोटे से कागज पर बना सकते हैं? हाँ/नहीं

इसका जवाब हाँ है, बस इसके लिए हमें उस जगह की माप (लंबाई तथा चौड़ाई) पता होनी चाहिए। बड़ी दूरी को छोटी दूरी में दिखाने के लिए एक पैमाना चुना जाता है। मापक वास्तविक दूरी और मान चित्र में दिखाई गई दूरी का सही अनुपात होता है। इसे प्रतिनिधि अंश (Representative fraction) भी कहते हैं, उदाहरण के लिए यदि आपके विद्यालय के किसी एक कमरे से खेल के मैदान की दूरी 100 मीटर है, जिसे मानचित्र पर 1 सेंटी मीटर में दिखाया गया है तो आपके मानचित्र का पैमाना होगा।

1 सेंटीमीटर = 100 मीटर।

जब स्कूल, गाँव, कस्बे आदि जैसे छोटे क्षेत्रों को मानचित्र पर दिखाया जाता है, तो मानचित्र पर 5 सेमी का उपयोग करते हैं जो 500 मीटर का क्षेत्र दिखाता है। इसे बड़े पैमाने का मानचित्र कहते हैं।

जब महाद्वीप, देशों, या राज्यों जैसे बड़े क्षेत्रों को मानचित्र पर दिखाया जाता है, तो मानचित्र पर 5 सेमी का उपयोग करते हैं जो 500 किलो मीटर का क्षेत्र दिखाता है। इसे छोटे पैमाने का मानचित्र कहते हैं।

प्रतीक/चिह्न/संकेत:

गतिविधि:

सब से पहले उन सभी चीजों की सूची बनाओ जो आपकी कक्षा में हैं, उन चीजों की जिन्हें हम हटा नहीं सकते। सूची बनाकर उनके लिए संकेत लिखिए-

कक्षा में उपलब्ध वस्तुएँ	संकेत
श्यामपट्ट	
खिड़की	
दरवाज़ा	

बच्चो! जैसे हमने संकेतों को लिया उसी तरह मानचित्र पर भी वास्तविक आकार तथा आकृतियों को दिखाना संभव नहीं होता, इस लिए संकेतों का प्रयोग किया जाता है। मानचित्र पर प्रतीकों की एक विश्वव्यापी (पूरे संसार में जानी जाने वाली) भाषा होती है जिसे सभी समझ सकते हैं। इन्हें रूढ प्रतीक कहा जाता है।

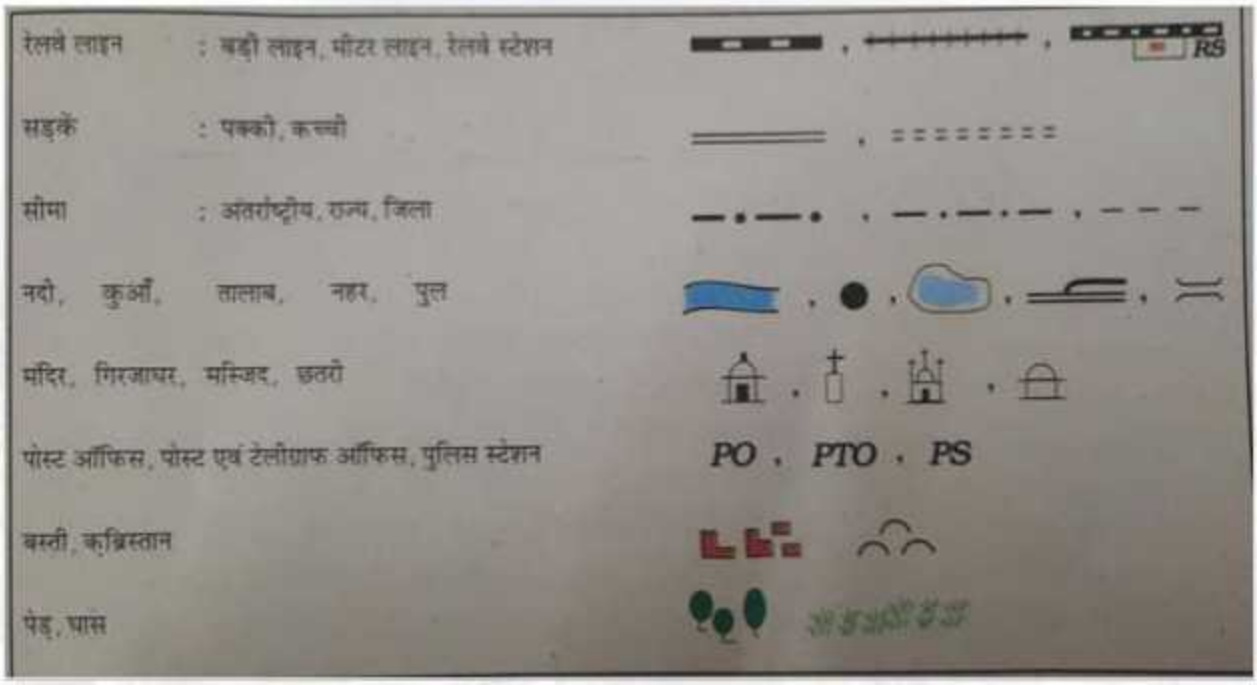

चित्र-1

प्रतीक के रूप में रंगों का उपयोग : मानचित्र में रंगों का उपयोग भी विश्वव्यापी (पूरे संसार में माना जाने वाला) है। नीला रंग पानी के लिए, हरा रंग हरियाली या मैदान के लिए, भूरा रंग पहाड़ों के लिए और पीला रंग पठार के लिए उपयोग किया जाता है।

दिशा:

गतिविधि: सभी बच्चे ऊपर दिए गए संकेतों के आधार पर अपनी कक्षा का एक रेखा चित्र बनाए।

सुनीता: मैडम, मेरा रेखा चित्रगीता और राजू जैसा नहीं है। उनकी खिड़कियाँ और दरवाजे दूसरी तरफ हैं।

मैडम : हाँ, क्योंकि आप सभी ने दिशाओं का प्रयोग नहीं किया है। मानचित्र में मुख्य रूप से चार दिशाएँ पूरब, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण का प्रयोग किया जाता है। इन्हे प्रधान दिग्बिन्दु कहा जाता है। इसके अलावा बीच की चार दिशाएँ भी बहुत महत्व रखती हैं।

चित्र-2

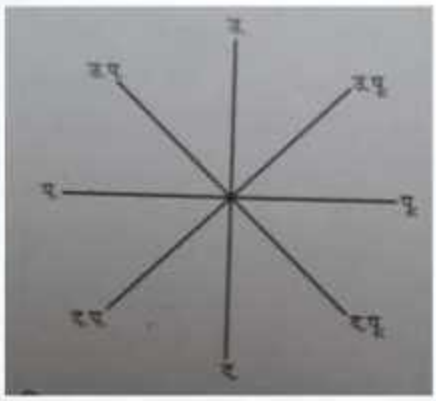

चित्र-3

दिक्सूचक:

यह एक यंत्र होता है जिसकी सहायता से मुख्य दिशाओं का पता लगाया जाता है। इसकी चुंबकीय सूई की दिशा हमेशा उत्तर-दक्षिण दिशा में होती है। बाकी की दिशाओं का पता हम इसी के अनुसार लगा सकते हैं। बांई तरफ पश्चिम तथा दांई तरफ पूर्व दिशा होती है।

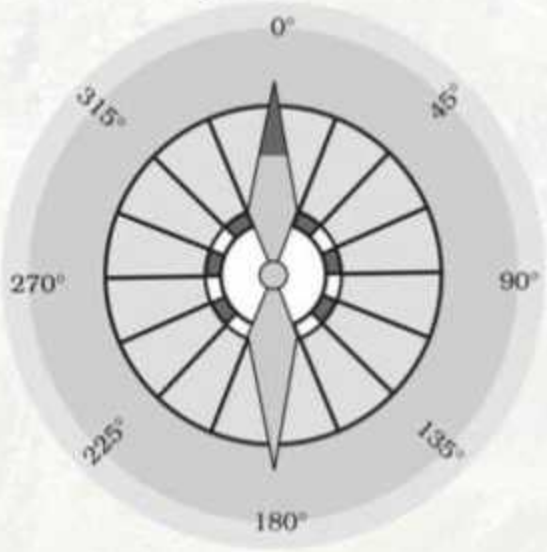

चित्र-4

प्रश्न 1. निम्न प्रतीकों को पहचान कर उनके नाम लिखिये।

चित्र-5

प्रश्न 2. चित्र देखकर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

चित्र-13

1. विद्यालय किस दिशा में है?
2. मस्जिद का रास्ता बताइए।
3. प्रतीकों को पहचान कर उनके नाम लिखिये।

प्रश्न 4. मिलान करो-

1.	हरा रंग	पठार
2.	भूरा रंग	पानी
3.	नीला रंग	मैदान
4.	पीला रंग	पहाड़

प्रश्न 5. मानचित्र में यदि दिशाओं का उपयोग ना किया जाए तो क्या होगा?

_____

_____

_____

प्रश्न 6. अपनी कॉलोनी का मानचित्र बनाइए।

कार्यपत्रक संख्या: 06

विद्यार्थीकानाम:_____

पृथ्वी के प्रमुख स्थल रुप

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी भारत के मानचित्र पर भौतिक स्वरूपों, जैसे – पर्वतों, पठारों, मैदानों, नदियों, मरुस्थल इत्यादि को अंकित कर पाएँगे।

प्यारे बच्चों! पिछले कार्यपत्र को में आपने पढ़ा होगा कि पृथ्वी की सतह वाले भाग को स्थलमंडल कहा जाता है। आप सभी ने देखा होगा कि पृथ्वी हर जगह से एक समान नहीं है। इसके बहुत से स्थल रूप हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि पृथ्वी हर जगह से एक समान क्यों नहीं है? इसे जानने के लिए हम छोटी सी गतिविधि करते हैं।

सभी बच्चे एक मोमबत्ती लीजिए और उसे ध्यान पूर्वक गरम कीजिए। कुछ देर बाद उसे देखिए क्या उसकी आकृति में कुछ परिवर्तन आया?

जिस तरह मोमबत्ती को ऊष्मा मिलने से उसकी आकृति में परिवर्तन आया, उसी तरह पृथ्वी पर भी उष्मा, जल, वायुऔर अन्य कारणों से आंतरिक (पृथ्वी के अन्दर होने वाली) और बाह्य (पृथ्वी की बाहरी सतह पर होने वाली) हलचलें होती रहती हैं जिससे इसके रूप में भी अन्तर मिलता है।

प्रमुख स्थलरुप:

पृथ्वी की हलचलों के कारण मुख्य रूप से तीन स्थल रूप बनते हैं, जो कि निम्न हैं-

(पर्वत)

चित्र-14

(मैदान)

चित्र-15

पर्वत:

(i) पृथ्वी पर सतह से ऊंचे स्थानों को पर्वत कहा जाता है।
(ii) इसका ऊपरी भाग(शिखर) छोटा तथा निचला भाग (आधार) चौड़ा होता है।
(iii) कुछ पर्वत बहुत ऊंचे होते हैं तथा कुछ पर्वत छोटे होते हैं।

हिमानी :

(i) पर्वतों पर हमेशा जमी रहने वाली बर्फ की नदियां होती हैं जिन्हें हिमानी कहा जाता है
(ii) परंतु याद रखना सभी पर्वतों पर बर्फ नहीं होती है जो पर्वत बहुत ऊंचे होते हैं। केवल वही पर बर्फ होती है।

श्रृंखला: एक के बाद एक पर्वत क्रम (पंक्ति) में व्यवस्थित (लगे) होते हैं। उन्हें श्रृंखला कहतेहैं।

पर्वतों के प्रकार: पृथ्वी पर होने वाले परिवर्तन के आधार पर पर्वत निम्न प्रकार के हैं-

वलित पर्वत:

(i) ऐसे पर्वत जिनकी सतह ऊबड़-खाबड़ तथा शिखर शंक्वाकार (शंकु के आकार का) होता है, उन्हें वलित पर्वत कहा जाता है।
(ii) भारत में अरावली श्रृंखला विश्व की सबसे पुरानी वलित पर्वत श्रृंखला है।
(iii) हिमालय तथा आल्पसवलित पर्वत के ही उदाहरण है।

चित्र-16

भ्रंशोत्थ या अवरोधी पर्वत:

(i) भ्रंशोत्थ या अवरोधी पर्वतों का निर्माण तनाव या खिंचाव की शक्तियों के कारण होता है जब पृथ्वी का बहुत बड़ा भाग टूट जाता है या दरार (भ्रंश) पड़ जाती है। और इससे धरातल का कुछ भाग ऊपर उठ जाता है और कुछ भाग नीचे धंस जाता है तो इस प्रकार के पर्वतों का निर्माण होता है। दरार या (भ्रंश) के कारण ही इन्हें भ्रंशोत्थ पर्वत नाम दिया गया है।

(ii) ऊपर उठे हुए भाग को उत्खंड (हास्ट) और नीचे धंसे हुए भाग को द्रोणिका भ्रंश(ग्राबेन) कहा जाता है।

(iii) भारत का सतपुड़ा पर्वत और यूरोप की राइन घाटी और वॉसजेस इसके उदाहरण हैं।

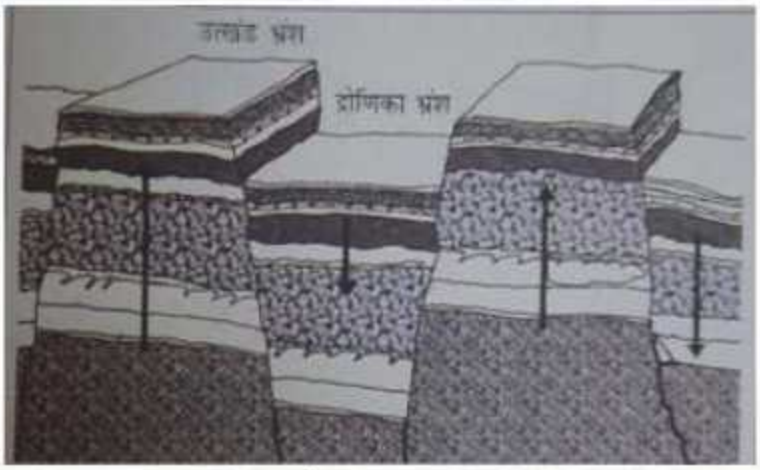

चित्र-17

ज्वालामुखी पर्वत:

(i) पृथ्वी की आंतरिक हलचलों के कारण पृथ्वी की सतह पर दरार या मुख बन जाता है जिसमें से पृथ्वी के अंदर का गरम लावा (पिघली हुई चट्टान) गैस, राखआदि बाहर आ जाते हैं। इन पदार्थों के जमा होने से निर्मित शंक्वाकार स्थल रूप को ज्वालामुखी पर्वत कहा जाता है।

(ii) भारत के अंडमान निकोबार के बैरन आईलैंड में सक्रिय ज्वालामुखी पर्वत पाए जाते हैं।

(iii) अफ्रीका का माउंट किलिमंजारो तथा जापान का फ्यूजीयामा पर्वत इसके उदाहरण हैं।

चित्र-18

पर्वतों के लाभ:

1. जल के संग्रहागार।
2. पर्वतों के जल का उपयोग सिंचाई तथा बिजली बनाने में।
3. नदी, घाटियाँ तथा वेदिकाएँकृषि के लिए।
4. विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ तथा जीव-जंतु।
5. विभिन्न खेल, पैराग्लाइडिंग, हैंगग्लाइडिंग, रिवर राफ्टिंग तथा स्कीइंग आदि।

प्रश्न 1. पर्वत कितने प्रकार के होते हैं?

(क) 1 (ख) 2 (ग) 3 (घ) 4

प्रश्न 2. भारत के मानचित्र में देखकर बताइए कि पर्वतीय क्षेत्र भारत के कौन कौन से राज्य में हैं?

प्रश्न 3. यदि पर्वत ना होंतो क्या होगा ?

प्रश्न 4. अकसर लोग गर्मी की छुट्टियां मनाने पहाड़ी प्रदेशों में ही क्यों जाना पसंद करते हैं ?

प्रश्न 5. सभी पर्वतों पर बर्फ क्यों नहीं होती है?

कार्यपत्रक संख्या: 07

विद्यार्थीकानाम:_____

पृथ्वी के प्रमुख स्थल रुप

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी भारत के मानचित्र पर भौतिक स्वरूपों, जैसे – पर्वतों, पठारों, मैदानों, नदियों, मरुस्थल इत्यादि को अंकित करपाएँगे।

*बच्चों प्रमुख स्थल रूप कौन कौन से हैं?

सभी बच्चे: पर्वत, पठार और मैदान।

जीहाँ, शाबाश आप सभी ने सही बताया। पिछले कार्यपत्रक में हमने पृथ्वी के एक स्थल रूप पर्वत के बारे में विस्तार से समझा था। आज इस कार्यपत्रक में हम पृथ्वी के अन्य स्थल रूपों के बारे में समझेंगे।

पठार:

(I) बच्चों आप सभी ने अपने अपने घरों में मेज को तो देखा ही होगा, पठार भी कुछ इस तरह के ही होते हैं।
(ii) आसपास के क्षेत्रों से अधिक ऊंची उठी हुई और समतल या सपाट भूमि को पठार कहते हैं।
(iii) पठार की ऊंचाई कुछ 100 मीटर से लेकर कई हजार मीटर तक हो सकती है।
(iv) हमारे देश में दक्कन का पठार तथा छोटा नागपुर का पठार इसके उदाहरण हैं।

* क्या आप बता सकते हैं कि पठारों से हमें क्या मिलता है?

पठार में खनिजों की प्रचुरता होती है। अफ्रीका का पठार, सोना और हीरों के लिए तथा भारत में छोटा नागपुर का पठार लोहा, कोयला और मैगनीज़ के लिए प्रसिद्ध है। पठारी क्षेत्रों में जल प्रपात भी होते हैं जिससे यह पर्यटकों को भी आकर्षित करते हैं।

मैदान :

(i) नीची और समतल (सपाट) भूमि का बहुत बड़ा भाग मैदान कहलाता है।
(ii) मैदान समुद्र तल से ऊँचे या नीचे हो सकते हैं, परंतु पठारो और पर्वतों से नहीं हो सकते।
(iii) मैदानों का निर्माण पृथ्वी की बाहरी सतह में हुए परिवर्तनों के कारण होता है।
(iv) जब नदियाँ, पर्वतों के ढालों पर नीचे की ओर बहती हैं तथा उन्हें अपरदित (घिसना) कर देती हैं तो ऐसे में अपरदनमूलक मैदान का निर्माण होता है ।और यदि,
(v) अपरदित पदार्थ जब नदियाँ आगे ले जाती हैं और अपने साथ लाए हुए कुछ पदार्थ जैसे पत्थर, बालू तथा सिल्ट को घाटियों में निक्षेपित (छोड़ना) कर देती है तो इनसे निक्षेपण मूलक मैदान बनता है।

स्थलरुप के अनुसार लोगों की जीवन शैली में अंतर:

* बच्चों सोचिए और बताइए कि क्या स्थलरूप के अंतर से लोगों की जीवन शैली में अंतर आता होगा और क्यों?

बच्चों किसी स्थान का स्थल रूप कैसा है? इस बात से वहाँ के रहन-सहन पर बहुत असर पड़ता है। मैदानी क्षेत्रों की तुलना में पर्वतीय क्षेत्रों का जीवन कठिन होता है। पर्वतीय क्षेत्रों में घर बनाना, खेती करना, सड़कें बनाना आदि कठिन होता है। मैदानी इलाकों में भोजन, जल, आवास एवं परिवहन की सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

प्रश्न 1. पठार के ऊपर की सतह होती है?

क) समतल ख) गोल ग) नुकीली

प्रश्न 2. कौन से स्थल रूप में जनसंख्या अधिक रहती है?

क) पहाड़ ख) मैदान ग) पठार

प्रश्न 4. संसार की ज्यादातर जनसंख्या मैदानी इलाकों में क्यों रहती है?

प्रश्न 5.. सड़क निर्माण कार्य किस स्थलरूप में आसान होगा और क्यों?

प्रश्न 6. एटलस में छोटा नागपुर का पठार और दक्कन का पठार देखिए और उसे भारत के खाली मानचित्र में दर्शाइए।

कार्यपत्रक संख्या: 08

विद्यार्थीकानाम:_____

भारत: जलवायु, वनस्पति तथा वन्यजीव

अधिगम सम्प्राप्ति

ऋतु और जलवायु में अन्तर बता पाएँगे तथा भारत के विभिन्न मौसम के विषय में बताने में समर्थ होंगे।

- आप गरम कपड़े किस मौसम में पहनतेहो?
- आप पूरा वर्ष गरम कपड़े पहनते हैं? यदि नहीं तो क्यों? पूरे वर्ष हम गरम कपड़े नहीं पहनते क्यों कि गरम कपड़े सिर्फ सर्दी में पहने जाते हैं और भारत में पूरा साल सर्दी नहीं होती।

मौसम: वायुमंडल में दिन प्रतिदिन होने वाले परिवर्तन को मौसम कहते हैं। इसमें तापमान, वर्षा तथा सूर्य का विकिरण शामिल है। उदाहरण के लिए यदि तापमान ज्यादा है और सूर्य की किरणें लंबवत् पड़ रही है तो गर्मी होगी। इसके विपरीत यदि तापमान कम है और सूर्य की किरणें भी तिरछी पड़ रही हो तो सर्दी का मौसम होगा।

भारत में प्रमुख मौसम या ऋतु: जब लंबे समय से एक ही तरह का मौसम रहता है तो उसे ऋतु कहा जाता है। भारत में प्रमुख रूप से चार ऋतु या मौसम होते हैं।

शीतऋतु: दिसंबर से फरवरी तक का ठंडा मौसम शीत ऋतु माना जाता है। इस समय सूर्य की किरणें उत्तर भारत में लंबवत् नहीं पड़ती जिससे पूरे उत्तर भारत में सर्दी का मौसम रहता है।

ग्रीष्मऋतु: मार्च से मई तक का गर्म मौसम को ग्रीष्म ऋतु कहा जाता है। इस समय सूर्य की किरणें अधिकतर सीधी पड़ती है जिसके कारण तापमान बहुत अधिक हो जाता है।ग्रीष्म ऋतु में दिन में चलने वाली गर्म और शुष्क हवाओं को लू कहा जाता है।

वर्षाऋतु: जून से सितंबर तक वर्षा ऋतु मानी जाती है। इस समय पवन (हवा) बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर से स्थल की ओर चलती है और अपने साथ नमी भी लाती है। जब यह पहाड़ों से टकराती है तब वर्षा हो जाती है। दक्षिण पश्चिम से पवनों के चलने के कारण इस ऋतु को दक्षिण पश्चिम मानसून भी कहा जाता है।

शरद ऋतु या मानसून के लौटने का मौसम : अक्टूबर से नवंबर में पवनेंस्थल भागों से लौटकर बंगाल की खाड़ी की तरफ बहती है तो इसे शरद ऋतु माना जाता है। इस ऋतु में ना अधिक सर्दी होती है और ना ही अधिक गर्मी। पवनों के वापस लौटने के कारण इसे मानसून के लौटने का मौसम भी कहा जाता है।

जलवायु: जलवायु भी मौसम से ही संबंधित शब्द है। मौसम में जहां वायुमंडल में दिन प्रतिदिन होने वाले परिवर्तन को देखते हैं वहीं जलवायु किसी स्थान पर अनेक वर्षों में मापी गई मौसम की औसत दशा को कहतेहैं।

भारत की जलवायु: भारत की स्थिति उष्ण कटिबंध में होने के कारण अधिकतर वर्षा मानसूनी पवन से होती है। इसलिए भारत की जलवायु को मानसूनी जलवायु भी कहा जाता है। किसी भी स्थान की जलवायु उसकी स्थिति ,ऊंचाई, समुद्र से दूरी तथा उच्चावच पर निर्भर करती है। भारत की भौगोलिक विभिन्नताओं के कारण यहां की जलवायु में भी क्षेत्रीय अंतर देखने को मिलता है। राजस्थान के मरुस्थल में स्थित जैसलमेर तथा बीकानेर बहुत गर्म स्थान है, जबकि कश्मीर के द्रास और कारगिल में बर्फीली ठंड पड़ती है। तटीय क्षेत्र जैसे मुंबई और कोलकाता समुद्र तट पर होने के कारण बहुत अधिक आर्द्र हैं और इन क्षेत्रों में नाअधिक गर्मी होती है और ना ही अधिक ठंडाविश्व में सबसे अधिक वर्षा मेघालय में स्थित मासिनराम में होती है।

विश्व में सबसे अधिक वर्षा मेघालय में स्थित मासिनराम में होती है।

प्रश्न 1. भारत में दीपावली किस ऋतु का त्योहार है?

प्रश्न 2. गर्मी के मौसम के किन्ही पांच फलों के नाम लिखिए।

प्रश्न 3. जलवायु को प्रभावित करने वाले कारणों को बताइए।

प्रश्न 4. मिलान कीजिए-

(क) ग्रीष्मऋतु	छाता, बरसाती
(ख) वर्षाऋतु	स्वेटर, टोपी, दस्ताने
(ग) शीतऋतु	आइसक्रीम, ठंडे पेयजल

कार्यपत्रक संख्या: 09

विद्यार्थीकानाम:_____

भारत: जलवायु, वनस्पति तथा वन्यजीव

अधिगम सम्प्राप्ति

विद्यार्थी प्राकृतिक वनस्पति को समझेंगे और वनों की उपयोगिता को जानेंगे।

प्यारे बच्चों! पिछले कार्यपत्रक में हमने पढ़ा था कि भारत की जलवायु में क्षेत्रीय विभिन्नता देखने को मिलती है। जलवायु की विभिन्नता के कारण ही भारत में वनस्पति में भी विभिन्नता होती है। आओ हम देखें कि भारत में किस तरह की वनस्पति पाई जाती है?

प्राकृतिक वनस्पति : ऐसी घास, पौधे तथा झाड़ियाँ जो मनुष्य की सहायता के बिना ही उपजते हैं, उन्हें प्राकृतिक वनस्पति कहा जाता है। भारत में अलग-अलग जलवायु के अनुसार अलग-अलग वनस्पति पाई जाती है। इसमें वर्षा की भूमिका सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। कुछ पौधे छोटे होते हैं जिन्हें झाड़ी कहा जाता है जैसे, कैक्टस या फूल वाले पौधे आदि। कुछ लंबे होते हैं जिसमें पत्तियों की मात्रा अधिक होती है, जैसे नीम, आम, जामुन आदि। ऐसे वृक्ष भी होते हैं जो लंबे होते हैं, परंतु उनमें पत्तियाँ बहुत कम होती हैं, जैसे नारियल।

चित्र-19

वनों के लाभ : वनों से अनेक लाभ हैं-

प्रत्यक्ष लाभ :

- वनों से हमें लकड़ी, चारा , जड़ी बूटियाँ, लाख ,शहद , गोंद , दवाइयाँ, फल सब्जियाँ आदि मिलते हैं।

अप्रत्यक्ष लाभ : वनों से हमें ऑक्सीजन मिलती है। वह वन्यजीवों के निवास स्थान है। वह मृदा के अपरदन को रोकते हैं। वनों से बाढ़ का खतरा भी कम होता है।

वनों की सुरक्षा: वनों के अनगिनत लाभ हैं परंतु मनुष्य अपने स्वार्थ में इन की अंधाधुंध कटाई करने में लगा है, जबकि हमें इन्हें बचाना चाहिए। सरकार ने भी इन को सुरक्षित रखने के लिए कई उपाय किए हुए हैं।

वन्यजीव: वन विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों का निवास होता है। वनों में विभिन्न प्रकार के जंतुओं की प्रजातियां तथा विभिन्न प्रकार के सरीसृपों, उभयचरों, पक्षियों, स्तनधारियों, कीटों तथा कृमियों का निवास होता है।

भारत मे कई प्रकार के जानवर पाए जाते है। गुजरात के गिर वन में एशियाई शेरों का निवास है। हाथी तथा एक सींग वाले गैंडे असम के जंगलों में घूमते हैं। हाथी केरल एवं कर्नाटक में भी मिलते हैं।ऊंट भारत के रेगिस्तान में पाए जाते हैं। जंगली बकरी, तेंदुआ, भालू इत्यादि हिमालय के क्षेत्र में पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त बहुत से जानवर जैसे बंदर, शेर, भेड़िया, नीलगाय, चीतल इत्यादि भी भारत में पाए जाते हैं। बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु है।

इसी तरह भारत में पक्षी तोता, मैना, कबूतर, बुलबुल तथा बत्तख आदि पाए जाते हैं। बहुत सारे राष्ट्रीय पक्षी उद्यान भी हैं जो पक्षियों को उनका प्राकृतिक निवास प्रदान करते हैं। मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।भारत में सांपों की भी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं। उनमें कोबरा एवं करैत प्रमुख हैं।

वन्य जीवों का संरक्षण : जानवरों को सुरक्षा देने के लिए बहुत से नेशनल पार्क, पशु विहार तथा जीव मंडल आरक्षित क्षेत्र स्थापित किए गए हैं। सरकार ने हाथियों तथा बाघों को बचाने के लिए बाघ परियोजना एवं हस्ती परियोजना जैसी परियोजनाओं को शुरू किया है। हम भी अपने जीवों के संरक्षण में या उनकी सुरक्षा के लिए हाथ बंटा सकते हैं । हमें जानवर के शरीर के विभिन्न अंगों से बने पदार्थों को खरीदने से इंकार कर देना चाहिए। हमारे देश में प्रतिवर्ष अक्टूबर के पहले सप्ताह को वन्य जीव सप्ताह के रूप में भी मनाया जाता है ताकि लोगों के बीच वन्य जीवों को बचाने के लिए जागरूकता लाई जा सके।

प्रश्न 1. अपने इलाके में पाए जाने वाले 5 पेड़ों के नाम लिखिए।

प्रश्न 2. (i) विश्व में सबसे अधिक वर्षा वाला क्षेत्र कौन-सा है?

(क) मुंबई (ख) आसनसोल (ग) मासिनराम

प्रश्न 3. खाली स्थान भरें।

1. गर्मी में दिन के समय गर्म और शुष्क पवने चलती हैं, जिसे --------- कहा जाता है।

2. गुजरात के --------- वन में --------- का निवास है।

3. भारत का राष्ट्रीय पशु------- है।

प्रश्न 4. वन हमारे लिए किस तरह उपयोगी हैं?

प्रश्न 5. अपने बड़ों से पता करो कि लोग वनों की कटाई क्यों करते हैं?

कार्यपत्रक संख्या: 10

विद्यार्थी का नाम _____

सौरमंडल में पृथ्वी

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के पश्चात् विद्यार्थी सूर्य, ग्रहों तथा तारों के बारे में बता पाएंगे तथा उनमें अंतर कर पाएंगें।

क्रियाकलाप 1

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए कि आप दिन तथा रात के समय आकाश में क्या-क्या देखते हैं?

रात में	दिन में
1.....	1.....
2.....	2.....

प्रश्न 1- रात के समय दिखाई देने वाले खगोलीय पिंड जैसे - तारे, चंद्रमा हमें दिन के समय क्यों नहीं दिखाई देते ?

_____

_____

_____

सूर्य- सूर्य एक तारा है जो दिन के समय हमें दिखाई देता है। उसके पास अपनी ऊष्मा तथा प्रकाश होता है यह अपनी उष्मा तथा प्रकाश ग्रहों को देता है पृथ्वी उनमें से एक है। दिन में सूर्य के अत्याधिक प्रकाश के कारण अन्य खगोलीय पिंड हमें दिखाई नहीं देते।

चित्र-1

चित्र-2

प्रश्न 2 -रिक्त स्थान भरिए-

(क) सूर्य एक_____ है।

(ख) दिन में_____ के प्रकाश के कारण हमें खगोलीय पिंड दिखाई नहीं देते।

(ग) सूर्य के पास अपनी _____ और _____ है।

(घ) सूर्य अपनी ऊष्मा और प्रकाश _____ को देता है।

ग्रह- "ये वह खगोलीय पिंड हैं, जिनके पास अपनी ऊष्मा तथा प्रकाश नहीं होता और यह इन्हें सूर्य से प्राप्त करते है। यह सूर्य की परिक्रमा भी करते हैं। सूर्य की परिक्रमा का यह रास्ता निश्चित होता है और इसे कक्षा कहते हैं। ग्रह आठ हैं - बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति ,शनि, यूरेनस,नेपच्यून। हमारी पृथ्वी भी एक ग्रह है।

तारे- जिन खगोलीय पिंडों के पास अपनी ऊष्मा तथा प्रकाश होता है तथा जिसे वे उत्सर्जित करते रहते हैं, उन्हें, तारे कहते हैं। बहुत सारे तारे मिलकर तारा मंडल बनातेहैं। जैसे तारों का समूह - सप्तऋषि जिसमें सात तारे होते हैं। ध्रुव तारा उत्तर दिशा को दर्शाता है।

प्रश्न 3- सुमेल कीजिए।

क) सूर्य	1. सूर्य की परिक्रमा
ख) ग्रह	2. तारों का समूह
ग) सप्तऋषि	3. तारा

प्रश्न 4- ग्रहों तथा तारों में क्या अंतर है?

_____

_____

_____

प्रश्न 5- सूर्य से दूरी के अनुसार ग्रहों के नाम लिखिए?

_____

_____

_____

प्रश्न 6- वह कौन सा तारा है जो दिन में चमकता है?

_____

_____

_____

प्रश्न 7- तारामंडल किसे कहते हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 8- सात तारों के समूह को क्या कहते हैं?

_____

_____

नए शब्द

ऊष्मा - गर्मी

प्रकाश - रोशनी

खगोलीय पिंड - रात के समय आकाश में चमकने वाली वस्तुएँ

कक्षा – सूर्य की परिक्रमा करने वाले ग्रहों का रास्ता।

कार्यपत्रक संख्या: 11

विद्यार्थी का नाम _____

सौरमंडल में पृथ्वी

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के पश्चात् विद्यार्थी पृथ्वी एक अद्भुत ग्रह के बारे में बता पाएंगे |

आप अपने परिवार के सभी सदस्यों के नाम तथा उनसे आपका क्या संबंध है यह आप भलीभाँति जानते हैं| यही नहीं अपने पासपड़ोस के लोगों के नाम भी आपको पता होंगे तो जिस पृथ्वी पर हम रहते हैं उसके बारे में और उसके जैसे अन्य ग्रहों के बारे में भी आपको जानकारी होनी चाहिए|

सौरमंडल

सूर्य का अपना एक परिवार है जिसे हम सौरमंडल कहते हैं जिसके सदस्य हैं - सूर्य, ग्रह, उपग्रह, क्षुद्र ग्रह तथा उल्कापिंड| सूर्य सौरमंडल के केन्द्र में स्थित है तथा इसमें आठ ग्रह सूर्य से दूरी के अनुसार हैं - बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस तथा नेप्च्यून|

चित्र-1

क्रियाकलाप २

अब आप यह जानते हैं कि सूर्य ही ग्रहों पर ऊष्मा तथा प्रकाश को देने वाला है तो सूर्य से दूरी के अनुसारकौन सा ग्रह सबसे गर्म तथा सबसे ठण्डा होगा इस पर चर्चा कीजिए|

पृथ्वी :

एक अद्भुत ग्रह - पृथ्वी जहाँ हम रहते हैं सूर्य से दूरी के हिसाब से तीसरे स्थान पर आता है। सभी आठ ग्रहों में से पृथ्वी एक अद्भुत ग्रह है। अद्भुत इसलिए कि केवल पृथ्वी पर ही जीवन है। यहाँ उचित मात्रा में जल भी है तथा वायु भी यहां ना तो ज्यादा गर्मी होती हैं और ना ही ज्यादा सर्दी। जल होने के कारण पृथ्वी अंतरिक्ष से नीली दिखाई देती है।

प्रश्न 1- कल्पना कीजिए कि यदि पृथ्वी जैसे ही किसी अन्य ग्रह पर आपको रहना हो तो उस ग्रह पर आपको जीवित रहने के लिए क्या चीजें जरूरी होगी |

_____

_____

_____

उपग्रह-

जो ग्रहों के चारों ओर चक्कर लगाते हैं वे खगोलीय पिंड उपग्रह कहलाते हैं। हमारी पृथ्वी का भी एक उपग्रह हैं चन्द्रमा। यह हमारी पृथ्वी से छोटा है परंतु नजदीक होने के कारण इतना बड़ा दिखाई देता है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भी उपग्रह हैं। सबसे ज्यादा उपग्रहों वाला ग्रह शनि है जिसके ३० से अधिक उपग्रह हैं। कुछ उपग्रह वैज्ञानिकों द्वारा पृथ्वी पर संचार माध्यम के लिए तथा ब्रह्मांड की जानकारी के लिए भी रॉकेट द्वारा अंतरिक्ष में भेजकर पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किए गये हैं जैसे- इनसेट, आइ आरएस , एडुसेट आदि |

प्रश्न 2- वाक्यों को सही करके लिखिए –

क) सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने वाले खगोलीय पिंड उपग्रह कहलाते हैं।

ख) पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य ग्रहों पर भी जीवन संभव हैं।

ग) चन्द्रमा पृथ्वी से बड़ा उपग्रह है।

क्षुद्रग्रह-

मंगल तथा बृहस्पति ग्रहों की कक्षाओं के बीच ग्रहों से टूटकर अलग हुए टुकड़ों को ही क्षुद्रग्रह कहते हैं। ये भी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं और सौरमंडल का हिस्सा हैं।

उल्कापिंड-

पत्थर के वो छोटे-छोटे टुकड़े जो सूर्य के चारोओर चक्कर लगाते हैं उन्हे उल्कापिंड कहते हैं। ये कई बार पृथ्वी के इतने नजदीक आ जाते हैं कि वायु के साथ घर्षण होने पर ये गर्म होकर पूरी तरह बिना जले पृथ्वी पर गिरते हैं और जिससे वहाँ गड्ढे बन जाते हैं|

आकाशगंगा -

हमारा सौरमंडल आकाशगंगा का एक भाग है| आकाश गंगा लाखों तारों का समूह है| यह आकाश में बहती हुई नदी की तरह दिखाई देती है इसलिए इसका नाम आकाशगंगा पड़ा था। इसमें करोड़ों तारे, बादल तथा गैसें होती हैं। लाखों आकाशगंगाएँ मिलकर ब्रह्मांड को बनाती हैं। ब्रह्मांड आज भी वैज्ञानिकों के लिए एक रहस्य है क्योंकि इसके बारे में हमारे पास कम जानकारी है |

क्रियाकलाप 3 - निम्नांकित प्रवाह चार्ट द्वारा यह समझा जा सकता है कि हम ब्रह्मांड से किस प्रकार जुड़े हुए हैं।

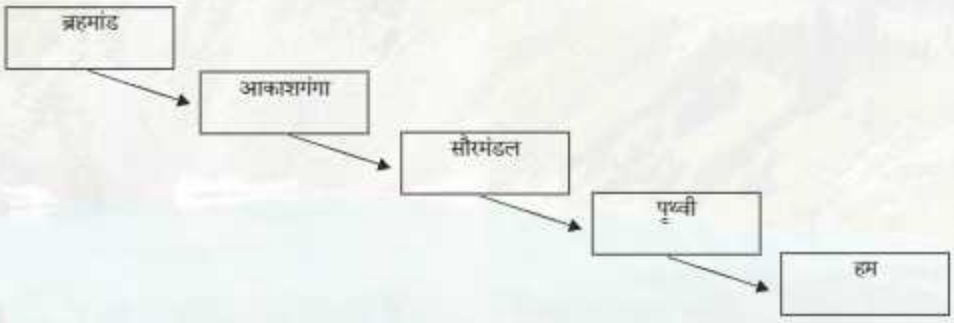

चित्र-2

प्रश्न 3- मिलान कीजिए

क) सौरमंडल का केन्द्र	1) लाखों तारों का समूह
ख) चन्द्रमा	2) सूर्य
ग) आकाशगंगा	3) मंगल तथा बृहस्पति की कक्षाओं के बीच के टुकड़े
घ) क्षुद्र ग्रह	4) पृथ्वी का उपग्रह

प्रश्न 4- पृथ्वी एक अद्भुत ग्रह कैसे है?

प्रश्न 5- खगोलीय पिंड किसे कहते हैं?

प्रश्न 6- सबसे अधिक उपग्रहों वाला ग्रह कौन सा है और उसके कितने उपग्रह हैं?

प्रश्न 7- वैज्ञानिकों द्वारा अंतरिक्ष में भेजे गए उपग्रहों के नाम लिखिए।

प्रश्न 8- आकाशगंगा किसे कहते हैं?

कार्यपत्रक संख्या: 12

विद्यार्थी का नाम _____

पृथ्वी की गतियाँ

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के पश्चात् विद्यार्थी दिन तथा रात का बनना बता पाएंगे।

क्रियाकलाप 1

दिन तथा रात में प्रमुख अंतर क्या हैं इन्हें नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए –

दिन	रात
1.....	1.....
2.....	2.....

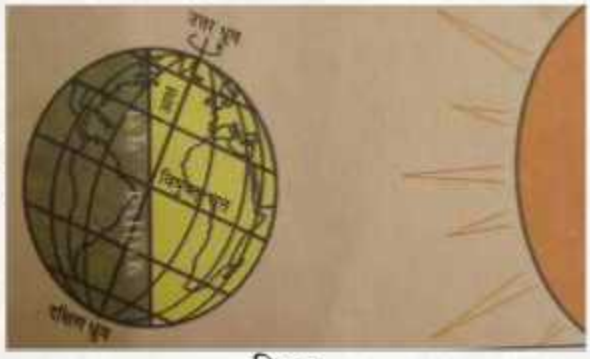

चित्र-1

पाठ -सौरमंडल में पृथ्वी में हमने जाना कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है तथा अन्य ग्रह भी ऐसा करते हैं। यही पृथ्वी की गति कहलाती है परंतु पृथ्वी अपने अक्ष पर भी घूमती है तो मुख्यतः पृथ्वी की दो गतियाँ हैं

1. घूर्णन
2. परिक्रमण

घूर्णन गति-

पृथ्वी अपने अक्ष पर 23.5° झुकी हुई है। इसी झुकी हुई अवस्था में पृथ्वी जब अपने अक्ष पर घूमती है, तो इसे घूर्णन कहा जाता है। पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर घूमते हुए 23 घंटे, 56 मिनट' 4 सेकंड का समय लगता है। पृथ्वी लगभग गोल है इसलिए एक समय में सिर्फ इसके आधे भाग मे सूर्य की रोशनी होती है जिसे हम दिन कहते हैं जबकि दूसरे आधे भाग पर अंधेरा होता है जिसे हम रात कहते हैं। ग्लोब पर वह वृत्त जो दिन और रात को बांटता है उसे प्रदीप्ति वृत्त कहते हैं। यह वृत अक्ष से अलग होता है। घूर्णन में 24 घंटे का जो समय लगता है उसे ही पृथ्वी की दैनिक गति कहते हैं।

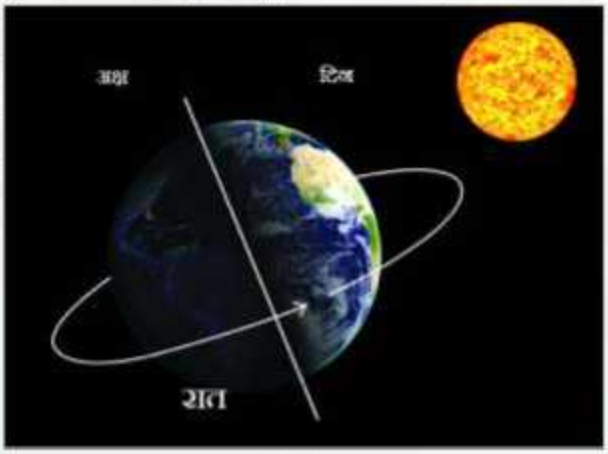

चित्र-5

प्रश्न- सही उत्तर को चिन्हित कीजिए-

1) पृथ्वी अपने अक्ष पर झुकी हुई है
(क) 23.5° (ख) 66.5° (ग) 0°

2) पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूमना कहलाता है –
(क) घूर्णन (ख) परिक्रमण

3) पृथ्वी अपने अक्ष पर पश्चिम दिशा से _____ दिशा की ओर घूमती है|
(क) उत्तर (ख) दक्षिण (ग) पूर्व

प्रश्न- नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति या एक शब्द मे दीजिए-

1) कल्पना कीजिए कि यदि पृथ्वी घूर्णन नहीं करे तो इसका क्या प्रभाव होगा?

2) घूर्णन मे पृथ्वी को कितना समय लगता है?

3) प्रदीप्ति वृत किसे कहते हैं?

कार्यपत्रक संख्या: 13

विद्यार्थी का नाम _____

पृथ्वी की गतियाँ

अधिगम सम्प्राप्ति

कार्यपत्रक को करने के पश्चात विद्यार्थी, ऋतुएँ कैसे बनती है यह बता पाएंगे|

परिक्रमण-

पृथ्वी की दूसरी गति है सूर्य के चारों ओर घूमना जिसे परिक्रमण कहते हैं। सूर्य के चारों ओर एक चक्कर पूरा करने में पृथ्वी को एक वर्ष या 365 दिन और ६ घंटे का समय लगता है। हम अपनी सुविधा के लिए एक वर्ष = 365 दिन का मानते है और 6 घंटे का समय चार वर्ष बाद जोड़कर एक दिन यानि 24 घंटे के बराबर कर लेतेहैं और इस एक दिन से चौथे वर्ष फरवरी महीने के 28 के बदले 29 दिन बना दिए जाते हैं। ऐसा वर्ष जिसमें 366 दिन होते हैं उसे लीप वर्ष कहा जाता हैं| पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करते हुए भी अपने अक्ष पर झुकी रहती हैं।

प्रश्न- मिलान कीजिए

क) परिक्रमण	1) 24 घंटे
ख) 1 दिन	2) 365 दिन
घ) 1 वर्ष	3) सूर्य की पृथ्वी द्वारा परिक्रमा
ग) लीप वर्ष	4) 366 दिन

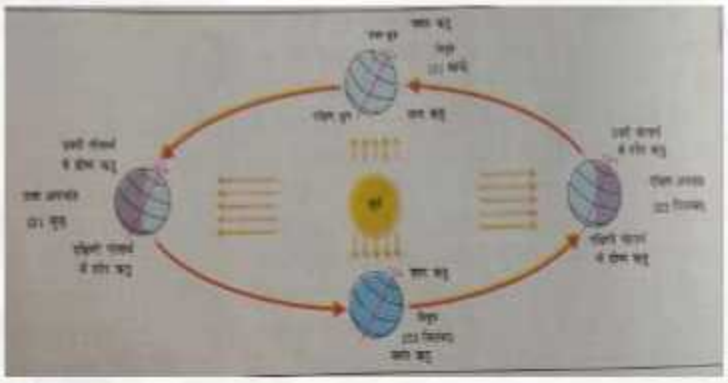

चित्र-1

ऋतुओं का बनना -

परिक्रमण के समय पृथ्वी की स्थिति में बदलाव होने से ही ऋतुएँ बनती हैं। एक वर्ष के दौरान हमें गर्मी, सर्दी, बसंत और शरद ऋतुएँ देखने को मिलती है। ऋतुओं मे जो भी बदलाव होता है वो सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की स्थिति बदलने की वजह से ही होता है|

क्रियाकलाप 1

नीचे दिए गए चित्र की सहायता से ऋतुओ के बदलने के क्रम को आप आसानी से समझ सकते है।

21 जून को उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुका हुआ है और सूर्य की किरणें कर्क रेखा पर लम्बवत पड़ती हैं अतः यहाँ उत्तरी ध्रुव के झुकाव के कारण गर्मी की ऋतु होती है। 21 जून को इन क्षेत्रों में सबसे लंबा दिन तथा सबसे छोटी रात होती है| पृथ्वी की इस अवस्था को **उत्तर अयनांत या उत्तरायण** कहा जाता है|

22 दिसम्बर को दक्षिण ध्रुव के सूर्य की ओर झुके होने के कारण मकर रेखा पर सूर्य की किरणें लम्बवत पड़ती है अतः यहाँ दक्षिणी गोलार्द्ध में लंबे दिन तथा छोटी रातों वाली ग्रीष्म ऋतु होती है। इस अवस्था को **दक्षिण अयनांत या दक्षिणायन** कहते हैं।

21 मार्च एवं 23 सितम्बर को कोई भी ध्रुव सूर्य की ओर झुका हुआ नहीं है और सूर्य की किरणें विषुवत वृत पर सीधी पड़ती हैं। पूरी पृथ्वी पर रात व दिन बराबर होते हैं। इसे **विषुव** कहा जाता हैं।

23 सितम्बर को उत्तरी गोलार्द्ध में शरद ऋतु होती है और दक्षिणी गोलार्द्ध में बसंत ऋतु। ठीक इसके विपरीत 21 मार्च को उत्तरी गोलार्द्ध में बसंत तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में शरद ऋतु होती है।

क्रियाकलाप 2

नीचे दिए गए चित्र में निम्नलिखित शब्दों को दर्शाये-

सूर्य, पृथ्वी, उत्तरी ध्रुव, दक्षिणी ध्रुव, मकर रेखा, कर्क रेखा

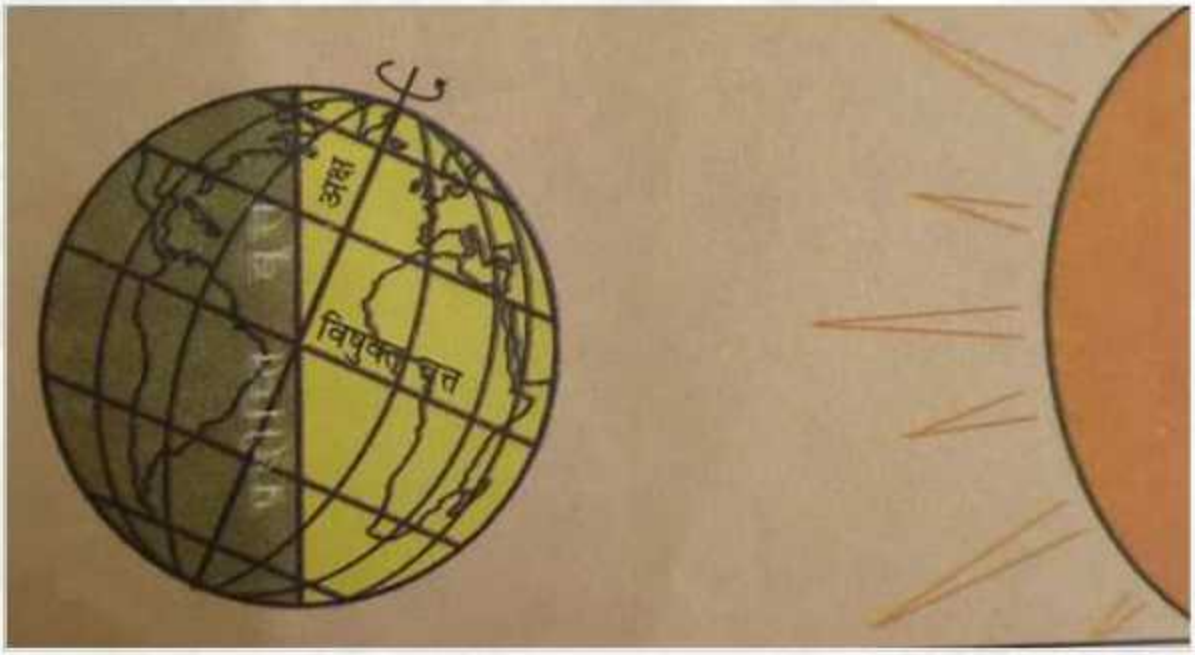

चित्र-7

अ) प्रश्न - रिक्त स्थान भरिए-

क) 21 जून को सूर्य की किरणें _____ रेखा पर लम्बवत पड़ती हैं।

ख) 22 दिसम्बर को दक्षिणी गोलार्द्ध में लंबे _____ तथा छोटी _____ वाली ग्रीष्म ऋतु होती है।

ग) लीप वर्ष में _____ दिन होते हैं।

घ) एक वर्ष मे हमे गर्मी, सर्दी, बसंत और _____ ऋतुए देखने को मिलती है।

ब) प्रश्न –नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

1 –एक वर्ष में कितने दिन होते है?

2 –लीप वर्ष में फरवरी महीने में 29 दिन क्यों होते हैं?

3 –उत्तरायण किसे कहतेहैं?

4 –विषुव किसे कहते हैं?

5 – दक्षिण गोलार्द्ध में जब लंबें दिन और छोटी रातें होती हैं तो इस अवस्था को क्या कहते हैं?

कार्यपत्रक संख्या: 14

विद्यार्थी का नाम _____

पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के पश्चात विद्यार्थी विश्व के मानचित्र पर महाद्वीपों और महासागरों को चिन्हित कर पाएंगे|

क्रियाकलाप 1

पृथ्वी पर जिंदा रहने के लिए किन चीजों की हमें जरूरत होगी , नीचे दिए रिक्त स्थानों में लिखिए-

1 _____

2 _____

3 _____

4 _____

5 _____

भूगोल के पहले पाठ सौरमंडल में पृथ्वी में आप पढ़ चुके हो कि हमारी पृथ्वी एक अनोखा और अद्भुत ग्रह है। यहाँ पर्याप्त मात्रा में जल भी है और वायु भी। ना ज्यादा गर्मी हैं ना ज्यादा सर्दी|

क्रियाकलाप 2

चलिए आप अपनी ही कक्षा के बाकी विद्यार्थियों के साथ चर्चा करके बताइए कि क्या उन्होंने कभी किसी ऐसे ग्रह का नाम सुना या पढ़ा है जो बिलकुल पृथ्वी की तरह ही जल , वायु , पेड़ - पौधों से भरा हो। मनुष्य पृथ्वी पर इसलिर जिंदा रह सकता है क्योंकि यहाँ हमारे सांस लेने के लिए वायु में ऑक्सीजन गैस है जो हमें पेड़ों से मिलती है। इन्ही पेड़ों को उगाने के लिए भूमि है और जल भी हैं जो हमारे लिए तथा पेड़ पौधों के लिए भी जरूरी है| हवा, पानी, तथा भूमि से घिरा हुआ यह क्षेत्र ही पर्यावरण कहलाता है अर्थात जो हमारे चारों और है।

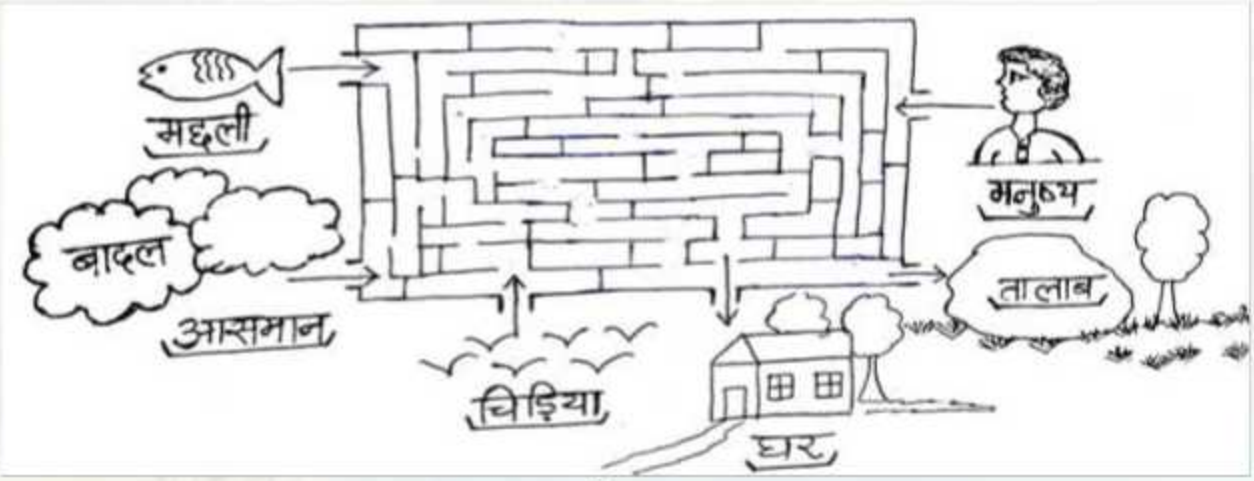

चित्र-8

क्रियाकलाप 3

ऊपर दिए गए चित्र में मछली को तालाब में, चिड़िया को आसमान तथा मनुष्य को घर में भेजिए | अब आप यह जान गए होंगे कि हमारा जो पर्यावरण हैं उसमें भूमि , जल तथा वायु यह तीन महत्वपूर्ण हिस्से हैं | भूमि वह ठोस हिस्सा है जिस पर हम रहते हैं , घर बनाते हैं, सड़के बनाते हैं इसे भूमंडल कहते हैं। इसी तरह पृथ्वी के चारों और जो गैस की परतें इसे घेरे हुए है उस हिस्से को हम वायुमंडल कहते है तथा जिस हिस्से मे जल पाया जाता है उसे जलमंडल कहते है।

क्रियाकलाप 3 में मछली जिस तालाब में रहती है वह जलमंडल का भाग है , चिड़िया जो आसमान मैं उड़ती हैं वह आसमान वायुमडल का हिस्सा हैं तथा मनुष्य जिस घर में रहता हैं वह भूमंडल का हिस्सा है। इसी प्रकार वह क्षेत्र जहाँ भूमि, जल और वायु एक साथ मिलते हैं उस क्षेत्र को जीवमंडल कहते हैं यहाँ सभी प्रकार का जीवन पाया जाता है। अत : पृथ्वी के चार परिमंडल हैं :

1. भूमंडल 2. जलमंडल 3. वायुमंडल 4. जीवमंडल

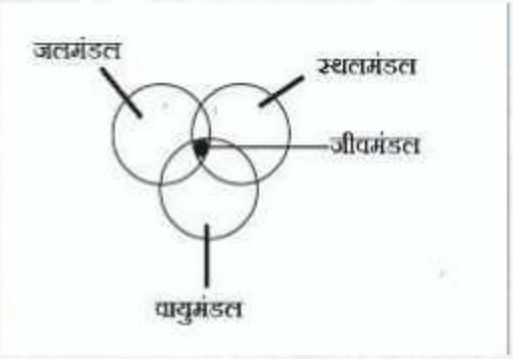

चित्र-9

प्रश्न1 मिलान कीजिए–

क वायुमंडल	1. नदी
ख जलमंडल	2. आसमान
ग भूमंडल	3. घर

प्रश्न 2 नीचे दिए गए शब्दों को छाँट कर रिक्त स्थानों में भरिए-------

ऑक्सीजन, समुद्र, घर और खेत, जीवमंडल

1. _____ जलमंडल में आता है|

2. वायुमंडल में _____ गैस को हम सांस लेते हुए अपने शरीर में पहुँचातेहैं|

3. _____ पृथ्वी के चार परिमंडलों में से एक भूमंडल में आते हैं|

4. जहां सभी प्रकार का जीवन पाया जाता है उसे _____ कहते हैं|

प्रश्न 3: पृथ्वी अद्भुत ग्रह क्यों हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 4: पर्यावरण किसे कहते हैं?

_____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या: 15

विद्यार्थी का नाम _____

पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के पश्चात विद्यार्थी विश्व के मानचित्र पर महाद्वीपों और महासागरों को चिन्हित कर पाएंगे।

क्रियाकलाप 1 - कक्षा में चर्चा

*आप जिस नगर या शहर में रहते हैं उसका नाम बताइए।

* आपका घर उस नगर के किस क्षेत्र में आता है?

* आपके घर के आसपास कोई दुकान, बाजार, मंदिर, खेत, मॉल या कोई फैक्टरी है?

भूमंडल-

पृथ्वी के ठोस भाग को भूमंडल कहते हैं। पृथ्वी के इस भाग पर जहाँ हम रहते हैं, दुकानें, बाजार मंदिर, खेत या फैक्टरी बनाते हैं वह हमारी पृथ्वी की ऊपरी ठोस परत है जो कि चट्टानों और मिट्टी की पतली परत से बनी होती है। इसी परत पर गाँव, शहर, जंगल, मैदान और पहाड़ (पर्वत) होते हैं। इसी परत पर खेती करके फसलें उगाई जाती हैं, खनिज जैसे-लोहा, कोयला आदि भी निकाला जाता है। पशुओं के लिए भोजन भी इसी परत पर उगता है। पृथ्वी की इस परत या सतह को दो भागों में बाँटा जा सकता है

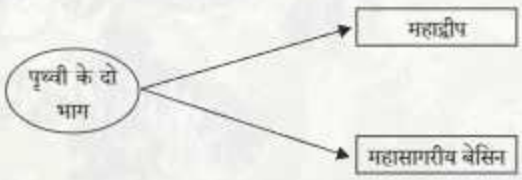

पृथ्वी के बड़े-बड़े भूभागों को महाद्वीप कहते हैं तथा बड़े जलाशयों को महासागर । सारे महासागर आपस में जुड़े हुए हैं। महासागरों का तल सभी जगह एकसमान है और जिसे शून्य माना जाता है। पृथ्वी पर समुद्र तल से सबसे ऊँचा पर्वत शिखर माऊंट एवरेस्ट 8848 मीटर ऊंचा है तथा सबसे गहरा भाग प्रशांत महासागर के तल से 11, 022 मीटर गहरी मेरियाना गर्त है।

चित्र-1

क्रियाकलाप 2 मैं और मेरा दोस्त

* आप जिस नगर में रहते हैं वह किस देश में आता है?

* आपके घर के आसपास या दूरी पर कक्षा में पढ़ने वाले किन दोस्तों का घर है?

जिस प्रकार आपका घर और आपके दोस्तों का घर आसपास या दूर है फिर भी आप एक दूसरे को जानते हो इसी प्रकार हमें अपने नगर, देश तथा जिस महाद्वीप में हमारा देश आता है उसके बारे में भी जानना चाहिए। तो आइए जानते हैं कि पृथ्वी पर महाद्वीप कितने हैं तथा कहाँ कहाँ पर हैं?

महाद्वीप - संसार में सात प्रमुख महाद्वीप हैं - एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तर अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका। नीचे दिए गए मानचित्र के द्वारा आपको इनकी स्थिति समझ आ जाएगी

चित्र-2 (स्रोत: विकिपीडिया)

प्रश्न 1 – भूमंडल किसे कहते हैं?

प्रश्न 2 - महाद्वीपों तथा महासागरों में एक अंतर बताइए।

प्रश्न 3 - सबसे ऊँचे पर्वत शिखर का नाम बताइए

प्रश्न 4 – पृथ्वी के सबसे गहरे स्थान का नाम बताइए।

प्रश्न 5 -सात महादीपों के नाम लिखिये

1. एशिया महाद्वीप संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है और यह पूर्वी गोलार्ध में स्थित है। एशिया के बीच से कर्क रेखा गुजरती है | एशिया और यूरोप महाद्वीपों को जोड़कर जो भूभाग बनता है उसे यूरेशिया कहते है। यूरोप एशिया के पश्चिमी दिशा में है और यहीं पर स्थित यूराल पर्वत तथा यूराल नदी यूरोप को एशिया से अलग करते हैं। विश्व में घनी जनसंख्या वाले दो देश चीन तथा भारत इसी महाद्वीप में हैं।

2. यूरोप महाद्वीप विश्व का छठा बड़ा महादीप है तथा आर्कटिक वृत (गोला) इससे होकर गुजरता है यह तीन ओर से जल से घिरा है। संसार का सबसे बड़ा देश रूस तथा सबसे छोटा देश वेटिकन सिटी यहीं पर स्थित है। वोल्गा नदी यहाँ की सबसे लम्बी नदी है।

3. अफ्रीका महाद्वीप संसार का दूसरा सबसे बड़ा तथा एशिया के बाद आने वाला महाद्वीप है भूमध्य रेखा (0) या विषुवत वृत इसके बीचोंबीच गुजरती है तथा कर्क रेखा एवं मकर रेखा भी अफ्रीका महाद्वीप के अलग-अलग भागों से होकर गुजरती हैं। इस महाद्वीप पर संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान है, जिसे सहारा रेगिस्तान कहते हैं तथा सबसे लंबी नदी नील भी इसी महाद्वीप में ही बहती है।

4. उत्तर अमेरिका संसार का तीसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है जो तीन महासागरों से घिरा हुआ है। यह महाद्वीप प्रशांत,अटलांटिक तथा आर्कटिक महासागर से घिरा हुआ है ये महाद्वीप दक्षिण अमेरिका से बहुत ही संकरे (तंग) स्थान से जुड़ा है जिसे पनामा स्थलसंधि कहा जाता है।

5. दक्षिण अमेरिका संसार का चौथा बड़ा महाद्वीप है जो दक्षिणी गोलार्ध में स्थित है। इसके पूर्व में दो महासागर अटलांटिक तथा दक्षिणी महासागर हैं। यहाँ की सबसे लंबी नदी अमेजन तथा सबसे लंबी पर्वत श्रृंखला इंडीज है।

6. अंटार्कटिका संसार का पाँचवा बड़ा महाद्वीप तथा सबसे ठंडा महाद्वीप है। यह दक्षिणी गोलार्ध में है और दक्षिणी ध्रुव इसके बीचोंबीच स्थित है। इस महाद्वीप का 98% भाग बर्फ से ढका रहता है अतः इसे श्वेत (सफेद) महाद्वीप भी कहा जाता है। इस महाद्वीप पर मनुष्य नहीं रहते।

7. आस्ट्रेलिया संसार का सबसे छोटा महाद्वीप तथा सबसे बड़ा द्वीपीय देश है। इसके चारों और महासागर हैं। मकर रेखा उसके बीचों बीच गुजरती है। यह पूरी तरह से दक्षिणी गोलार्थ में स्थित है। यहाँ वर्षा कम होने से जल की बहुत कमी है।

क्रियाकलाप 3 -सबसे बड़ा कौन

क्षेत्रफल के हिसाब से देखते हुए सातों महाद्वीपों के नाम क्रमानुसार इन गोलो में लिखि

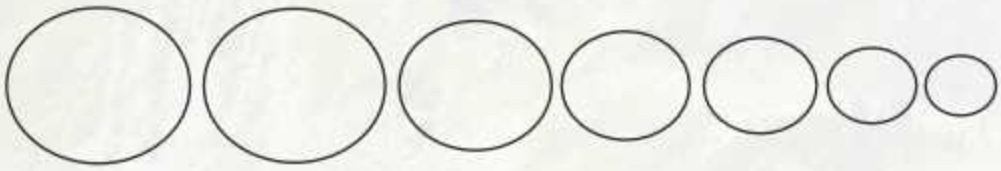

प्रश्न 1 - मिलान कीजिए -

1) चीन तथा भारत देश	क) उत्तरी अमेरिका
2) सहारा रेगिस्तान	ख) अंटार्कटिका
3) छठा बड़ा महाद्वीप	ग) अफ्रीका
4) अमेजन नदी	घ) ऑस्ट्रेलिया
5) पनामा स्थलसंधि	ङ.) एशिया
6) श्वेत महाद्वीप	च) दक्षिणी अमेरिका
7) चारों ओर महासागर	छ) यूरोप

प्रश्न 2 - विश्व (संसार) के मानचित्र पर महाद्वीपों के नाम लिखिए

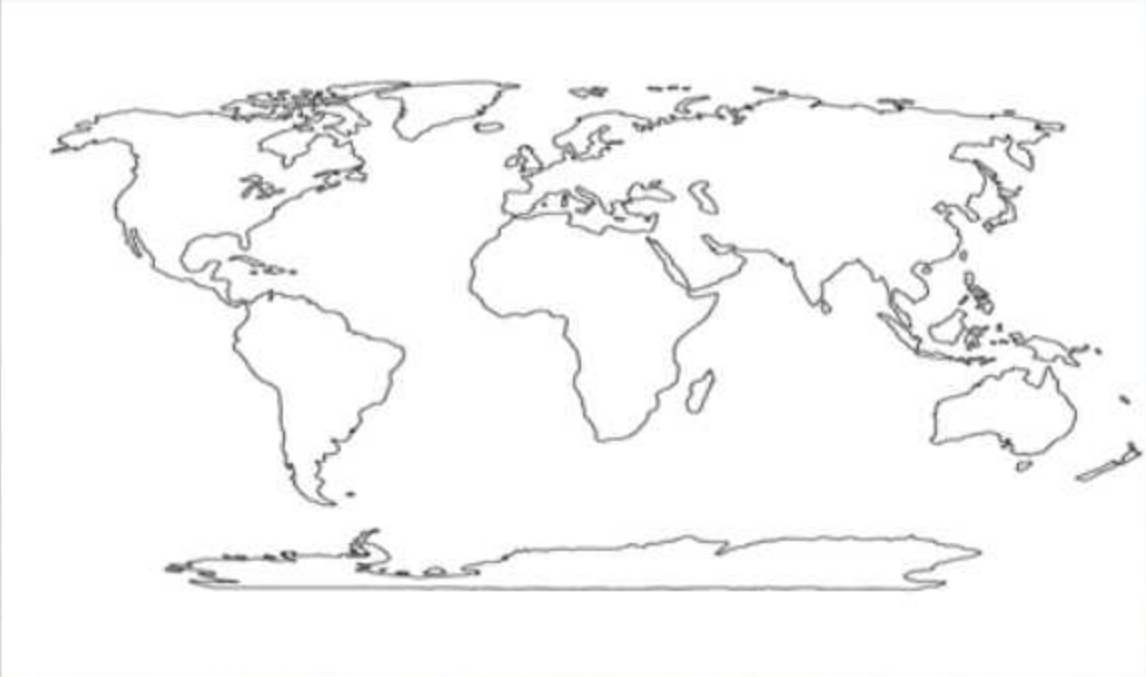

प्रश्न 3 - यूराल पर्वत तथा यूराल नदी किन दो महाद्वीपों को अलग करती हैं?

प्रश्न 4 - दो महाद्वीपों का नाम बताइए जो दक्षिणी गोलार्ध में स्थित है।

कार्यपत्रक संख्या: 16

विद्यार्थी का नाम _____

पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के पश्चात विद्यार्थी विश्व के मानचित्र पर महाद्वीपों और महासागरों को चिन्हित कर पाएंगे।

क्रियाकलाप 1 - कक्षा में चर्चा

* अपने रोजाना के जीवन में हम जल का प्रयोग किन कामों के लिए करते हैं ?
* पीने का जल हम तक कहाँ से और कैसे पहुंचता है?

जलमंडल

पाठ 'सौरमंडल में पृथ्वी' में आपने यह पढ़ा था कि पृथ्वी जल से घिरी होने के कारण अंतरिक्ष से नीले रंग की दिखाई देती है और इसे नीला ग्रह भी कहते हैं। पृथ्वी का 71% भाग जल से घिरा है। जल के विभिन्न रूप जैसे नदियां, झीलें, तालाब, सागर, (समुद्र) महासागर तथा जल के तीनों रूप ठोस, द्रव एवं गैस जहां शामिल हैं उस क्षेत्र को जलमंडल कहते हैं। जल का ठोस रूप बर्फ तथा हिमनद (बर्फ का बहुत बड़ा जमाव) हैं।

हमारी पृथ्वी पर पाए जाने वाला जल ज्यादातर महासागरों का खारा जल है जिसको हम प्रयोग नहीं कर सकते हैं। मानव उपयोगी जल बहुत कम मात्रा में बर्फ के रूप में, नदियों, झीलों तथा भूमिगत (जमीन के नीचे) जल के रूप में पृथ्वी पर मौजूद है।

1 प्रश्न –रिक्त स्थानों में उचित शब्द चुनकर लिखिए-

क) महासागरों में पाया जाने वाला जल ____ है। (मीठा, खारा)

ख) पृथ्वी का ____ भाग जल से घिरा है। (75%,71%)

ग) ठोस, द्रव, गैस ___ के तीन रूप हैं। (वायु, जल)

घ) _____ का जल मानव उपयोगी होता है। (नदी, सागर)

ङ) नीलाग्रह ____ को कहते हैं। (सूर्य, पृथ्वी)

चित्र-1

अब आप यह समझ ही गए होगें कि महासागर जल मंडल का ही भाग है।

महासागर- आकार के आधार पर छोटे - बड़े पाँच महासागर पृथ्वी के जलमंडल का हिस्सा हैं। इनके नाम हैं - प्रशांत महासागर, अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर, दक्षिणी महासागर और आर्कटिक महासागर। नीचे दिए गए चित्र को देख कर आपको महासागरों की स्तिथि समझ आ जाएगी।

1)प्रशांत महासागर आकार में सबसे बड़ा है और यह लगभग वृताकार (गोलाकार) है। पृथ्वी के एक तिहाई भाग में यह फैला है। इसके चारों ओर एशिया, उत्तर अमेरिका, दक्षिण अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया है। इसमें जमीन का भाग कम और जलीय भाग ज्यादा है।

चित्र-2

2)अटलांटिक महासागर संसार का दूसरा सबसे बड़ा महासागर है जो अंग्रेजी भाषा के Sअक्षर से मिलता है। लंबाई की बजाय इसकी चौड़ाई ज्यादा है। इस महासागर के पूर्व में यूरोप और अफ्रीका, पश्चिम में उत्तर तथा दक्षिण अमेरिका है। इसकी तट रेखा (जल से लगती जमीन का भाग बहुत ज्यादा दांतेदार और कटी-फटी है जिससे यहाँ कई समुद्री पत्तन (जहां समुद्री जहाज खड़े किए जाते हैं) अपने आप बन गए हैं जिससे यहां व्यापार भी ज्यादा मात्रा में होता है।

चित्र-3

3)हिन्द महासागर का नाम 'हिंदुस्तान' के नाम पर (भारत का ही नाम) रखा गया है। यह तीसरा बड़ा महासागर है। इसके उत्तर में एशिया, पूर्व में आस्ट्रेलिया तथा पश्चिम मे अफ्रीका महाद्वीप है। इसका अधिकांश (ज्यादातर) हिस्सा दक्षिणी गोलार्ध में आता है।

चित्र-4

4)दक्षिणी महासागर संसार के सबसे दक्षिण में स्थित है। यह अंटार्कटिका महाद्वीप को चारों ओर से घेरे हुए है। यह चौथा बड़ा महासागर है। इसके जल का रंग अन्य महासागरों के जल की अपेक्षा हल्का नीला है तथा यह दक्षिण से उत्तर की ओर बहता है।

चित्र-5

5) आर्कटिक महासागर पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में स्थित है तथा उत्तरी ध्रुव के चारों ओर फैला हुआ है | यह संसार के सभी महासागरों से छोटा और उथला (कम गहरा) है। यह साल भर बर्फ से ढका रहता है। इसके दक्षिण में यूरोप, एशिया तथा पश्चिम में उत्तरी अमेरिका स्थित है। यह प्रशांत महासागर से कम गहरे जल वाले संकरे भाग से जुड़ा है जिसे बेरिंग जलसंधि कहते हैं।

चित्र-6

अतः महासागर जलमंडल के मुख्य भाग हैं| महासागरीय जल हमेशा गतिशील रहता है| तरंगे ,ज्वारभाटा और महासागरीय धाराएं इसकी तीन गतियाँ हैं|

1 प्रश्न- किस महासागर का नाम एक देश के नाम पर रखा गया है?

2 प्रश्न – कौन सा महासागर अंटार्कटिका महाद्वीप को चारों ओर से घेरे हुए हैं?

3 प्रश्न – किस महासागर का तट दांतेदार होने से वहां व्यापार बहुत ज्यादा होता है?

4 प्रश्न - विश्व के मानचित्र पर सभी महासागरों की स्थिति दर्शाइए |

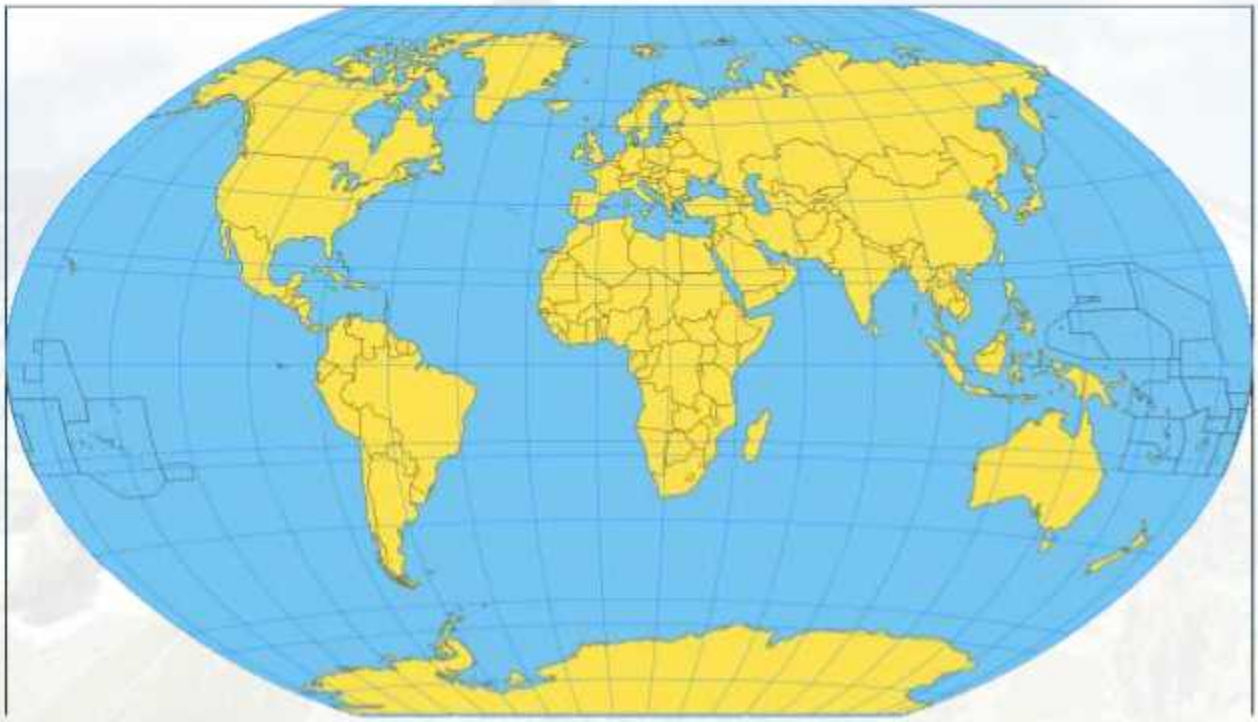

5 प्रश्न – महासागरीय जल की तीन गतियों के नाम लिखिए|

कार्यपत्रक संख्या: 17

विद्यार्थी का नाम _____

पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के पश्चात विद्यार्थी विश्व के मानचित्र पर महाद्वीपों और महासागरों को चिन्हित कर पाएंगे।

क्रियाकलाप 1 कक्षा में चर्चा

आप सभी यह तो जानते ही हैं कि जब हम सांस लेते है तो आक्सीजन गैस हमारे फेफड़ों में जाती है परंतु क्या आपको यह पता है कि जब हम सांस छोड़ते हैं तब कौन सी गैस शरीर से बाहर फेंकते हैं?

* क्या पेड़ भी साँस लेते हैं?
* वे कौन सी गैस को अपने अंदर खींचते है तथा कौन सी गैस को बाहर फेंकते हैं?
* क्या हम हवा को देख सकते हैं?

हमारे चारों ओर जो गैसे हैं और हवा है उन्हें हम देख नहीं सकते परंतु महसूस कर सकते हैं जैसे जब हवा चलती है तो पेड़ के पत्ते हिलते हैं। आप जिस फुटबाल से खेलते हो उसमें भी हवा भरी होती है।

वायुमंडल – पृथ्वी के चारों ओर गैसों की एक परत है जिसे वायुमंडल कहते हैं। यह वायुमंडल ही हमें सूर्य की तेज और हानिकारक किरणों से बचाता है। यह पृथ्वी पर रहने लायक तापमान को बनाए रखता है। यह 1600 किलो मीटर की ऊँचाई तक फैला है। इसमें नाइट्रोजन 78%, ऑक्सीजन 21% कार्बन डाइआक्साइड 0.03% तथा अन्य गैसें पाई जाती है। वायुमंडल की पाँच परते हैं जो पृथ्वी के तल से शुरू होते हुए क्षोभमंडल, समतापमंडल, मध्यमंडल, आयनमंडल तथा बहिर्मंडल तक आती हैं।

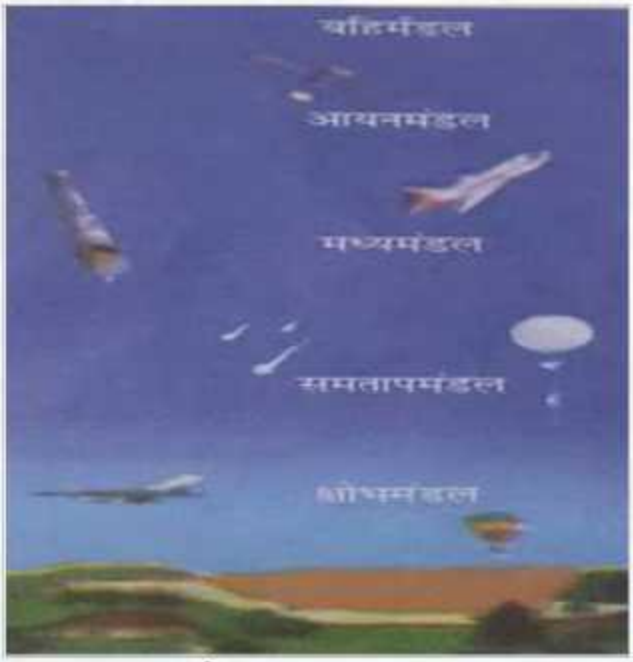

चित्र-1

प्रश्न मिलान कीजिए

क) गैसों की परत	1) नाइट्रोजन
ख) पत्तों का हिलना	2) 21%
ग) 78%	3) हवा चलना
घ) आक्सीजन	4) वायुमंडल

1) **क्षोभमंडल** में मौसम की सभी घटनाएं जैसे - वर्षा, बादल, बिजली चमकना, आंधी और तूफान आना इत्यादि होती है। यह महत्वपूर्ण परत पृथ्वी से 8-13 कि.मी० तक है। इसमें ऊंचाई बढ़ने के साथ साथ तापमान मे कमी होती जाती है|

2) **समतापमंडल** में ऊंचाई के साथ साथ तापमान भी बढ़ता जाताहै। इसी में ओजोन परत है जो सूर्य की हानिकारक किरणों से पृथ्वी की रक्षा करती है। इस परत पर हवाई जहाज आसानी से उड़ते हैं। यह 50 किमी. तक की ऊंचाई तक फैली है।

3) **मध्यमडल** की ऊँचाई 80 कि.मी. है और यह वायुमंडल की तीसरी परत है। इस परत में ऊंचाई के साथ साथ तापमान कम होता जाता है| पृथ्वी पर जब भी कोई उल्का गिरती है तो यहाँ आकर वह जलने लगती है।

4) **आयनमंडल** की ऊँचाई 80 से 400 कि०मी है। यहाँ ऊँचाई के साथ - साथ तापमान भी बढ़ता जाता है। बिना तार के संचार माध्यम जैसे मोबाइल, इंटरनेट, रेडियो के लिए इसी परत का इस्तेमाल होता है।

5) **बाह्यमण्डल** सबसे ऊपर की तथा अंतिम परत है। यहाँ हल्की गैसें जैसे हीलियम और हाइड्रोजन तैरती रहती हैं।

प्रश्न 2 - कक्षा में चर्चा कीजिए कि यदि वायुमंडल ना होता तो क्या क्या नुक्सान होते ?

प्रश्न 3- क्षोभमंडल में कौन - कौन सी घटनाएं घटती हैं?

प्रश्न 4 – किस परत में आकर तापमान बढ़ता जाता है?

प्रश्न 5 – बाह्य मण्डल में कौन सी गैसें तैरती रहती हैं?

_____

_____

_____

प्रमुख गैसें- वायुमंडल की प्रमुख गैसों में नाइट्रोजन,ऑक्सीजन तथा कार्बन डाईआक्साइड है। मुख्यतः ऑक्सीजन और नाइट्रोजन से ही हमारा वायुमंडल बना है।

1)**ऑक्सीजन** गैस मनुष्य के साँस लेने के लिए जरूरी है। ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने से इसकी मात्रा बढ़ती है। पेड़ ऑक्सीजन को वायुमंडल में छोड़ते हैं।

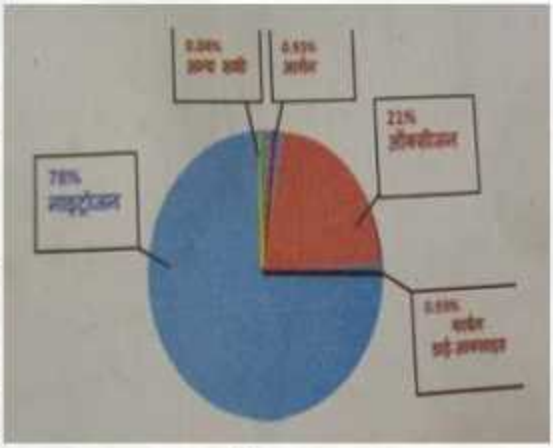

चित्र-19

2) वायुमंडल में **कार्बन डाइऑक्साइड** बहुत कम मात्रा में है। पृथ्वी के द्वारा छोड़ी गई ऊष्मा (गर्मी) को यह सोख लेती है तथा पृथ्वी पर उचित तापमान बनाए रखती है। यह पेड़ों द्वारा ग्रहण की जाती है।

3) **नाइट्रोजन** सबसे अधिक मात्रा में वायुमंडल में मौजूद है। यह प्राणियों के विकास (बढ़ने) में सहायता करती है।

वायुमंडल में ऊंचाई के साथ-साथ हवा कम घनी होती जाती है। तभी पर्वतारोही (पर्वतों पर चढ़ने वाले) हवा के घने ना होने पर साँस लेने में कठिनाई महसूस करते हैं। उन्हें ऑक्सीजन सिलेंडर अपने साथ ले जाना पड़ता है। ऊंचाई बढ़ने पर तापमान तथा वायु का दबाव भी कम ज्यादा होता रहता है।

प्रश्न 6 - रिक्त स्थानों में उचित शब्द चुनकर लिखिए -

क) पेड़_____गैस को वायुमंडल में छोड़ते हैं। (ऑक्सीजन, नाइट्रोजन)

ख) वायुमंडल में_____गैस बहुत कम मात्रा में है। (नाइट्रोजन, कार्बन डाईऑक्साइड)

ग) प्राणियों के विकास में सहायक_____गैस है। (कार्बन डॉइआक्साइड / नाइट्रोजन)

कार्यपत्रक संख्या: 18

विद्यार्थी का नाम _____

पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के पश्चात विद्यार्थी विश्व के मानचित्र पर महाद्वीपों और महासागरों को चिन्हित कर पाएंगे।

क्रियाकलाप 1 (अध्यापक तथा विद्यार्थियों में संवाद)

अध्यापक : दिल्ली में आपने कौन-कौन से पेड़-पौधे देखें हैं?

विद्यार्थी : मैने यहाँ कीकर, नीम, पीपल के पेड़ देखे हैं।

अध्यापक : क्या आपने यहाँ कुछ खास प्रकार के पक्षी भी देखें है?

विद्यार्थी : हां जी, यहां नीले वाले कबूतर बहुत ज्यादा देखे हैं मैनें।

अध्यापक : अच्छा ऊंट किस क्षेत्र में पाया जाता है पहाड़ी या रेगिस्तानी।

सभी विद्यार्थी : रेगिस्तानी क्षेत्र में।

चित्र-20

अध्यापक : तो देखा आपने, अलग-अलग जगहों पर अलग -अलग प्रकार की जाति के पेड़-पौधे तथा पशु पक्षी पाए जाते हैं। इन सबमें जीवन होता है। यह सभी पृथ्वी के जीवमंडल का हिस्सा है।

जीवमंडल -

यहाँ भूमि, जल और वायु के साथ सूक्ष्म जीवों (बहुत छोटे जीव) से लेकर बड़े आकार के जीव पाए जाते हैं। सभी प्रकार के पेड़-पौधे भी इसका हिस्सा हैं। जीवमंडल को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा गया है।

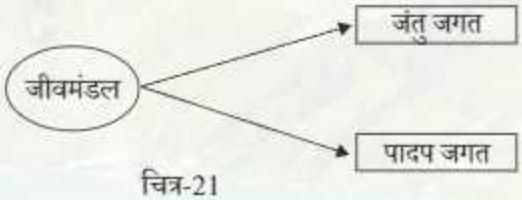

चित्र-21

अतः जीवमंडल या जैवमंडल वह क्षेत्र है जहाँ स्थल, जल और वायु मिलते हैं। यहां पृथ्वी के तीनों परिमंडल आपस में क्रिया करके एक दूसरे को प्रभावित करते हैं जैसे वनों के कटने से कृषि (खेती) भूमि तो बढ़ जाएगी लेकिन जीव-जंतुओं के घर नष्ट हो जाएंगे। प्रकृति में अपने आप उगने वाली वनस्पति भी नष्ट हो जाएगी। इसी तरह नदी या झीलों में प्रदूषण बढ़ने से जल मनुष्य के इस्तेमाल के लिए उपयोगी नहीं रहेगा। जलीय जीवों को भी नुकसान पहुंचेगा।

प्रश्न 1: जीवमंडल किसे कहते हैं?

प्रश्न 2: नीचे दिए गए चित्र में पृथ्वी के विभिन्न परिमंडलों को नामांकित कीजिए।

प्रश्न 3: जंतु जगत और पादप जगत किस परिमंडल का हिस्सा है?

प्रश्न 4: नदियों में प्रदूषण बढ़ने से क्या होगा?

प्रश्न 5: नीचे दिए गए रिक्त स्थान भरिए

क) सूक्ष्म से लेकर बड़े आकार के जीव भी _____ में पाए जाते हैं।

ख) वनों के कटने से _____ के घर नष्ट हो जाते हैं।

ग) जीवमंडल के दो भाग हैं - जंतु जगत और _____।

घ) _____ मे प्रदूषण बढ़ने से जल मनुष्य के इस्तेमाल के लिए उपयोगी नहीं रहेगा।

कार्यपत्रक संख्या: 19

विद्यार्थी का नाम _____

हमारा देश : भारत

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के बाद विद्यार्थी भारत के राज्यो, केंद्र शासित प्रदेशों तथा पड़ोसी देशों को ग्लोब तथा मानचित्र पर पहचान पाएंगे|

क्रियाकलाप 1

प्रातः प्रार्थना सभा से कक्षा मे आकर विद्यार्थी देशभक्ति गीत गुनगुना रहे हैं..... जहां डाल डाल पे सोने की चिड़िया करती है बसेरा, वो भारत देश है मेरा, जहां सत्य अहिंसा और धर्म का, लगता पग पग डेरा वो भारत देश है मेरा.....

अध्यापक ने उन्हे गुनगुनाते हुए सुन लिया और पूछने लगे....

अध्यापक : 15 अगस्त आ रहा है इसीलिए आप सभी यह गाना गा रहे हैं।

विद्यार्थी : 15 अगस्त की स्कूल मे तैयारियां चल रही हैं। राहुल उस दिन यह देशभक्ति गीत गाने वाला है।

राहुल : क्या हमारा देश सचमुच सोने की चिड़िया था?

अध्यापक : प्यारे विद्यार्थियों। हाँ, आज से कई साल पहले जब भारत मे राजाओं का शासन था तब यहाँ की खुशहाली देख कर ही इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था। हिन्द महासागर का नाम भी हमारे देश के नाम हिंदुस्तान पर ही रखा गया था।

सब विद्यार्थी खुशी से तालियाँ बजाने लगते हैं।

अध्यापक : अपने देश के बारे मे जान कर कितना अच्छा लगता है। आज मैं आपको भारत के बारे मे और भी रोचक जानकारी दूंगा। भूगोल के पाठ 'पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल' मे आपने पढ़ लिया है कि भारत एशिया महाद्वीप मे आता है। इसके पूर्व मे बंगाल की खाड़ी,पश्चिम मे अरब सागर, उत्तर मे हिमालय पर्वत तथा दक्षिण मे हिन्द महासागर आता है। इसका कुल क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किलोमीटर है। ऊंचे पर्वत, थार मरुस्थल (रेगिस्तान), उत्तरी मैदान, दक्कन का पठार, समुद्र तटीय मैदान और द्वीप समूह यहाँ के भूगोल की भिन्नता को दिखाते हैं। यहाँ की जलवायु, वनस्पति, जीव जंतुओं के साथ साथ भाषा और संस्कृति मे भी भिन्नता पाई जाती है। इतनी भिन्नताएँ होने पर भी यहाँ एकता है क्योंकि हमारा देश एक है - भारत।

भारत की भौगोलिक स्थिति

भारत उत्तरी गोलार्ध में स्थित है। दक्षिण से उत्तर की ओर 8°4' उत्तर तथा 37°6' उत्तर अक्षांश और पश्चिम से पूर्व तक 68°7' पूर्व तथा 97°25' पूर्व देशांतरों के बीच भारत का विस्तार है। बड़ा देशांतरीय विस्तार होने से गुजरात से अरुणाचल प्रदेश तक 30 (29.3) देशांतर हैं। अत: इस कारण से इन दोनों स्थानों के बीच समय का अंतर लगभग दो घंटे का हो जाता है। इससे पहले आप पाठ ग्लोब: अक्षांश एवं देशांतर में पढ़ चुके हैं कि एक देशांतर से दूसरे देशांतर में 4 मिनट का अंतर होता है तो इस तरह (30x4 मिनट – 120 मिनट) जो 2 घंटे के बराबर है। भारत को दो भागों में बाँटती हुई कर्क रेखा (23°30' उत्तर) लगभग बीच से गुजरती है। 82°30 पूर्व में देशांतर रेखा उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर से होती हुई भारत के मानक समय को तय करती है। इसे भारत का मानक याम्योत्तर भी कहते हैं।

प्रश्न 1 - भारत का कुल क्षेत्रफल कितना है?

प्रश्न 2 - भारत कौन से महाद्वीप में स्थित है?

प्रश्न 3 - भारत का अक्षांशीय विस्तार कितना है?

प्रश्न 4 - कर्क रेखा का मान कितना है?

प्रश्न 5 - 82°30 पूर्व को भारत का महत्वपूर्ण देशांतरक्यों कहा जाता है ?

भूगोल

कार्यपत्रक संख्या: 20

विद्यार्थी का नाम _____

हमारा देश : भारत

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के बाद विद्यार्थी भारत के राज्यो, केंद्र शासित प्रदेशों तथा पड़ोसी देशों को ग्लोब तथा मानचित्र पर पहचान पाएंगे|

क्रियाकलाप 1

हम अपने घर के आस -पास रहने वाले ज्यादातर पड़ोसियों को अच्छी तरह से जानते हैं उनके नाम भी हमें याद होते हैं। इसी तरह हमारे भारत के आस-पास जो देश हैं वे हमारे पड़ोसी देश कहलाते हैं। आप जितने भी पड़ोसी देशों का नाम जानते हैं वो नीचे दिए गए डिब्बे में लिखिए।

भारत के पड़ोसी देश-

भारत के पूर्व में म्यांमार और बांग्लादेश, पश्चिम में पाकिस्तान और अफगानिस्तान, उत्तर में चीन (तिब्बत), नेपाल और भूटान तथा दक्षिण में श्रीलंका तथा मालदीव हैं। सात देशों की स्थलीय सीमाएं भारत में जुड़ी हैं तथा दो देशों की जलीय सीमाएंऊपर दिए गए चित्र 'भारत एवं उसके पड़ोसी देश' से आप यह पता लगा सकते हैं |

चित्र-1

क्रियाकलाप 3

नीचे दिए गए चित्र में दिशाओं के आधार पर भारत के पड़ोसी देशों के नाम लिखिए –

1. पूर्व 1 .....2.....
2. पश्चिम 1 .....2.....
3. उत्तर 1 .....2.....3.....
4. दक्षिण 1 .....2.....

क्रियाकलाप (भारत को जाने) नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में आपने भारत के जितने राज्यो के नाम सुने या पढ़े हो लिखिए - भारत का राजनीतिक तथा प्रशासनिक विभाजन

भारत बहुत विशाल देश है जिसका शासन अच्छी तरह से चलाने के लिए इसे 28 राज्यों और 8 केन्द्र शासित प्रदेशों में बाँटा गया है। राज्यों में राज्य की सरकार शासन करती है और केन्द्र शासित प्रदेशों में केन्द्र की सरकार।

चित्र-2

भारत की राजधानी दिल्ली है। भारत के राज्यों का निर्माण वहां की भाषा,संस्कृति तथा भौगोलिक स्थिति के आधार पर किया गया है। राज्यो को आगे जिलो में तथा जिलों को गाँवों में बांटा गया है। क्षेत्रफल को ध्यान में रखते हुए भारत का सबसे बड़ा राज्य राजस्थान और छोटा राज्य गोवा है।

प्रश्न - मिलान कीजिए

क) राज्य	दिल्ली
ख) राजधानी	भाषा के आधार पर
ग) केन्द्र शासित प्रदेश	28
घ) राज्यों का निर्माण	8

कार्यपत्रक संख्या: 21

विद्यार्थी का नाम _____

हमारा देश : भारत

अधिगम सम्प्राप्ति

इस कार्यपत्रक को करने के बाद विद्यार्थी भारत के राज्यो, केंद्र शासित प्रदेशों तथा पड़ोसी देशों को ग्लोब तथा मानचित्र पर पहचान पाएंगे|

क्रियाकलाप 1 (अध्यापक तथा विद्यार्थियों का संवाद)

अध्यापक: क्या आप कभी गर्मी की छुट्टियों में शिमला , डल्हौजी , देहरादून जैसे स्थानों पर गए हो?

एक विद्यार्थी: जी , मैं अपने परिवार के साथ दो साल पहले डल्हौजी गया था।

अध्यापक : आपको वहाँ का मौसम कैसा लगा ?

विद्यार्थी: बहुत ठंडी थी वहां। बारिश होने पर तो वहाँ जून में भी रात को रजाई लेनी पड़ती है। सभी विद्याधी : (हैरानी से देखते हुए) क्या सच में। तभी लोग छुट्टियाँ मनाने वहाँ जाते है।

विद्यार्थी : हाँ सच बोल रहा हूँ , बहुत मजा आया वहाँ के पहाड़ देखकर। वहाँ पास में एक झील भी है जिसके चारों तरफ पेड़ ही पेड़ है।

सभीविद्यार्थी : हम भी वहां जरूर जाना चाहेंगे।

अध्यापक : क्या गर्मी की इन्हीं छुट्टियों में आप राजस्थान जाना चाहेंगे ?

एक विद्यार्थी: नहीं , तब तो वहाँ बहुत गर्मी होगी। मेरे पापा जैसलमेर में पहले काम करते थे उन्होने बताया था कि वहाँ गर्मियों में रेत बहुत गर्म हो जाती है।

अध्यापक : बिल्कुल ठीक कहा आपके पापा ने, राजस्थान एक रेगिस्तानी क्षेत्र हैं जहां रेत जल्दी ठंडी भी हो जाती हैं। प्यारे विद्यार्थियों इस तरह हमारे देश भारत में कहीं पर्वत , कहीं मैदान , कही रेगिस्तान , कहीं पठार , कही समुंद्र , तट तो कही द्वीप समूह हैं।
पाठ " पृथ्वी के प्रमुख स्थलरूप में भी आपने इनके बारे में पढ़ा है।

भौतिक विभाजन

भारत में इन स्थल रूपों के छः प्रकार हैं जिन्हें भौतिक विभाजन कहा जाता है। ये निम्नलिखित है -

(1) हिमालय पर्वत श्रृंखला (2) उत्तरी मैदान (3) भारतीय मरुस्थल
(4) प्रायद्वीपीय पठार (5) तटीय मैदान (6) द्वीप समूह

(1) हिमालय पर्वत श्रृंखला- भारत की उत्तरी दिशा में स्थित है। हिमालय दो शब्दों से मिलकर बना है- हिम + आलय "हिम का अर्थ है बर्फ और आलय का अर्थ है घर अत: इसे बर्फ का घर कहते हैं। इस पर्वत श्रृंखला को तीन भागों में बाँटा गया है

क) बृहत (बड़ा) हिमालय या हिमाद्रि
ख) मध्य हिमालय या हिमाचल
ग) शिवालिक

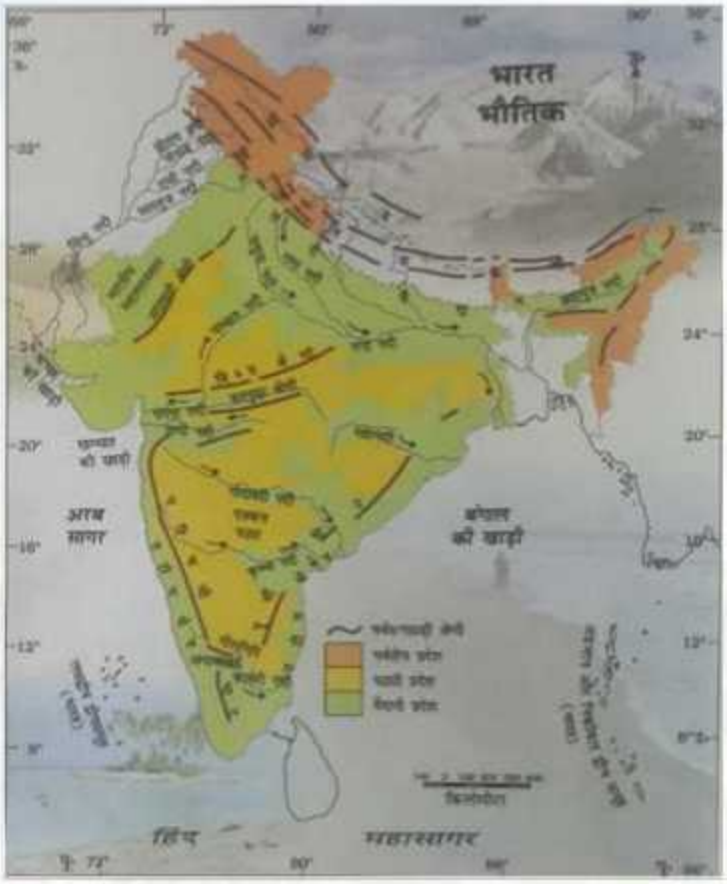

चित्र-1

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों में उचित शब्द चुनकर लिखिए

क.	.....शहर में गर्मियों में भी ठण्ड होती है।	जैसलमेर, डल्हौजी
ख.	.....तथा .....एक स्थल आकृति हैं।	(पर्वत तथा मैदान, जीव जंतु तथा पौधे)
ग.	हिम तथा आलय को जोड़कर शब्द बनता है।	(विद्यालय, हिमालय)
घ.	.....हिमालय पर्वत श्रृंखला का एक भाग है।	(द्वीप समूह, शिवालिक)

क्रियाकलाप 2 (कक्षा में चर्चा)

अध्यापक : दिल्ली पर्वतीय क्षेत्र में आता है या मैदानी क्षेत्र में ?

एक विद्यार्थी जी, मैदानी क्षेत्र में क्योंकि यहाँ पर्वत तो हैं ही नहीं बस यमुना नदी है।

अध्यापक: बिल्कुल ठीक, दिल्ली मैदानी भाग में आता है।

उत्तरी मैदान- ऐसे ही भारत के उत्तर में जहाँ हिमालय पर्वत खत्म होता है वहीं से उत्तरी मैदान की शुरूआत हो जाती है जिसे सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र तथा इसकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से बनाया गया है। ये मैदान बहुत ही ऊपजाऊ है और भारत की सबसे ज्यादा फल सब्जियां तथा फसलें उगाने वाला क्षेत्र है। यहाँ जनसंख्या भी अधिक रहती है क्योंकि यह मैदान समतल हैं।

3) भारतीय मरुस्थल- मरुस्थल का अर्थ होता है वह क्षेत्र जहाँ वर्षा बहुत कम होती है जिससे चारों ओर रेत ही रेत दिखाई देती है क्योंकि मिट्टी में पानी की मात्रा बहुत कम होती है । यह सूखा, गर्म क्षेत्र होता है। भारत में यह मरुस्थल पश्चिमी राजस्थान में है तथा इसका नाम 'थार मरुस्थल है। यहाँ कांटेदार पौधे पाए जाते हैं।

4) प्रायद्वीपीय पठार - यह भारत के दक्षिण में स्थित है। यह त्रिभुज के आकार का है। ?यह कहीं से ऊँचा तो कहीं से नीचा है। इसके उत्तर पश्चिम में राजस्थान में स्थित अरावती पर्वता श्रृंखला है।"जो संसार की सबसे पुरानी पर्वत श्रृंखला है। प्रायद्वीप का अर्थ होता है जो तीन ओर से पानी से घिरा स्थान है।| इस पठार को दक्कन (दक्षिण) का पठार भी कहते है।

प्रश्न 2- मिलान कीजिए –

क. उत्तरी मैदान	कम वर्षा
ख. त्रिभुजाकार	अरावली
ग. मरुस्थल	सिंधु गंगा ब्रह्मपुत्र द्वारा बना
घ. सबसे पुरानी पर्वत श्रृंखला	प्रायद्वीपीय पठार

5) तटीय मैदान- प्रायद्वीपीय पठार के पूर्व तथा पश्चिम दिशा में क्रमश: पूर्वी तटीय मैदान तथा पश्चिमी तटीय मैदान हैं। पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान से ज्यादा चौड़ा है। यहाँ महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी नदियां बहती हैं और बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। ये नदियाँ डेल्टा (नदीय द्वीप) भी बनाती है। संसार का सबसे बड़ा डेल्टा बंगाल की खाड़ी में गंगा तथा ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा बनाया गया सुंदरबन डेल्टा है।

6) द्वीप समूह - भारत के दक्षिण में दो द्वीपसमूह हैं। लक्षद्वीप तथा अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह
(क) लक्षद्वीप-अरब सागर भारत के केरल राज्य के तट से कुछ दूर स्थित एक प्रवाल (छोटे समुद्री जंतुओं के कंकाल) द्वीप है।
(ख) अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में भारत की दक्षिण पूर्व दिशा में स्थित द्वीप समूह है। 2004 में स्थित सुनामी से इसका दक्षिणी तट इंदिरा बिंदु समुद्र में डूब गया था। सुनामी एक बहुत बड़ी समुद्री तरंग है जो समुद्र में बदल जाती है।इससे समुद्र तटों पर भारी नुक्सान पहुंचता है।

प्रश्न 3 - मानचित्र कार्य
क) भारत के राजनीतिक मानचित्र पर सभी राज्यों, केन्द्र शासित प्रदेशों को दर्शाइए|

ख) भारत के भौतिक मानचित्र पर हिमालय पर्वत श्रृंखला, प्रायद्वीपीय पठार, उत्तरी मैदान, थार मरुस्थल, कर्क रेखा, पूर्वी तटीय मैदान, पश्चिमी तटीय मैदान, लक्षद्वीप तथा अंडमान निकोबार द्वीप समूह लक्षद्वीप-अरब सागर भारत के केरल राज्य के तट से कुछ दूर स्थित एक प्रवाल (छोटे समुद्री पंतुओं के कंकाल) द्वीप है।

प्रश्न 4- भारत के विभिन्न स्थल रूपों के नाम लिखिए।

प्रश्न 5 - संसार का सबसे बड़ा डेल्टा कौन सा है?

प्रश्न 6 - उत्तरी मैदान में जनसंख्या अधिक क्यों है?

प्रश्न 7 - 2004 की सुनामी में किस द्वीप समूह का दक्षिणी तट समुद्र में डूब गया था ?